Courier Correo Courrier

October 2015
Volume 30, Number 4

Mennonite World Conference
A Community of Anabaptist related Churches

Congreso Mundial Menonita
Una Comunidad de Iglesias Anabautistas

Conférence Mennonite Mondiale
Une Communauté d'Eglises Anabaptistes

घराना: एक साथ और अलग अलग

उत्तर अमरीकी मेनोनाइट लोग वंशावली और परिवारों के नामों में बहुत रुचि रखते हैं और वे ''मेनोनाइट खेल'' खेलते हुए अपने नए परिचितों से यह प्रश्न तब तक पूछते जाते हैं, ''क्या आप . . . को जानते हैं?'' जब तक दोनों किसी एक ऐसे व्यक्ति के नाम तक न पहुँच जाएं जो दोनों का सम्बन्धी हो।

परन्तु जब 77 देशों के मेनोनाइट और ब्रदरन इन ख्राइस्ट के भाई बहन 21 से 26 जुलाई 2015 तक पेन्नसिलवेनिया में ''परमेश्वर के साथ साथ चलने'' का उत्सव मनाने छह वर्षों में एक बार होने वाले मेनोनाइट वर्ल्ड कॉन्फ्रेंस के सम्मेलन के लिए इकट्ठा हुए, तो मेनोनाइट खेल सिर्फ ''खून के रिश्ते'' तक सीमित नहीं था। संसार के हर एक छोर से आ कर भी, हमें एक सम्बन्धी ढूंढ़ने में अधिक समय नहीं लगा: मेनोनाइट सेन्ट्रल कमेटी के सेवा कर्मी, मिशनरी प्रार्थना सूची, इन्टरनेशनल वॉलेन्टियर एक्चेंज प्रोग्राम (आईवीईपी) या यंग ऐनाबैपटिस्ट मेनोनाइट एक्चेंज नेटवर्क (यामेन) जैसी संस्थाओं जो अलग अलग देशों और कलीसियाओं के मेनोनाइट लोगों को अलग अलग देशों और कलीसियाओं में रह कर अनुभव प्राप्त करने का अवसर प्रदान करती हैं और कलीसियाई संस्थाओं ने ''सम्बन्धियों'' को ढूंढ़ लेने के लिए उपजाऊ भूमि प्रदान किया।

जहाँ यीशु मसीह पर हमारा विश्वास वह माध्यम है जिसके द्वारा हम सब एक बन्ध में बान्धे जाते हैं, हर एक व्यक्ति परिवार का एक अंग हैं, विशेष रूप से ऐनाबैपटिस्ट मेनोनाइट कुटुम्ब में।

पेन्नसिलवेनिया 2015 में एक दूसरे से हुई हर एक मुलाकात के साथ साथ कुटुम्ब की यह भावना बढ़ती गई: हम ने एक दूसरे की भाषाओं में गीत गाया, एक घर बनाया, कम्बल सिले, मेहन्दी से अपने हाथों में रंगबिरंगे डिज़ाइन बनाए, फुटबॉल खेला – एक साथ मिल कर।

जहाँ भाषाएं एक अवरोध बनीं, वहाँ मुस्कुराहटों ने मौन की खाई को पाटने का काम किया जब तक कि एक नया दोस्त आ कर भाषाई खाड़ी को जोड़ने के लिए एक सेतु की भूमिका निभाए।

Courier/Correo/Courrier के इस अंक में हम पेन्नसिलवेनिया 2015 के उत्सव के आनन्द को बाँट रहे हैं। मैं ऐसी आशा करती हूँ कि आप इन चित्रों और लेखों में घराने की पहचान करेंगे। आप संध्या के सामूहिक सत्रों में पवित्रशास्त्र के स्थलों पर किए गए मनन और संयुक्त सत्रों की प्रमुख झलकियों के सम्बन्ध में विचारों को पढ़ सकेंगे (पृष्ठ 6–23) जहाँ बेधड़क हो कर, नए, युवा ऐनाबैपटिस्ट प्रतिनिधियों ने अनुभवी अगुवों द्वारा सत्र में उनके पहले प्रगट की गई बुद्धिभरे वचनों पर चुनौतीपूर्ण प्रतिक्रियाएं दीं।

हम आप का परिचय नेल्सन क्रेबिल (पृष्ठ 40) और रेबेका ओसिरो (पृष्ठ 26–27) से करावाएंगे, नेल्सन क्रेबिल को अगले छह वर्षों के लिए मेनोनाइट वर्ल्ड कॉन्फ्रेंस का अध्यक्ष और रेबेका ओसिरो को अगले तीन वर्षों के लिए उपाध्यक्षा चुना गया है। आप यह भी जान सकेंगे कि संसार भर से आए कलीसियाओं के अगुवे अपने साथ ''क्या लेकर जा रहे हैं'' (पृष्ठ 24–25)। आप ग्लोबल यूथ समिट (जीवायएस) के विषय में भी पढ़ेंगे, जो कि 18+ आयु वर्ग के युवाओं की एक सहभागिता है और जिसका आयोजन मुख्य सम्मेलन के ठीक पहले किया जाता है, साथ ही याब्स कमेटी के भूतपूर्व सदस्यों से रूबरु होने का अवसर भी होगा (पृष्ठ 30–33)।

परन्तु परमेश्वर के साथ साथ चलना/ *कैमिनेमोस कोन डियोस / इनमार्चे एवेक डियू* हमेशा सरल नहीं होता। विश्व के दक्षिण भाग से सैकड़ों भाई बहन यहाँ आने की इच्छा रखते थे परन्तु उन्हें संयुक्त राज्य अमरीका का वीसा नहीं मिल सका। हमें उनसे अलग रहने का बड़ा दुख है।

विवाद लोगों को विभाजित कर देते हैं – यहाँ तक कि अहिंसा के पक्षधर मेनोनाइट लोगों को भी – यह बात हमारी कलीसियाओं में मण्डली स्तर और कॉन्फ्रेंस स्तर दोनों में पाई जाती है। उत्तर अमरीका की विभिन्न मेनोनाइट मण्डलियाँ एकता के लिए संघर्ष कर रही हैं। हम विविधता के मध्य सहभागिता के लिए लालायित हैं।

संसार के कुछ भागों की हमारी कलीसियाएं सताव का सामना कर रहीं हैं; शहादत अतीतमात्र की मेनोनाइट विशेषता नहीं है। जीवाएस के युवाओं ने – जिनमें से कुछ ने अपने विश्वास के कारण त्याग भी किया – सैंग मिल ली को उत्साहवर्धन हेतु पत्र लिखे, सैंग मिन ली पहले ऐनाबैपटिस्ट *कॉन्शियस आब्जेक्टर* (जो सरकार के ऐसे आदेशों को मानने से मना कर देते हैं जो बाइबल की शिक्षा से विपरीत हो) हैं जो इसी कारण से कोरिया के जेल में बन्दी हैं। हम एक दूसरे को प्रार्थना और सहयोग के द्वारा प्रेरित करते हैं।

परमेश्वर हमें जिस मार्ग पर चला रहा है शायद वह मार्ग समतल न हो, परन्तु परमेश्वर हमारे साथ साथ एक कांटा निकालनेवाले के रूप में चलता है (पृष्ठ 11 देखें)। बाइबल परमेश्वर के जीवित वचन के रूप में हमारी मार्गदर्शक है। और कलीसिया इस यात्रा में हमारी संगी और हमारा परिवार है।

''देखो, यह क्या ही भली और मनोहर बात है कि भाई लोग आपस में मिले रहे!'' (भजन 133)। हम पेन्नसिलवेनिया 2015 में अक्सर एक दूसरे से एक पद को कहा करते थे। अब, जबकि हम देहरूप में एक दूसरे से विदा ले कर अलग अलग हो चुके हैं, हमारे धर्मविज्ञान (बाइबल की शिक्षाओं के प्रति हमारा दृष्टिकोण) और हमारी रीतिविधियों के अन्तर, हमारे सामने परीक्षा ला सकते हैं कि हम स्वयं तक सीमित हो जाए। इण्डोनेशिया 2021 में अगली सहभागिता तक के समय के दौरान, क्यों न हम यह स्मरण रखें कि हम एक ही परिवार हैं। आइए इस धन्य एकता को मसीह की आत्मा के माध्यम से जीएं।

कार्ला ब्राउन मेनोनाइट वर्ल्ड कॉंफ्रेन्स की सम्पादिका हैं।

Courier/Correo/Courrier में परिवर्तन

डेविन मानज़ुल्लो–थॉमस, जिन्होंने दो वर्षों तक *Courier/Correo/Courrier* के प्रकाशन में हमारी अगुवाई की, अब इस भूमिका से मुक्त होकर मसायाह कॉलेज, मैकेनिक्सबर्ग, पेन्नसिलवेनिया, यूएसए में प्राध्यापक के रूप में अपनी कार्य में डॉक्ट्रल स्टडीज़ को जोड़ रहे हैं। यह मेरा सौभाग्य है कि मेनोनाइट और ब्रदरन इन ख्राइस्ट संसार की सेवा करने के लिए मैं इस सेवकाई में आ सकी, यह कार्य मैं विन्नीपेग, कनाडा के अपने निवास स्थान से कर रही हूँ जहाँ मैं मेनोनाइट ब्रदरन डिनोमिनेशन की एक सदस्या हूँ। यह मेरे लिए आशीष की बात थी कि सम्मेलन में मैंने आप में से कुछ लोगों से मुलाकात करना आरम्भ किया और मैं ऐसी आशा रखती हूँ कि एमडब्ल्यूसी के माध्यम से अपने इस परिवार की उन्नति का कारण बनना जारी रखूंगी।

***Courier/Correo/Courrier* में आए एक अन्य परिवर्तन से अंक प्रकाशन के समय पर भी असर हो रहा है। सम्मेलन पर केन्द्रित यह अंक एक दोहरा अंक हैं। मेनोनाइट वर्ल्ड कॉन्फ्रेंस अपनी वेबसाइट (mwc-cmm.org) और मासिक इलेक्ट्रॉनिक समाचार पत्र के माध्यम से आप तक समाचार और जानकारियाँ पहुँचाना जारी रखेगी (mwc-cmm.org पर जाकर “Get involved” में “Publication sign up” देखें)।**

मुखपृष्ठ का चित्र:
पेन्नसिलवेनिया 2015 के मेनोनाइट विश्व कॉन्फ्रेंस के सम्मेलन, हेरिसबर्ग, पेन्नसिलवेनिया, यूएसए, 21–26 जुलाई 2015 की एक अन्तर्सांस्कृतिक आराधनासभा। फोटो: जोनाथन चार्ल्स

Courier Correo Courrier

Volume 30, Number 4

Courier/Correo/Courrier मेनोनाइट वर्ल्ड कॉन्फ्रेंस का एक प्रकाशन है, यह वर्ष में छह बार चार पृष्ठ की समाचार पत्रिका के रूप में *“News/Noticias/Nouvelles”* शीर्षक से प्रकाशित की जाती है – जिसमें सामयिक समाचार और बड़ी खबरें शामिल की जाती है। वर्ष में दो बार, यह समाचार पत्रिका सोलह पृष्ठ की एक पत्रिका का रूप ले लेती है, जिसमें प्रेरणादायक सन्देश, अध्ययन, शिक्षात्मक और सचित्र लेखों को शामिल किया जाता है। हर संस्करण अंग्रेजी, स्पेनिश, और फ्रेंच भाषाओं में प्रकाशित किया जाता है।

सीज़र गार्सिया प्रकाशक
क्रिस्टीना टोरस प्रमुख सम्प्रेषण अधिकारी
कार्ला ब्राऊन सम्पादक
ग्लेन फ्रेट्ज़ डिज़ाइनर
सिलवि गुडिन फ्रेंच अनुवादक
मार्सिया और यूनीके मिलर स्पेनिश अनुवादक

Courier/Correo/Courrier निवेदन पर उपलब्ध है।
सभी पत्र इस पते पर भेजें:
MWC, Calle 28A No. 16-41 Piso 2, Bogota, Colombia

Email: info@mwc-cmm.org
www.mwc-cmm.org

Courier/Correo/Courrier (ISSN 1041-4436) is published six times a year. Twice a year, the newsletter is inserted into 16-page magazine. Mennonite World Conference, Calle 28A No. 16-41 Piso 2, Bogota. Colombia
Publication Office: Courier, 451 B Pleasant Valley Road, Harrisonburg VA 22801 USA, Periodical postage paid at Harrisonburg VA, Printed in USA.
POSTMASTER: Send Address Changes to Courier, 451 B Pleasant Valley Road, Harrisonburg VA 22801 USA.

मेनोनाइट वर्ल्ड कॉन्फ्रेंस

सम्मेलन 16

पिछली एक शताब्दी में, सोलहवीं बार मेनोनाइट और ब्रदरन कलीसियाओं से मसीह की देह 21–26 जुलाई 2015 तक इकट्ठा हुई। हेरिसबर्ग पेन्नेसिलवेनिया, यूएसए के फार्म शो काम्पलेक्स में 77 देशों से आए ऐनोबैपटिस्ट कलीसियाओं के 8,454 सदस्यों ने गीत गाने, उपदेश सुनने, प्रार्थना करने, कार्यशालाओं में शामिल होने, सेवा परियोजनाओं में भाग लेने और मिल कर भोजन करने के द्वारा परमेश्वर की आराधना की – साथ मिलकर।

आयोजन का आरम्भ करते हुए, स्थानीय समुदाय के प्रतिनिधियों ड्रम बजाया, प्रार्थना किया और अपनी कहानियाँ बताई। मुनसे नेशन के बैरी ली ने कहा, ''बीते समयों में जो कुछ हुआ वह बीत चुका है। आइये आज के इस दिन से हम – एक साथ – शान्ति के साथ आगे बढ़ते जाएं।'' पेन्नलिसवेनिया 2015 की राष्ट्रीय सलाहकार परिषद के अध्यक्ष रिचर्ड थॉमस ने ''गलत बातों के प्रति मेनोनाइट सहमति और न्याय के प्रति बोझ की कमी जिसके कारण अमरीका के मूल निवासी भाई बहनों को उनकी भूमि और उनकी जीवन शैली से वंचित होना पड़ा'' के लिए क्षमा मांगने के विषय में कहा।

पेन्नसिलवेनिया 2015 ने मेनोनाइट वर्ल्ड कॉन्फ्रेंस के आधिकारिक और अनाधिकारिक समूहों को संगति का अवसर प्रदान किया।

असेम्बली गेदर्ड (इकट्ठा हो कर की गई सहभागिता/ 21–26 जुलाई का मुख्य सम्मेलन) से पहले 449 ऐनाबैपटिस्ट (18+) युवाओं ने तृतीय ग्लोबल यूथ समिट (जीवायएस) में भाग लिया। मुख्य सम्मेलन के समापन के बाद भी पेन्नसिलवेनिया 2015 में उपस्थित हुए अनेक भाई बहनों ने *असेम्बली स्केटर्ड* (अलग अलग स्थानों में फैल कर सहभागिता) के माध्यम से संगति करने संयुक्त राज्य अमरीका की एमडबल्यूसी सम्बन्धित कलीसिया में यात्राएं की।

एमडबल्यूसी ग्लोबल एजुकेशन कॉन्फ्रेंस के माध्यम से मसीही स्कूलों के शिक्षक और प्रशासक ''रोपे गए पेड़ के समान'' शीर्षक के अन्तर्गत, और ग्लोबल मिशन फ़ैलोशिप और ग्लोबल ऐनाबैपटिस्ट सर्विस नेटवर्क के माध्यम से अन्तर्राष्ट्रीय एजेन्सियों के अगुवे एक साथ आए।

स्वास्थ देखभाल क्षेत्र के विशेषज्ञ एक दूसरे से मिले, व्यापार क्षेत्र विश्वासी विश्वास और व्यापार के विषय में चर्चा करने जमा हुए, और शोध कार्य से सम्बन्धित लोग और कलीसिया के अगुवों ने मिल कर ग्लोबल ऐनाबैपटिस्ट प्रोफाइल प्रोजक्ट (विश्वव्यापी ऐनाबैपटिस्ट रूपरेखा परियोजना) पर चर्चा की।

मेनोनाइट ब्रदरन और ब्रदरन इन ख्राइस्ट की अन्तर्राष्ट्रीय सहभागिताओं ने सम्मेलन के बाद अपनी वार्षिक सभाओं को यही आयोजित किया था।

अगला सम्मेलन 2021 में इण्डोनेशिया में आयोजित किया जाएगा।

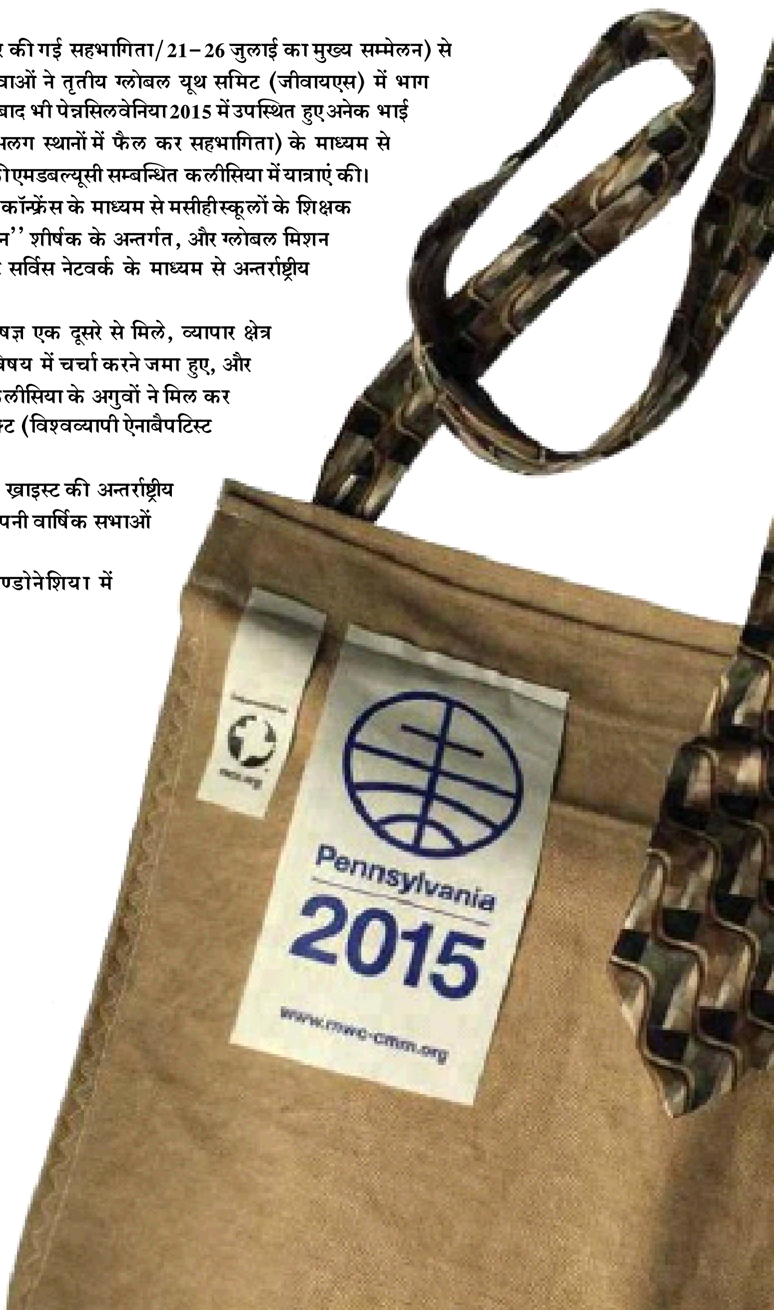

सम्मेलन के लिए थैलियाँ स्थानीय वॉलेन्टियर्स के द्वारा तैयार की गईं थी – इनमें आमिश समूह भी शामिल थे – ये थैलियाँ मेनोनाइट सेन्ट्रल कमेटी के एप्राता संसाधन सामग्री केन्द्र में दान किए गए कपड़ों और पुराने नेकटाई से तैयार की गईं। इसका आकार विदेश भेजे जाने वाले स्कूल बैग के बराबर है, और इस हेतु सम्मेलन के बाद आप इन्हें एमसीसी को भेंटस्वरूप दे सकते हैं।

अक्सर पशुओं के कोलाहल और भीड़ के शोर से भरा रहने वाला फार्म शो काम्पलेक्स, हेरिसबर्ग, पेन्नसिलवेनिया, यूएसए 21–26 जुलाई तक हुए मेनोनाइट वर्ल्ड कॉन्फ्रेंस के 16 सम्मेलन के दौरान स्तुति और आराधना के गीतों और परमेश्वर के वचन के प्रचार से गूंज रहा था।

गीत

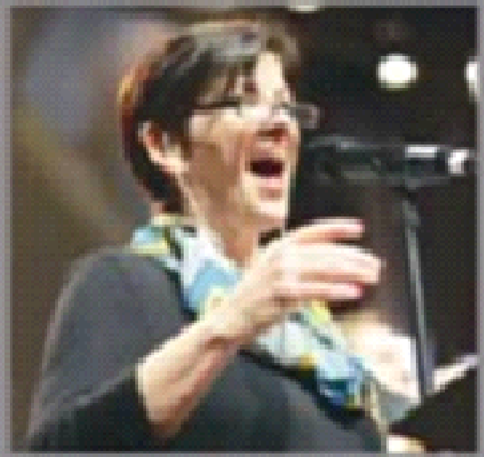

क्वायर निर्देशक मर्सी होस्टलर ने अन्तर्राष्ट्रीय संगीत दल की अगुवाई की

खेलकूद

रेहडा शिर्क

16 से अधिक खेल, 269 फुटबॉल खिलाड़ियों ने प्रथम ऐनाबैपटिस्ट वर्ल्ड कप में भाग लिया

भोजन

हेयक मार्टिन

भोजन परोसने के लिए कम्पोस्टेबल प्लेटों का उपयोग

अदान–प्रदान

यूर्वे क्रियडर

पुन: उपयोग करने योग्य पानी के बोतलों ने वार्तालाप के प्रवाह को बनाए रखने के लिए गला सूखने से बचाया

सीखना

जोनाथन चार्ल्स

धर्मविज्ञान से लेकर समाज सेवा तक के विभिन्न विषयों पर 180 से अधिक कार्यशालाएं और बैठकें

सेवा

रेहडा शिर्क

दोपहर के समय कार्य या कार्यशालाओं का समय होता था, जैसे एमसीसी के बर्तनों को साफ करना या एमडी के घरों को बनाना

परमेश्वर के साथ चलना

सीज़र गार्सिया

सीज़र गार्सिया ने मंगलवार संध्या 21 जुलाई 2015 को 16वें सम्मेलन को सम्बोधित किया। वे मेनोनाइट वर्ल्ड कॉन्फ्रेंस के सचिव हैं और बगोटा कोलम्बिया में निवास करते हैं।

लूका 24:13–35

जब मैं 17 वर्ष का था तब सेना के एक कप्तान ने मुझसे पूछा, ''यदि आज रात हमारी बटालियन पर आक्रमण हो जाए तो तुम क्या करोगे? यदि कोई आ कर तुम्हें गोली मार दे तो तुम क्या करोगे?''

''मैं प्रार्थना करूंगा,'' मैंने उत्तर दिया।

उसी समय, मैंने अपने सिर में एक भयानक दर्द महसूस किया। कप्तान ने मुझ पर वीणा के स्ट्राइकर से प्रहार कर दिया था। वीणा एक वाद्ययंत्र होता है जिससे एक फाइबरग्लास के स्ट्राइकर के द्वारा आवाज निकाली जाती है। मुझे भयानक दर्द हो रहा था। कप्तान ने मुझसे फिर पूछा, ''यदि कोई तुम पर आक्रमण करे तो तुम क्या करोगे?'' मैंने कहा, ''मैं अपना बचाव नहीं करुंगा।''

उसने मुझ पर फिर से प्रहार किया और पूछा, ''तुम अपनी मसीही धारणाओं को कायम रखे रहना क्यों चाहते हो? क्या तुम अपने देश की रक्षा नहीं करोगे?'' मेरा उत्तर था: ''मैं इसलिए मसीह के पीछे चलता हूँ क्योंकि मैंने उसमें जीवन पाया है।''

मैं इस तरह की प्रतिक्रिया क्यों दे रहा था? उस समय मेरी आयु सिर्फ 17 वर्ष की थी, और उस समय, मैं सन्देहों से भरा हुआ था। बल्कि मैं इस हद तक अपने आत्मिक जीवन में संकट का सामना कर रहा था कि मैं अपने विश्वास को खोने पर ही था। मैंने अपनी कलीसिया को छोड़ दिया था, और मैं ऐनाबैपटिस्ट विश्वास को नहीं मानता था। कोलम्बिया देश में सेना में सेवा देना अनिवार्य था, और मेरा मसीही विश्वास इतना दृढ़ नहीं था कि मैं इसके कारण जेल जाने को तैयार हो जाऊं।

सीखने के पथ पर चलना

मेरे विचार से, इस तरह की प्रतिक्रिया देने के मेरे साहस का कारण लूका 24 में पाया जाता है, जहाँ मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान के बाद इम्माऊस के मार्ग पर चल रहे दो चेलों की कहानी का वर्णन किया गया है। सुसमाचार में ''चलने'' का एक विशेष अर्थ में प्रयोग किया गया है: यह जीवन जीने या आचरण का एक ढंग है। इस सुसमाचार में, *चलने* का सम्बन्ध *शिष्यता* से है।

लूका में, चलते समय बहुत सी बातें सीखीं गई। यहाँ, दो चेले बातें कर रहे हैं और दोनों आपस में एक दूसरे से सहमत नहीं हैं। यीशु आ कर दोनों के वार्तालाप में हस्तक्षेप करता है और उनसे यह प्रश्न करता है, ''ये क्या बातें हैं, जो तुम चलते चलते आपस में करते हो?'' मूल यूनानी में, पद 15 से यह स्पष्ट होता है कि दोनों के बीच में एक गहास वैचारिक मतभेद था।

असहमति के बाद भी चलना

क्या साथ चलना सम्भव है यदि हमारे मध्य आपस में असहमति हो? क्या यह सम्भव है कि हम भिन्नताओं से भरे समुदाय में रह पाएं जैसे कि हमारा समुदाय है।

जब हम मेनोनाइट वर्ल्ड कॉन्फ्रेंस के नक्शे को देखते हैं, तो तुरन्त ही हम यह जान लेते हैं कि ऐनाबैपटिस्ट गतिविधियाँ पूरे विश्व में फैली हुई हैं। क्या हमारे इस वैश्विक समुदाय में साथ मिल कर चलना सम्भव है जबकि हमारे बीच इतने अधिक सांस्कृतिक, धर्मवैज्ञानिक, और कलीसियाई अन्तर हैं?

लूका में, जो दो चेले यरुशलेम से आ रहे थे, उन दोनों के विचारों में बहुत गहरे मतभेद थे। वे लगभग इस स्थिति में पहुँच चुके थे कि वे स्वयं से यह पूछें कि क्या अब साथ साथ आगे बढ़ने का कोई अर्थ रह गया है। परन्तु यीशु नहीं चाहता था कि उनके चेले यरुशलेम से इस तरह से जाएं।

यरुशलेम से जाना, अर्थात्, अपने मिशन और अपनी बुलाहट का सामना करना, सम्भव नहीं है यदि हम बंटे हुए हों। यीशु चाहता था कि उसके चेले गवाही देने के लिए आत्मा से भर कर यरुशलेम से जाएं। शायद इसी कारण से इन दो चेलों को यरुशलेम लौटना पड़ा।

''यदि आप जल्दी पहुँचना चाहते हैं, तो अकेले चलें; यदि आप दूर तक जाना चाहते हैं, तो दूसरों के साथ चलें,'' यह एक प्रसिद्ध अफ्रीकी कहावत है। इम्माऊस के मार्ग पर चेलों ने इसी बात को सीखा। समुदाय में अपनी यात्रा के समापन पर, मतभेदों के बाद भी साथ चलते रहने के बाद, संगति का आनन्द लेने के दौरान चेलों की आँखे खोली गईं और मसीह के प्रति उनकी समझ स्पष्ट की गई (लूका 24:30–31)। इसके परिणामस्वरूप वे एक मन के हो कर यरूशलेम को लौटे।

अलग अलग पथ पर चलना

हमारे सम्मेलन का मूलविषय: ''परमेश्वर के साथ साथ चलना,'' के सम्बन्ध में इस स्थल से हम बहुत सी बातों को सीख सकते हैं। प्रत्येक भाषा में, परमेश्वर के साथ साथ चलने के अर्थ के सम्बन्ध में अलग अलग विचार व्यक्त किए गए हैं।

अंग्रेजी में, चलना एक निरन्तर चलनेवाली प्रक्रिया को दर्शाता है। यह एक सतत्, अन्तहीन प्रक्रिया है, और इसलिए यह हमारे सम्पूर्ण जीवन के लिए एक बुलाहट है। जब हम परमेश्वर के साथ चलते हैं, तो हमें लगातार अपने आप से यह प्रश्न करने की आवश्यकता है, ''हम पीछे क्या छोड़ रहे हैं? इस यात्रा में हमें अपने साथ क्या ले जाने की आवश्यकता है?''

स्पेनिश में, *कमिनेमोस* एक न्यौता है। यह हमारे भय को त्याग देने का, और अपने हृदय को संवेदनशील बनने देने के लिए खोल देने का एक न्यौता होता है। इस यात्रा में धीरज की आवश्यकता होती है: हमें ऐसे लोगों के लिए ठहरने की आवश्यकता है जो हमारे समान तेज गति से चल नहीं सकते और जो थके हुए हैं। यदि हम अकेले और दूसरों से स्वतंत्र रह कर कार्य करेंगे और यह समझेंगे कि हमें किसी की सहायता की आवश्यकता नहीं है, तो हम अलग रास्तों पर चल पड़ने की कठिन परीक्षा में पड़ सकते हैं।

किन्तु, साथ साथ चलने का न्यौता हमेशा खुला रहता है।

फ्रेंच भाषा में, *एनमार्के*, का आशय चलने में पूरी तरह से तल्लीन हो जाने से है। निश्चय ही अन्य चलने वालों के साथ कुछ तनाव हो सकते हैं, जिनके कारण अनेक मिश्रित भावों का अनुभव करना पड़ेगा। परन्तु, यदि हम परमेश्वर और दूसरों के प्रति पूरी तरह से समर्पित हो कर चलें, तो सामने आने वाले तनाव या समस्याएं हमें स्वंय को बदल डालने में हमारी अगुवाई करेंगी। यदि हम पूरी तरह से समर्पित हो कर नहीं चलेंगे, तो ये ही तनाव या समस्याएं हमें विघटन की ओर ले जाएंगी।

हमारे मूल विषय का शेष अंश, ''परमेश्वर के साथ,'' परमेश्वर के साथ हमारी संगति को दर्शाता है। यदि हम परमेश्वर के साथ नहीं चल रहे हैं तो एक दूसरे के साथ मिलकर चलना सम्भव नहीं है।

इम्माऊस के मार्ग पर ये चेले अपने मतभेदों के बाद भी साथ साथ चल रहे थे क्योंकि उनकी वार्तालाप का केन्द्र परमेश्वर था। उन्होंने यह सीखा कि एकता कोई ऐसी चीज़ नहीं है जो आश्चर्यजनक रूप से अन्त में हासिल कर ली जाती है; यह एक ऐसी चीज़ है जिसका निर्माण सारे रास्ते चलते चलते करना पड़ता है। यह एकता कायापलट देने वाले एक ऐसे परिवर्तन की ओर ले जाती है जो सिर्फ समुदाय में ही सम्भव है।

इस सम्मेलन में, हर दिन हम उन विभिन्न क्षणों पर मनन करेंगे जिनका अनुभव हम परमेश्वर के साथ चलते हुए करते हैं।

एकता कोई ऐसी चीज़ नहीं है जो आश्चर्यजनक रूप से अन्त में हासिल कर ली जाती है; यह एक ऐसी चीज़ है जिसका निर्माण सारे रास्ते चलते चलते करना पड़ता है।

जैसा कि चेलों ने इम्माऊस के मार्ग पर निश्चय ही यह अनुभव किया, वैसे ही हमारे सामने भी सन्देह के क्षण आएंगे और निश्चय के क्षण भी आएंगे कि हम सही मार्ग पर चल रहे हैं।

हमारे सामने विवाद और मेलमिलाप के क्षण आएंगे।

हमारे सामने ऐसे क्षण आएंगे जब हम स्वतंत्र हो कर अकेले चलना चाहेंगे, परन्तु ऐसे क्षण भी आएंगे जब हम समुदाय के साथ चलने की आवश्यकता महसूस करेंगे।

हमारे सामने ऐसे क्षण आएंगे जब हमें सहायता की आवश्यकता होगी और ऐसे क्षण भी जब हम सहायता करने के लिए तैयार रहेंगे।

यही शिष्यता का जीवन है। हम एक प्रक्रिया को पार कर रहें हैं; अब तक हम अपने लक्ष्य तक पहुँच नहीं पाए हैं, परन्तु आगे बढ़ते जा रहे हैं।

यह स्थल यह समझने में मेरी सहायता करता है कि मैंने कप्तान को इस तरह का उत्तर क्यों दिया था। मेरे साथ, चार अन्य मसीही सैनिक भी थे। वे मेनोनाइट या ऐनाबैपटिस्ट नहीं थे। परन्तु जब कप्तान ने उनसे यही प्रश्न किया, तो उन्होंने उत्तर दिया कि वे यीशु की आज्ञा का ही पालन कर रहें हैं और वे अपने आप को बचाने के लिए दूसरों को मारना नहीं चाहते।

इन मित्रों में से कुछ तो कप्तान द्वारा किए गए वार से जमीन पर गिर पड़े। इसलिए, मैं इस तरह से उत्तर दे सका क्योंकि मुझे वहाँ एक नया समुदाय मिल गया था। चार ऐसे मित्र जिनके साथ मैं कष्ट, हिंसा और सताव के मध्य चलने को तैयार था। चार ऐसे मित्र जिनसे मैं यह कह सकता था, कि अपनी भिन्नताओं के बाद भी ''आइये हम परमेश्वर के साथ चलें।'' और आज की संध्या मैं आप से यह कहना चाहता हूँ, ''आइये हम परमेश्वर के साथ चलें,'' इस सप्ताह भर परमेश्वर के साथ चलें और आने वाले वर्षों में परमेश्वर के साथ चलें।

सम्मेलन का आरम्भ स्थानीय मूल निवासियों की ओर से स्वागत और एमडबल्यूसी के सदस्य कॉन्फ्रेंसों और सम्बन्धित संस्थाओं के झण्डों के साथ परेड के साथ हुआ। नीचे ली और जोआन मैक लॉग्लिन एक पारम्परिक संगीत का वादन कर रहे हैं।

रे डिक्र्स

काज़ेटोमा पे एम्प

जॉन एबी

Pennsylvania
2015

पवित्र आत्मा की दया हमारी कठिनाइयों में हम पर इस्तरी करती है

यूकारी कागा

जापान के युकारीकागा ने बुधवार संध्या 22 जुलाई 2015 को 16वें सम्मेलन को सम्बोधित किया। युकारी होक्काइडो में मेनोनाइट की अनेक छोटी मण्डलियों में पासवान के रूप में अपनी सेवाएं देती हैं। वे पीस मिशन सेन्टर की प्रमुख निदेशिका हैं और जापान में मेनोनाइट एजुकेशन एण्ड रिचर्स सेन्टर में सेवा करती हैं।

1 पतरस 1:3–9

"हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता का धन्यवाद हो!" पतरस परमेश्वर की स्तुति करते हुए इस पत्री का आरम्भ करता है। परमेश्वर की यह स्तुति एक आराधना है। परमेश्वर को धन्य कहने वाला यह कथन महिमागानों (विशेष कर भजनसंहिता) में पाया जाता है। शायद इसलिए, एशिया माइनर की आरम्भिक कलीसियाएं अवश्य ही सरलता से यह समझ गईं होंगी कि पतरस ने अपनी पत्री का आरम्भ आराधना करते हुए किया है।

परन्तु यह बात मुझे थोड़ी विचित्र लगती है। यदि हम इस पत्री की पृष्ठभूमि की ओर ध्यान दें, तो हम पाएंगे कि एशिया माइनर की कलीसियाओं के मसीही एक जोखिमभरी परिस्थिति के मध्य जी रहे थे। इस बात की बहुत सम्भावना थी कि विश्वभर में उन पर हो रहे सताव के कारण उन्हें अपने प्राण भी खोना पड़ सकते था। ऐसी क्रूर परिस्थिति में फँसे मसीहियों को पौलुस ने यह पत्र लिखा था। परन्तु, मेरे मन में एक प्रश्न है: हम एक पीड़ादायक परिस्थिति में किस प्रकार से परमेश्वर की स्तुति कर सकते हैं? पतरस ऐसा कैसे कर सका? आरम्भिक कलीसिया के लोग इस पत्री को कैसे समझ सके?

जब परिस्थितियाँ भय उत्पन्न करती हैं

यह सुनिश्चित है कि पतरस ने इस पत्री को मसीहियों को लिखा था। पतरस को निश्चय ही इन कलीसियाओं पर भरोसा था और वह इन कलीसियाओं के लोगों का बहुत सम्मान करता था। वह आँसुओं और रुदनभरी उनकी भारी दुदर्शा के विषय अवश्य ही अच्छी तरह से जानता रहा होगा। अवश्य ही उसकी इस पत्री ने उन्हें यह स्मरण दिलाया होगा कि वे "लहू के छिड़के जाने के लिए चुने गए" परमेश्वर के लोग हैं (1:2)।

इसलिए पतरस यह अवश्य ही जानता रहा होगा कि उसके पाठक सन्निकट वास्तविकता में लोहू के अर्थ को जानते हैं, क्योंकि बहुत सारे लोग मारे जा रहे थे। और, अब भी, हम जानते हैं कि बहुत सारे लोग मारे जा रहे हैं।

जब हम किसी बदली न सकनेवाली वास्तविकता का सामना करते हैं और परिस्थितियों के द्वारा पराजित कर दिये जाते हैं, तो हम कठिन स्थिति में पड़ जाते हैं। हम अपने विश्वास को जकड़ कर थामे रखते हैं, तौभी कठिनाई बनी रहती है। यह कठिनाई और संघर्ष बेचैनी, चिन्ता, या भय उत्पन्न करता है। हम हताश हो जाते हैं और हमारे हृदय सिकुड़ जाते हैं। हम भय से सिकुड़ जाते हैं।

ऐसा हम सब के साथ होता है, विशेष रूप से तब जब हमें किसी कठिन परिस्थिति में अस्थिरता या अनिश्चय का सामना करना पड़े। यह समय बहुत पीड़ादायक होता है क्योंकि वास्तविकता हमें चुनौती देती है। प्रश्न हमारे मन में सन्देह उत्पन्न करते हैं और सन्देह के कारण हम अपना निश्चय खोने लगते हैं। उसके बाद, हम हताश हो जाते हैं और हीन भावना हमें एक अभागेपन के बोध से घेर देती है। हम सिकुड़ कर भय से पीले पड़ जाते हैं।

सिकुड़े हृदयों पर इस्तरी

किन्तु, बाइबल कहती है, "अपनी बड़ी दया से।" दया के प्रतीक के रूप में पहचाना जाने वाला एक जापानी चरित्र कांजी (मूलत: चीनी चरित्र की एक तस्वीर से) का चित्र एक ऐसे व्यक्ति का चित्र है जो सिकुड़े हुए हृदय पर पुराने जमाने की इस्तरी से इस्तरी कर रहा है, आधुनिक समय की इलेक्ट्रिक इस्तरी से नहीं। पुराने जमाने की इस्तरी का प्रयोग कर, एक व्यक्ति हमारे सिकुड़े हुए हृदय को एक उपयुक्त तापमान कायम रखते हुए इस्तरी करता है। इसका तापमान न तो बहुत अधिक और न बिल्कुल कम, परन्तु बिल्कुल उपयुक्त होता है।

पवित्र आत्मा का यही कार्य है। यह सहायक हमारे सिकुड़े हुए हृदय को चंगा करने और फिर से नया बनाने के लिए बिल्कुल उपयुक्त तापमान कायम रखते हुए बार बार इस्तरी करता है।

परमेश्वर ने हमारे साथ ऐसा ही किया है और आज भी कर रहा है। और इसी परमेश्वर ने यीशु को मरे हुओं में से जिलाया।

1 पतरस के इस स्थल की पृष्ठभूमि में बहुत से लोग मरते जा रहे थे। और आज भी बहुत से लोग इस संसार में मरते जा रहे हैं। परन्तु इस परमेश्वर ने मरते हुए लोगों के मध्य में यीशु को मरे हुओं में से जिलाया। यीशु भी अन्य लोगों के समान ही मरा परन्तु उसकी मृत्यु ने उसकी जय में मृत्यु को निगल लिया (1 कुरिन्थियों 15:54–55)।

"विश्वास एक ऐसी चीज़ है जो हमारे बाहर से हमारे जीवनों में लाई जाती है"

यही परमेश्वर की महान सामर्थ का कार्य है। और परमेश्वर इस सामर्थ को हम सब के लिए उपयोग करता है कि खतरों से हमारे विश्वास की रक्षा करे और परमेश्वर की बड़ी दया में हमारे निश्चय को फिर से लौटा लाए।

कभी कभी हम यह कहते हैं कि हम में विश्वास है। परन्तु विश्वास एक ऐसी चीज़ नहीं है जो हम में आरम्भ से पाई जाती हो, और न कोई ऐसी चीज़ जो हमारे भीतर उत्पन्न हुई हो। बल्कि, विश्वास एक ऐसी चीज़ है जो हमारे बाहर से हमारे जीवनों में लाई जाती है।

परमेश्वर अवश्य ही हमारे भीतर यह निश्चय उत्पन्न करता है कि हम सब ने यह विश्वास करने के द्वारा नया जीवन पाया है कि यीशु मसीह मृतकों में से जिलाया गया। परमेश्वर की परम सामर्थ में, हम पुनरुत्थान के द्वारा एक जीवित आशा में फिर से खड़े हो सकते हैं। और इस जीवित आशा में, एक ऐसा जीवन पाया जाता है जो एक सच्चा जीवन प्रदान करता है।

हमारी जीवित आशा की ज्योति

पतरस लोगों को इस आनन्द के विषय में बताना चाहता है ताकि वे इस जीवित आशा के प्रकाश में उद्धार प्राप्त कर सकें। वह यह भली भांति जानता है कि वह कितना अभागा था। मसीह के लोहू के द्वारा, पतरस ने वह पाया जिसे उसने पहले कभी न जाना था।

पुनरुत्थान के द्वारा, पतरस ने जीवित आशा के प्रकाश में स्वयं में नया जीवन पाया। उसने यह पा लिया; उसे सिर्फ यह करना है कि वह इस जीवित आशा के प्रकाश में अपना जीवन व्यतीत करे। उद्धार में यही हमारी मसीही आशा है जो अन्तिम समय पर प्रगट की जाने वाली है।

慰

दया का प्रतीक जपानी चरित्र कांजी

इसलिए पतरस परमेश्वर की स्तुति कर सका। हमें उसकी सशक्त और स्तुति करने वाली आवाज़, आँसुओं के साथ गीत गाते हुए सुनाई पड़ती है। भले परमेश्वर हमारे सामने चुनौती खड़ी करे, हमें परमेश्वर की स्तुति करना है।

यह सच है कि हम अनेक परीक्षाओं के सामने लड़खड़ा जाते हैं और कभी कभी गिर भी जाते हैं। परन्तु हमारा विश्वास कभी लुप्त नहीं होता क्योंकि हमारे सामने परमेश्वर की ढाल है। परमेश्वर की ढाल पर कोई प्रबल नहीं हो सकता। हमारा परमेश्वर हमारी आँखों से हर एक आँसू को पोछ देता है (प्रका. 7:17)।
पुन:, हमें इस पत्री से आनन्द से भरी हुई आवाज़ें सुनाई पड़ती हैं। और अब, हम भी अपने स्वरों को एक साथ ऊँचा उठाएं। स्तुति करते हुए और गीत गाते हुए, हम प्रभु यीशु मसीह के पीछे चलते जाएं।

स्वर्गीय पिता, हे प्रभु,
इस संसार पर दया कर,
अपनी करुणा और बड़ी दया के अनुसार
अपने किए हुए उद्धार का हर्ष हमें फिर से दे और उदार आत्मा दे कर हमें सम्भाल
यहाँ से हम फिर से तेरी जीवित आशा में चल सकें कि हमारे प्रभु यीशु के एक चेले के रूप में उसका अनुसरण कर सकें। आमीन!

मोनिका फिगुरोवा

काज़ूटोमा पे एप्प

रे डिक्सं

रेपिलिन मोनडेज़

ऊपर से नीचे फिर बाएं: दक्षिण कोरिया की साइजिन ली ने "परमेश्वर की महिमा में/ *चुक्केसोवांग विये*" सभा की अगुवाई की। डैन अर्न्नोल्ड ने ग्लोबल चर्च विलेज़ के मंच पर अपने सितार पर भारतीय शास्त्रीय संगीत का वादन किया। कॉनरोड ग्रेबल यूनिवर्सिटी कॉलेज इन कनाडा के दगमेलन इनसेम्बल ने पारम्परिक बालिनी वाद्ययंत्रों का वादन किया। एक स्थानीय भाई ने वीणा वादन किया।

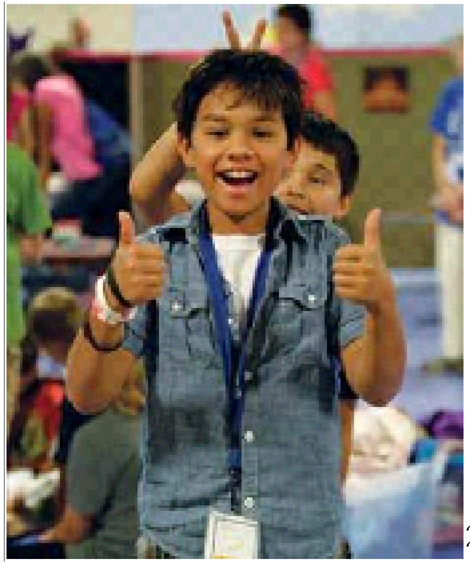

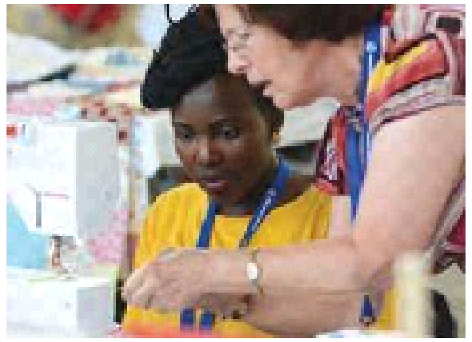

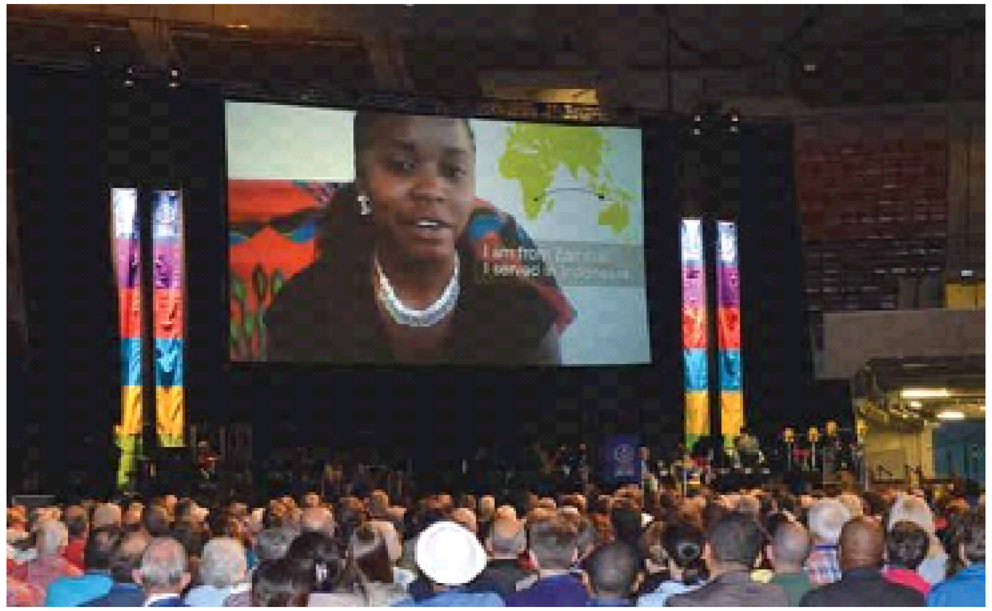

ऊपर बाएं से घूमकर दाएं ओर: सामूहिक सत्र के दौरान बच्चों की गति विधियाँ। वॉलेन्टियर्स द्वारा प्रतिभागियों को सिलाई की कला सिखाई गई। चारों कमीशनों, आइक्वेप, यामेन के विडियो सामूहिक सत्र के दौरान प्रसारित किए गए। डॉन मैक निवेन ने संगीत संयोजन किया इसमें मसीही गायक डोडो मिरांडा भी शामिल थे। ग्लोबल चर्च विलेज सांस्कृतिक प्रस्तुतियों और संगीत का आनन्द लेते हुए तरोताज़ा होने का एक स्थान था। वॉलेंटियर्स ने मेनोनाइट डिसास्टर सर्विस के लिए एक घर बनाया। आसपास के ऐतिहासिक स्थलों व फार्म हाऊस क्षेत्रों का भ्रमण। सुबह के सामूहिक सत्रों के बाद मित्रता समूह में मिलकर एक दूसरे के दृष्टिकोण से परिचित होने का समय। लैरी मिलर और ऐनी–कैथी ग्रेबर ने ग्लोबल चर्च फोरम की ओर से नमस्कार दिया। क्वायर ने ग्लोबल चर्च विलेज़ के मंच पर गीत प्रस्तुत किया।

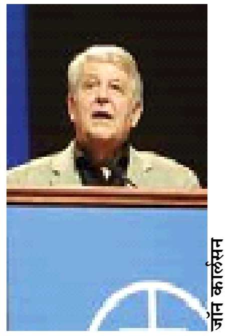

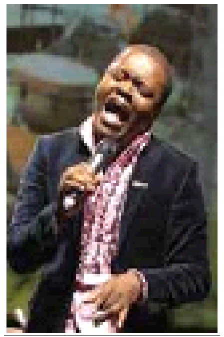

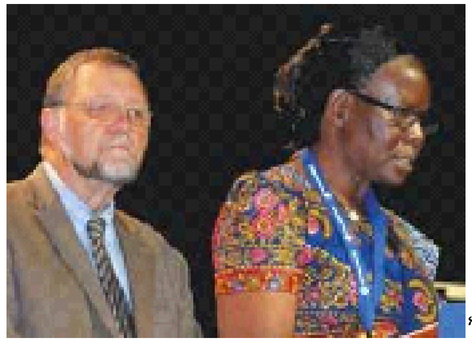

रबेका ओसिरो केन्या मेनोनाइट चर्च, इएफसी मण्डली, नैरोबी में एक पासवान है। वे 2015 की जनरल कॉन्सिल सभा में एमडब्लयूसी की उपाध्यक्षा चुनी गईं। टॉम योडर न्यूफेल्ड वाटरलू, ओन्टारियो, कनाडा के एक सेवानिवृत्त मेनोनाइट बाइबल प्रोफेसर हैं।

फेथ एण्ड लाइफ कमीशन

परमेश्वर हमारे साथ चलता है

प्रेरित 12:6–17;
इब्रा. 11:1; 12:12–15

टॉम: हम परमेश्वर के साथ सन्देह में भी और निश्चय में भी चलते हैं। आखिर, "विश्वास *आशा की हुई* वस्तुओं का निश्चय और *अन*देखी वस्तुओं का प्रमाण है" (इब्रा.11:1)।

रबेका: केन्या की लुओ जाति में *कियावा* – सन्देह – शब्द का प्रयोग एक ऐसे सन्दर्भ में किया जाता है जिसमें अन्तिम परिणाम सुनिश्चित नहीं होता। सन्देह को सन्दर्भ रूप देता है।

मेरे देश में, जंगलों और झुरमुट में से हो कर चलना अनिश्चितताओं और खतरों से भरा होता है; असमाजिक तत्वों और अपराधियों का आक्रमण, जंगली जानवर, और कांटेदार झाड़ियाँ। ऐसी परिस्थितियों में, अपने गंतव्य तक सुरक्षित पहुँच पाने में व्यक्ति के मन में सन्देह रहता है।

ऐसी परिस्थिति में, कम खतरनाक चुभन में भी सहायता की आवश्यकता होती है। एक *जाकोल कुधो* – कांटे निकालने वाला – साथ साथ चलता है और खतरा होने पर सामने आ कर बीच बचाव करता है। वह यात्री को ढाढ़स बन्धाता है, उत्साहित करता है, और दिशा दिखाता है।

लुओ द्वारा प्रयोग जाने वाले शब्द *कियावा* और *जाकोल कुधो* के अर्थ से सम्बन्धित कहानियाँ बाइबल में पाई जाती हैं। हमारे *वुओथ* (चलने या यात्रा) में सन्देह की सम्भावना को हटा कर इसका स्थान आशा से परिपूर्ण एक दृढ़ निश्चय ले लेता है। *जोकोल कुधो* कठिन परिस्थितियों में स्वयं सामने आ जाता है जिससे यात्री को समय मिल जाता है कि वह समस्या को सहीं तरीके से समझ कर उचित प्रतिक्रिया दे, यह पतरस के वध में विलम्ब किए जाने से मिलता जुलता है, जिससे भाइयों को लीन हो कर प्रार्थना करने का समय मिल गया (प्रेरित 12)।

मसीह, जो सबसे बड़ा *जोकोल कुधो* है तब भी हमारे साथ उपस्थित रहता है जब ऐसा लगता है कि अब कोई उपाय न रहा। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि भोर के ठीक पहले का अन्धकार सबसे अधिक घना होना है! *जाकोल कुधो* के साथ होने पर, सन्देह तो आते हैं परन्तु वे निश्चय की एक आवश्यक झरोखे के समान होते हैं।

टॉम: विश्व के उत्तर भाग में सन्देह एक बहुत आम बात है जिसे टाला नहीं जा सकता, परन्तु अक्सर यह आवश्यक और भली बात सिद्ध होती है।

इब्रानियों 11 में विश्वास की वास्तविकता का वर्णन किया गया है: विश्वास *अनदेखी* वस्तुओं का प्रमाण है (1:1)।

परन्तु इब्रानियों की पत्री में इस बात पर भी जोर दिया गया है कि कोई है जो हमारे साथ है – हमारा *जाकोल कुधो*, यीशु हमारे "विश्वास के कर्ता" (इब्रानियों 12:2), मार्ग में हमारा अगुवाई करता है।

हो सकता है कि बाइबल हमेशा एक स्पष्ट नक्शा सिद्ध न हो, परन्तु परन्तु यह एक ऐसे परमेश्वर की सच्ची गवाह है जो सबसे अन्धकारमय समयों में हमारे साथ पूर्ण रूप से एक हो कर चलता है, और हमें यह स्मरण दिलाता रहता है कि हम विश्वास को लेकर कठिनाई महसूस करने के मामले में हम ही अकेले या पहले व्यक्ति नहीं हैं।

एक ओर जहाँ कलीसिया हमारे विश्वास के सामने परीक्षा लाती है, वहीं दूसरी ओर यह कलीसिया परमेश्वर की एक भेंट भी है कि वह हमारे निश्चयों को सामर्थ और गहराई प्रदान करें। वे मसीह की देह हैं, काँटा निकालने वाले की देह।

वे – आप! – सन्देह में और निश्चय में चल रहा परमेश्वर हैं।

परमेश्वर का धन्यवाद हो।

यंग ऐनाबैपटिस्ट (वायएबी)

सन्देह हमारे निश्चय को धार प्रदान करते हैं

सन्देह और निश्चय का भार हमेशा समान नहीं होता। विशेष रूप से तब जब हम एक पश्च–आधुनिक युग में रहते हैं, जहाँ हर एक चीज़ टेबल के ऊपर रहने का अधिकार रखती है, जहाँ हर एक बात अपने आप में सहीं है और हर एक व्यक्ति एक कांटा निकालनेवाला है, वहाँ यह बिल्कुल सामान्य है कि मेरी कलीसिया में, आपकी कलीसिया में, उसकी कलीसिया में, और उनकी कलीसिया में ऐसे बहुत से युवा मिलेंगे जो सन्देह में भी और निश्चय में भी अपना जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

विश्वास सन्देह और निश्चय में चलने के समान है। हमारी कामनाओं और चतुराइपूर्ण प्रयासों के बाद भी, यह असम्भव है कि यात्री के रूप में हम काँटो से बच पाने में सफल हो जाएं। सन्देह एक ऐसी कुंजी है जो परमेश्वर के साथ हमारी यात्रा में हमारे निश्चय को गहराई प्रदान करती है।

मैं नहीं चाहता कि मेरे सन्देह मुझे अत्याधिक विचलित कर मुझे प्रभु के साथ चलने से भटका दें। कभी कभी, मेरे भीतर उत्पन्न होने वाले सन्देह इतने प्रबल होने लगते हैं कि मुझे लगता हैं कि यह मुझे गिराने पर ही है।

किन्तु, हमारे लिए आशा की एक झलक है, यीशु मसीह का व्यक्तित्व। यीशु मसीह जो हमारे विश्वास का कर्ता और सिद्ध करने वाला है। मैं मसीह की देह से यह विनती करता हूँ कि वह अपने जीवन में प्रभु के कार्य को प्रदर्शित करे ताकि मैं सचमुच में इसे अपने जीवन में लागू और अनुभव कर सकूं। यीशु इम्मानुएल है, परमेश्वर हमारे साथ, जो सारे उतार चढ़ाव में हमारे साथ चलता है। इन ज्ञानात्मक तथ्यों को मैं किस तरह से जीवन के ऐसे निश्चयों में बदल सकता हूँ जो मेरे सन्देहों पर हावी हो जाएं? यहाँ पर सहायता करने के लिए प्रभु हाजिर है।

परमेश्वर के साथ चलते हुए हम अपने सन्देहों का उत्तर पा सकते हैं या हम अपने सन्देहों के साथ जीना सीख सकते हैं।

विश्वास के समुदाय की ओर से सहायता और मसीह के प्रति हमारी निष्ठा से, सन्देह हमारी सहायता करते हैं कि हम समझ हासिल कर सकें और अपने विश्वास को गहराई प्रदान कर सकें।

आइये हम अपने सन्देहों को एक दूसरे के साथ बाँटे, शायद

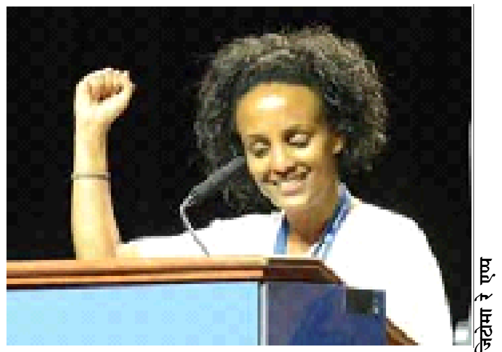

तिजिस्त तेसफायगेल ग्लेइथोपिया के एड्डिस अबाबा, में अपनी कलीसिया में सेवकाई दे रही है, उन्होंने मेनोनाइट सेन्ट्रल कमेटी के न्यूयार्क यूनाइटेड नेशन्स कार्यालय, और इथोपिया में मेनोनाइट इकोनॉमिक डेवलेपमेन्ट एसोसिएट्स एण्ड कम्पैशन इन्टरनेशनल में इन्टर्न के रूप में अपनी सेवाएं दी हैं। वे 2015 तक याब्स कमेटी की सदस्या रहीं।

बहुतायत या कमी और अस्थिरता हमारे सन्देहों का कारण बन जाती हो। आइये हम अपने निश्चयों को प्रभु यीशु के सामने एक दूसरे के साथ बाँटे ताकि अपने सन्देहों को पार कर सकें। जब हम विश्वास के समुदाय की सहायता से अपने सम्बन्धों को मजबूत करते हैं, सन्देह हमारे निश्चयों को धार प्रदान करते हैं।

एक ही समय में सन्देह में और निश्चय में चलना एक साइकल चलाने के समान है; एक पैडल सन्देह है और दूसरा निश्चय। दोनों के बिना, विश्वास की यात्रा सम्भव नहीं है।

लैरी मिलर और एन्नी केथी ग्रेबर ने ग्लोबल क्रिश्चन फोरम की ओर से शुभ कामनाएं दी। क्वायर ने ग्लोबल चर्च विलेज के मंच पर गीत गाया।

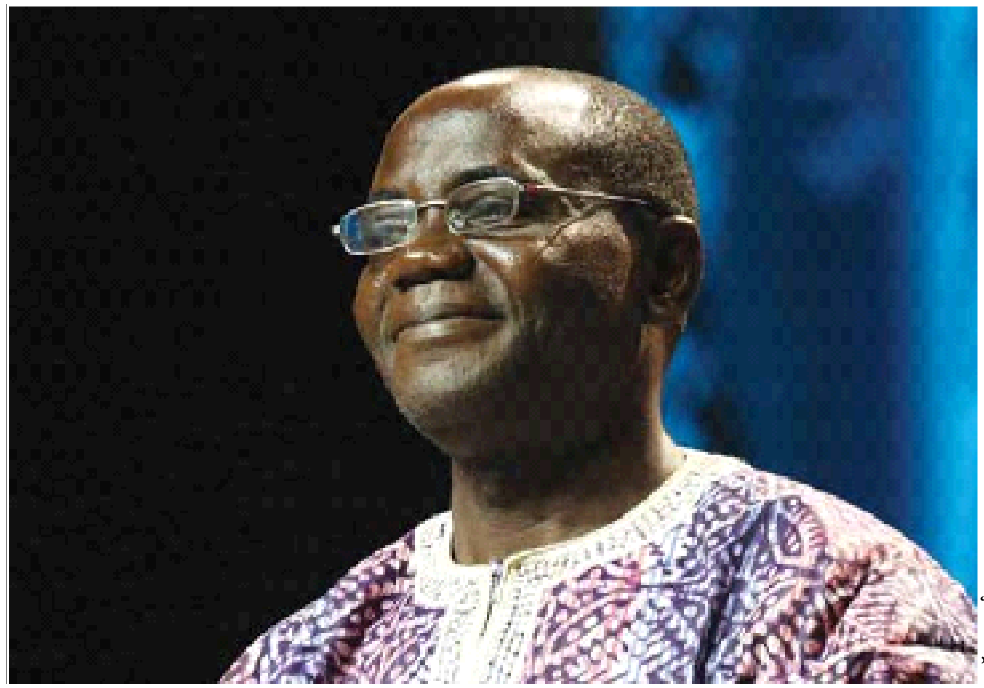

जॉन कार्लसन

अन्धकार में पड़े हुओं के लिए ज्योति और आशा

नज़ूज़ी मुकावा

डेमोक्रेटिक रिपब्लिक ऑफ कांगो के नजुजी मकावा ने गुरुवार संध्या, 23 जुलाई 2015 को 16वे सम्मेलन को सम्बोधित किया। नजुजी एमबी मिशन इन सब-सहारन अफ्रीका टीम की अगुवाई करते हैं। वे मिशन विषय के प्राध्यापक और डेमोक्रेटिक रिपब्लिक ऑफ कांगो में मेनोनाइट ब्रदरन की एक मण्डली के पासबान भी हैं।

1 शमूएल 25:1–44;
2 कुरिन्थियों 5: 17–20

वर्तमान समय में, दुनिया की सुरक्षा अन्तर्राष्ट्रीय, अन्तर्गोत्रिय, और यहाँ तक कि अन्तर्धार्मिक लड़ाइयों के कारण भी खतरे में है। कभी कभी तो, सुरक्षा बलों का संघर्ष उन लोगों के साथ भी हो जाता है जिनकी सुरक्षा के लिए वे तैनात हैं। आतंकवाद ने अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर असुरक्षा का वातावरण निर्मित कर दिया है। अनेक देश युद्ध के कारण छिन्न भिन्न हो गए हैं। राजनैतिक–धार्मिक आन्दोलन जैसे अल–कायदा, इस्लामिक स्टेट, और बोको हाराम धर्म के नाम पर रक्त उण्डेल रहे हैं। मत और नीति–सिद्धान्त लोगों को बांटते हैं और विभाजित घरानों को जन्म दे देते हैं।

विवाद और संघर्ष एक मजबूत और संतुलित समाज की बुनियादी सामाजिक ईकाइयों को कम आंकते हैं। यह तालाक का कारण बन सकता है। यह बच्चों को बेघर कर सकता है। यह परिवारों के भीतर एक दूसरे के प्रति शत्रुता उत्पन्न करता है और व्यवसाय को समाप्त कर कर्मचारियों को बेरोजगार बना देता है।

अपने आरम्भ से ही, कलीसिया आन्तरिक और बाहरी तौर पर विवादों से बच नहीं सकी है। बाहर से, कलीसिया हमेशा से ही सताव का शिकार रही है और आज भी यह जारी है। आन्तरिक रूप से, कलीसिया को हमेशा झूठी शिक्षाओं और पद/अधिकार सम्बन्धी विवादों का सामना करना पड़ा है। उदाहरण के लिए, ऐनाबैपटिस्ट लोग 16 शताब्दी में प्रोटेस्टेंट लोगों के धर्मसुधार आन्दोलन से एक विवाद के कारण अलग हो गए थे।

हमारा संसार, भले ही कितना ही शान्तिमय प्रतीत होता हो, विवाद और संघर्ष इस पर हावी हैं। किस तरह से सामान्य रूप से कलीसिया और विशेष रूप से मसीही इस लड़ाई–झगड़े से भरे संसार में मेलमिलाप की ओर चल सकते हैं? क्या यह सम्भव है कि हम ऐसे संसार में मेलमिलाप को बढ़ावा दे सकें जहाँ विवाद और लड़ाइयाँ अपना आधार मजबूत करती जा रही है?

1 शमूएल 25:1–23 का विश्लेषण

1 शमूएल 25:1–35 का वर्णन विवाद की ओर और विवाद से मेलमिलाप की ओर चलने का एक आदर्श हमारे सामने रखता है। इस स्थल का विश्लेषण करते हुए, हम ऐसी व्यावहारिक शिक्षाओं को सीख सकते हैं जो विवादों और मेलमिलाप के सम्बन्ध में हमें परमेश्वर के विचारों को समझने में सहायता करती हैं।

विवाद की ओर चलना (पद 1 से पद 13)

1 शमूएल 25 के 2–13 पदों में, हमारा परिचय नाबाल, अबीगैल, दाऊद, और सन्देशवाहकों से होता है। इनका आमना–सामना इन्हें पहले विरोध की ओर ले गया जो बाद में एक लड़ाई का रूप ले लेता है।

नाबाल एक बहुत धनी व्यक्ति था जिसमें आत्मिक मूल्यों और अच्छे चरित्र की कमी थी (2–3)। नाबाल के हठी हृदय में दुर्भाव भी भरा था।

जब दाऊद को यह पता चला कि नाबाल की भेड़ों का ऊन कतरा जा रहा है, तो उसने अपने सेवकों को नाबाल के पास भेजा और अपने दल के लिए सहायता मांगा जो उस समय जंगल में था। नाबाल को भेजे अपने सन्देश में, दाऊद ने भलाई, शालीनता, और नम्रता प्रगट किया था। सैन्य दृष्टि से, वह नाबाल से शक्तिशाली था, परन्तु उसने एक शान्तिपूर्ण स्वर से, आनन्द और उत्सव के अवसर पर नाबाल के कृतज्ञ हृदय की दोहाई दी। उसने नाबाल को यह स्मरण दिलाया कि दाऊद के दल ने नाबाल की भेड़ों की रक्षा की थी।

दाऊद द्वारा शान्ति को बढ़ावा देने के भाव से नाबाल के सामने अपनी बात रखने के बाद भी नाबाल ने दाऊद की भलाई का प्रत्युत्तर कटुता से, शिष्टाचार का उत्तर अपमान से, भरोसे का उत्तर तिरिस्कार और द्वेष से दिया (10–11)। दाऊद की भलाई के बदले नाबाल का दुर्भाव लड़ाई का कारण बन गया (पद 13) क्योंकि दाऊद क्रोधित हो गया और नाबाल की हिंसा का उत्तर हिंसा से दिया।

यहाँ पहले 13 पदों से हमें यह ज्ञात होता है कि इस कहानी में लड़ाई को बढ़ावा देने के प्राथमिक कारण कौन कौन से हैं:

- नाबाल की कटुता और दुर्भाव दाऊद द्वारा दिखाई गई भलमनसाहत और मेल की आत्मा के विपरीत थे (6–8 पदों में)। कटुता और दुर्भाव जैसी बातें दोनों पक्षों को लड़ाई के मार्ग पर चलने को भड़काती हैं।
- नाबाल ने अपने स्वार्थ के कारण न सिर्फ अपने पास की वस्तुओं को आवश्यकता में पड़े लोगों के साथ बाँटने से मना कर दिया, परन्तु उसने उसकी सम्पत्ति की रक्षा करने वालों का आभार मानने और उन्हें धन्यवाद देने से भी इंकार कर दिया। इसी कारण दाऊद इतना क्रोधित हो गया कि उसने इस व्यक्ति को हिंसा के सहारे एक पाठ पढ़ाने की ठान ली।
- दाऊद और नाबाल के बीच की बातचीत सन्देशवाहकों के माध्यम की चल रही थी, उनकी भी इस लड़ाई में एक सक्रिय भूमिका है। जिस ढंग से वे जानकारियों को प्रस्तुत करते हैं वह भी लड़ाइयों को भड़काने में बहुत बड़ा योगदान देता है।

इस स्थल में जिन कारणों से लड़ाई भड़की, वे आज भी विवाद और लड़ाइयों का कारण बनते हैं। कलीसिया ऐसी परिस्थितियों में किस प्रकार से मेल को बढ़ावा दे सकती है?

लड़ाई से मेलमिलाप की ओर (पद 14–35)

इस कहानी के दूसरे खण्ड में घटनाओं का एक अन्य क्रम आरम्भ होता है। नाबाल का सेवक, अबीगैल, और दाऊद इसके प्रमुख पात्र हैं।

नाबाल की प्रतिक्रिया को लेकर उसके पक्ष के लोग चुप नहीं रहें। नाबाल के सेवक उसके इस कार्य और दाऊद व उसके सेवकों से बदला लेने की उसकी मंशा के प्रति असहमत थे। एक बुद्धिमान मनुष्य विपत्ति को आते देख कर छुप जाता है (नीति. 22:3; 27:12), और इस तरह से, एक सेवक ने अपनी स्वामिनी के सामने सारी स्थिति को स्पष्ट कर दिया। उसने अपने स्वामी को बचाने के लिए एक उपाय सुझाया, क्योंकि उसके स्वामी का चरित्र उसे ऐसा मेलमिलाप ग्रहण करने की अनुमति नहीं देता जिससे शान्ति स्थापित हो सके (पद 17)।

अबीगैल ने उसकी बात को ध्यानपूर्वक सुना। इस समस्या का समाधान करने को उसके द्वारा अपनाया गया तरीका साहस, युक्ति, और दीनता को प्रगट करता है (18–20)। उसने अपनी योजना एक ऐसे दल के साथ मिलकर बनाया जो शान्ति के लिए कार्य करता है (पद 19)। उसने एक शान्तिपूर्ण योजना के साथ इस संघर्ष का सामना किया (पद 20), और पूरे समय वह शान्ति के मार्ग पर आने वाले अवरोधों से निपटती रही (पद 19)। उसने क्षमा मांगने में कोई शर्म और हिचक महसूस नहीं किया, और दाऊद की आवश्यकताओं की पूर्ति करने और मेल करने का प्रस्ताव रखा। इस स्त्री के द्वारा विवाद का समाधान करने के लिए तैयार की गई योजना के तरीके से, और मेलमिलाप करने के लिए उसके द्वारा अपनाई गई प्रक्रियाओं से हम क्या सीख सकते हैं?

मेलमिलाप, विवाद–समाधान की ओर जाने वाला मार्ग

परमेश्वर नहीं चाहता कि उसकी सन्तान लड़ाई–झगड़ों का हिस्सा बनें, परन्तु वह चाहता है कि वे मेल के लिए कार्य करें (इफिसियों 4:1–3) जैसा कि अबीगैल ने किया। उसने मेलमिलाप के मार्ग का अनुसरण किया जो बैरभाव को त्याग कर दो बैरी पक्षों के बीच फिर से शिष्टाचार और संगति को स्थापित करता है।

मेलमिलाप हमारे संसार की एक अनिवार्य आवश्यकता है।

> “क्रूस पर पूरा किया गया कार्य हमें शान्ति और न्याय प्रदान करता है – सिर्फ कलीसिया के लिए, परन्तु सम्पूर्ण संसार के लिए।”

हमें परमेश्वर और मानवजाति के मध्य (रोमियों 5:8–11; 2 कुरिन्थियों 5:18–19; कुलुस्सियों 1:19–22); मानव व मानव के मध्य (इफिसियों 2:11–22) पुन: संगति स्थापित करने की आवश्यकता है और सम्पूर्ण सृष्टि में एक बार फिर से सामंजस्य स्थापित करने की आवश्यकता है (रोमियों 8:18–22)।

हमारे मेलमिलाप की आशा की जड़ मसीह के द्वारा क्रूस पर पूर्ण किए गए कार्य में पाई जाती है, जिसके द्वारा मानवजाति पर से परमेश्वर के क्रोध और दण्ड को दूर हटा दिया गया। मसीह के क्रूस ने मेलमिलाप का उपाय किया। क्रूस पर, मसीह ने उस कार्य को मिटा दिया जो हमें दोषी ठहराता था और हमें अलग करने वाले बैर और सब सांस्कृतिक अवरोधों को दूर कर दिया (कुलुस्सियों 2:14–15)।

क्रूस पर पूरा किया गया कार्य हमें शान्ति और न्याय प्रदान करता है – सिर्फ कलीसिया के लिए, परन्तु सम्पूर्ण संसार के लिए। हमें शान्ति और न्याय पर न सिर्फ विश्वास करने के लिए, परन्तु उन्हें बिना भेदभाव के सब पर लागू करने के लिए, और उद्धार के सुसमाचार का प्रचार करने के द्वारा सारे संसार में इन्हें बढ़ावा देने के लिए बुलाया गया है।

मसीह के उदाहरण का अनुसरण करते हुए, कलीसिया को प्रेम, शान्ति, और न्याय के लिए कार्य करना आवश्यक है चाहे इसके लिए कोई भी कीमत चुकानी पड़े (यशायाह 11:1–5; 61:1–3; लूका 4:13, 19)। शोषित लोगों की पुकार को सुन पाने और उन्हें न्याय दिलाने के लिए उनके साथ खड़े होने के द्वारा कलीसिया को तरस का प्रदर्शन करना आवश्यक है। यह सिर्फ परमेश्वर ही है जो अपने साथ हमारा मेलमिलाप क्रूस पर मसीह के बलिदान, जो मेलमिलाप का केन्द्रबिन्दु है, के द्वारा करता है।

मनुष्यों के बीच में मेलमिलाप की जड़ मसीह में पाई जाती है जो संसार का मेल (इफिसियों 2:24–17) और सारी मानवता की एकता का स्त्रोत है (यूहन्ना 17:11,22,23)।

मेलमिलाप न सिर्फ व्यक्तिगत स्तर पर, परन्तु जातिगत और गोत्रिय स्तर पर, और कलीसियाई स्तर पर भी झगड़ों के समाधान का मार्ग है।

व्यक्तिगत स्तर पर विवादों का समाधान

परमेश्वर का वचन हमें यह शिक्षा देता है कि विवादों के समाधान का सबसे उत्तम उपाय यह है कि व्यक्तिगत स्तर पर इसका समाधान किया जाए। इसमें परमेश्वर के सामने अपने सारे पापों का अंगीकार (1 यूहन्ना 1:9–10; भजन 139:23–24) और क्षमा मांगने या उसी गलती को न दोहराने के निर्णय (इफिसियों 4:32; याकूब 5:16) के प्रति संकल्प शामिल हैं।

सुसमाचारों में हमारे लिए इस प्रक्रिया को सामने रखा गया है:

- परमेश्वर से गम्भीरता के साथ प्रार्थना करें और उससे क्षमा मांगे;
- दूसरे व्यक्ति के साथ अकेले में बातचीत करें;
- उस व्यक्ति से दो या तीन अन्य व्यक्तियों की उपस्थिति में बात करें;
- अन्य व्यक्ति के साथ कलीसिया की उपस्थिति में बात करें (मत्ती 18:15–17)।

विवादों के समाधान के लिए परमेश्वर के प्रति आदर और दूसरे व्यक्ति के प्रति प्रेम का भाव रखना आवश्यक है (भजन 34:15)। हमें हमेशा ईश्वरीय सहायता मांगना चाहिए और बुद्धि, संयम, और कोमल भाषा के लिए प्रार्थना करना चाहिए (नीति. 16:32; याकूब 1:5)।

इसके अतिरिक्त, हमें अच्छे सम्प्रेषण के नियमों का भी पालन करना चाहिए: दूसरे व्यक्ति की बात सुनें, सत्य को सामने रखें, सुहावने ढंग से और प्रेम से अपनी बात कहें, अपनी बातों को स्पष्ट रूप से व्यक्त करें और पूरी खराई से बात कहें जिससे परमेश्वर की महिमा और उस दूसरे व्यक्ति का भला हो। इस अच्छे सम्प्रेषण का उद्देश्य उन समस्याओं का समाधान करना है जिनके कारण झगड़े उत्पन्न हुए। बातचीत के अन्त में प्रार्थना करें और भाईचारे या भले शब्द बोल कर आपस में विदा लें (याकूब 3:13–18)।

जातिगत, गोत्रिय, और नस्लीय स्तर पर विवादों का समाधान

जातिगत, गोत्रिय, और नस्लीय विवाद और संघर्ष कलीसिया के लिए एक शर्म का विषय है। हमारी चुप्पी इस हद तक मौन सहमति प्रतीत होती है कि बुद्धिमान विचारक कलीसिया पर इस प्रकार के विवादों, जैसे नस्लवाद व गलाम बाजार का इतिहास और परम्परा, होलोकास्ट, नस्लवाद, जातिगत शुद्धता, मूल निवासियों के साथ भेदभाव, अन्तर्धार्मिक/राजनैतिक/जातिगत हिंसा, पलिस्तीनियों की पीड़ा, जातीय आधार पर शोषण, और जनजातियों का नरसंहार को उत्पन्न करने या इसके भागी होने का दोष लगा रहे हैं।

ऐसी परिस्थिति के मध्य, मैं पासबानों, कलीसिया के अगुवों, और सभी पाठकों का आव्हान करता हूँ कि जातिगत विविधता से सम्बन्धित बाइबल की सच्चाइयों पर शिक्षा दें, परन्तु साथ ही इन जातीय समूहों में प्रचलित पाप की धारणा को भी मान्यता दें।

Pennsylvania
2015

मसीह में, हमारी सारी जातिगत पहचान क्रूस पर मोल लिए हुओं के रूप में हमारी पहचान के आधीन है। व्यावहारिक भाषा में, कलीसिया को निम्नलिखित कार्य करना आवश्यक है:

- *निपटारा और मेलमिलाप को प्राथमिकता देना:* आक्रमण किए जाने पर आत्म–रक्षा की जा सकती है, परन्तु हिंसा का प्रयोग नहीं। यीशु के आदर्श का अनुसरण करते हुए, जिसने धमकी दिए जाने पर हथियारों का प्रयोग नहीं किया, कलीसिया को अपने स्वामी के पदचिन्हों पर चलना आवश्यक है। कलीसिया को अपने शत्रुओं की चिन्ता करना चाहिए जैसा कि नेक सामरी के दृष्टान्त में सिखाया गया है, और अहिंसा को मेलमिलाप के दरवाजे के रूप में अपनाना चाहिए।
- *न्याय को बढ़ावा देना* संसार में जातिगत और धार्मिक झगड़ों को कम करने का एक महत्वपूर्ण तरीका है। ऐसा करने के लिए, कलीसिया को अन्याय, जातिकेन्द्रियता, नस्लवाद और शोषण के विरुद्ध खड़े हो कर गहराई तक शामिल होना आवश्यक है। कलीसिया को मेलमिलाप की सेवकाई में शामिल होना और शोषित के साथ खड़े हो कर, उनके न्याय के लिए कार्य करना आवश्यक है।
- *एक समावेशी कलीसिया विकसित करना:* कलीसिया एक ऐसा स्थान नहीं है जहाँ जाति के आधार पर विभाजन और नस्ल के आधार पर भेदभाव दिखाई दें; बल्कि यह एक ऐसा स्थान हो जहाँ सब लोगों को आने का न्यौता हो और सब लोग सहभागिता में शामिल किए जाएं। अगुवों का चुनाव करते समय जाति या नस्ल को आत्मिकता पर प्राथमिकता नहीं चाहिए। कलीसिया का कोई कार्यक्रम किसी विशेष जाति या वर्ग को बढ़ावा देना वाला न हो। कलीसिया के अस्तित्व का आधार ''अनेकता में एकता'' में है, जहाँ सभी सदस्य मसीह में एक हैं, जैसा कि गलातियों 3:28 में शिक्षा दी गई है। कलीसिया एक नया जन–समूह है जहाँ हर एक के लिए परस्पर सुरक्षा पाई जाती है।
- *राजनीति में हमारी दखल और सार्वजनिक सम्पत्ति के प्रबन्धन के प्रति हमारा रुख मसीही सिद्धान्तों के अनुरुप हो:* राजनैतिक मत जातीय, गोत्रिय, या नस्लीय पूर्वाग्रहों के आधार पर नहीं, बल्कि मसीही सिद्धान्तों के अनुरुप निर्धारित किए जाएं। जो मसीही लोग राजनीति में हैं उन्हें प्रत्येक व्यक्ति के साथ सही व्यवहार करना चाहिए और राजनैतिक व धार्मिक विचारधारों पर आधारित पूर्वाग्रहों से दूर रहना चाहिए। राजनैतिज्ञों को जाति के आधार पर पक्षपात करने और धार्मिक कट्टरता से दूर रहना चाहिए, जो अक्सर घृणा उत्पन्न करते हैं।
- *शत्रुओं के साथ प्रेम और क्षमा का व्यवहार करें:* शत्रुओं के लिए प्रार्थना करना यीशु मसीह के प्रति आज्ञाकारिता और समर्पण का चिन्ह है। हमें दूसरों से प्रेम रखना चाहिए क्योंकि वे परमेश्वर के स्वरूप और उसकी समानता में सृजे गए हैं (उत्प. 9:6; याकूब 3:9)। क्षमा करना अक्सर बहुत कठिन प्रतीत होता है, विशेष रूप से तब जब हम न्याय, बैर, और शोषण से पीड़ित हों। परन्तु हमें परमेश्वर के वचन का पालन करने के लिए तैयार रहना चाहिए।

कलीसिया में विवाद का समाधान

मेलमिलाप के ओर चलने के लिए कलीसिया को आवश्यक है कि वह पवित्रशास्त्र में इस विषय पर दिए गए सिद्धान्तों का पालन करे और अपने जीवन के द्वारा संसार के सामने इन सिद्धान्तों की रक्षा करे। यह आवश्यक है कि कलीसिया बाइबल की शिक्षाओं पर भरोसा करने के द्वारा पारदर्शिता प्रदर्शित करे। यह आवश्यक है कि कलीसिया परमेश्वर की ओर से आने वाली सहायता पर निर्भर रहे ताकि अधिक असरकारक ढंग से विवादों का समाधान कर सके। यह आवश्यक है कि कलीसिया बाइबल में पाए जाने वाले कानून और न्याय सम्बन्धी स्थलों के प्रति सम्मान में कमी न लाए।

यह आवश्यक है कि कलीसिया पक्षपात न करे। इस संसार में परमेश्वर की प्रवक्ता के रूप में, यह निम्नलिखित बातों के प्रति सचेत और सक्रिय रहे:

- स्वयं को परमेश्वर की इच्छा, आज्ञाओं, और नियमों से बान्धे रहे और संसार को इन बातों के विषय में बताए।
- कलीसिया और संसार की समस्याओं की सहीं प्रवृत्ति की पहचान इसके पास के और दूर के कारणों, अभिप्रायों, स्त्रोतों, और आरम्भ का गहराई से अध्ययन करने के द्वारा करें, ताकि निष्पक्षता के साथ एक समाधान सुझाया जा सके।
- शान्तिपूर्ण हल ढूंढ़े और किसी को बाहर करने या हाशिए पर डाल देने की पापमय राजनीति के विरुद्ध खड़े हों। कलीसिया को ऐसी राजनैतिक व्यवस्थाओं को प्राथमिकता देना चाहिए जो एकता और मेलमिलाप को बढ़ावा देती हैं।

सृष्टि के साथ लोगों का मेलमिलाप

हमें ऐसे लोग बनना आवश्यक है जो सृष्टि की चिन्ता करते हैं क्योंकि मेल की योजना में सृष्टि को भी शामिल किया गया है। मानव जीवन और सृष्टि दोनों एक दूसरे से जुड़े हुए हैं क्योंकि पृथ्वी हमारी चिन्ता करती है (उत्प. 1:29–30); पृथ्वी मानवजाति के पापों के कारण हमारे साथ कष्ट सहती है क्योंकि इन पापों ने बहुत भयानक परिणाम उत्पन्न किए हैं (होशे 4:1–3); परमेश्वर द्वारा दिए जाने वाले छुटकारे में सृष्टि का छुटकारा भी शामिल है (भजन 96:10–13); क्रूस पर हर एक वस्तु का मेलमिलाप किया गया (कुलुस्सियों 1:15–23); और सुसमाचार सारी सृष्टि के लिए है।

इन बातों के प्रकाश में, सामान्य रूप से कलीसिया और विशेष रूप से मसीही लोगों को सृष्टि को बचाने के प्रयास में अग्रिम पंक्ति में रहना आवश्यक है। हमारे भीतर यह तीव्र इच्छा हो कि हम एक हरे भरे ग्रह में निवास करें और इसके लिए हमें उर्जा की बर्बादी रोकने, कार्बन के प्रयोग में कमी लाने, अपने पर्यावरण को दोबारा उसकी मूल अवस्था में लौटाने, और प्रदूषण रोकने की आवश्यकता है।

इसी क्रम में, हमें हर एक ऐसे राजनैतिक और आर्थिक पहल का सहयोग करना है जो हर प्रकार के विनाश से पर्यावरण की रक्षा के लिए किए जाते हैं। इसलिए हमें अपने मध्य के उन लोगों का सहयोग करना है जिन्हें परमेश्वर पर्यावरण की रक्षा करने, और परिस्थितिविज्ञान और प्रकृति संरक्षण के क्षेत्रों में वैज्ञानिक शोध करने को विशेष रूप से भेजा है।

उपसंहार

संसार भर में लगातार हो रही हिंसा का समाधान करने के लिए विभिन्न तरीकों से हिंसा का प्रयोग किया जा रहा है। परन्तु इतिहास यह प्रमाणित करता है कि ये तरीके संसार की समस्याओं का समाधान करने में सफल सिद्ध नहीं हुए। हिंसा का मार्ग विवादों के शान्तिपूर्ण निवारण की बजाए बैर, क्रोध, और बदला को बढ़ावा देता है।

वास्तव में, अहिंसा ही विवादों का अचूक समाधान है। विवादों से सामना होने पर मसीह ने अहिंसा का मार्ग अपनाया। वह हमारे सामने आदर्श रखता है जिसका पालन हमें विवादों और झगड़ों का निपटारा करने के लिए करना चाहिए।

विवादों और झगड़ों का निवारण करने के अहिंसा के आदर्श, जिसे हमने अबीगैल की कहानी से सीखा, में यह अर्थ निहित नहीं है कि हमें अपनी रक्षा किए बिना चुपचाप अन्याय और आक्रमण को सह लेना है। इसका अर्थ है कि हमें झगड़ों का समाधान बलप्रयोग के माध्यम से नहीं करना है।

कलीसिया को सक्रिय हो कर धर्म और जाति के आधार पर होने वाले झगड़ों का प्रतिरोध करना आवश्यक है। शत्रु के साथ प्रेम का व्यवहार करने और बल या हिंसा का प्रयोग न करने की प्रतिबद्धता ही झगड़ों के सामने टिक सकती है और शत्रु के साथ शान्तिपूर्ण सम्बन्धों में प्रवेश कर सकती है। यह अन्यायपूर्ण व्यवस्थाओं को समाप्त करता है और इनके स्थान पर भलाई की व्यवस्थाओं को स्थापित करता है जिनका केन्द्र परमेश्वर है।

जातिगत विविधता सृष्टि में परमेश्वर की योजना और वरदान है। इसे मानव के पाप और अहंकार के द्वारा दूषित कर दिया गया है जिससे गड़बड़ी, झगड़े, हिंसा, और राष्ट्रों के बीच में लड़ाइयाँ उत्पन्न होती है।

किन्तु, यह भिन्नता एक नई सृष्टि के रूप में संरक्षित की जाएगी जब हर जाति, हर गोत्र, हर जनसमूह, और हर भाषा के लोग फिर से एक हो जाएंगे क्योंकि वे इस तरह से एक साथ मिलकर एक ऐसे लोग बनेंगे जिन्हें परमेश्वर ने छुटकारा दिया है।

सुसमाचार की दोहाई देते हुए, मैं मसीही की देह से सामूहिक और व्यक्तिगत रूप से यह निवदेन करता हूँ कि जिन जिन स्थानों में हम ने हिंसा, अन्याय, और जाति आधारित शोषण में हिस्सा लिया है हम मन फिरा कर क्षमा मांगे।

आज, कलीसिया के लिए यह आवश्यक है कि सुसमाचार में पाई जाने वाली मेलमिलाप की बड़ी सामर्थ को अपनाए, और उसके विषय में सीखे, क्योंकि मसीह ने हमारे पापों को क्रूस पर न सिर्फ इसलिए उठाया था कि परमेश्वर के साथ हमारा मेलमिलाप हो, परन्तु इसलिए भी कि एक दूसरे के साथ हमारा मेलमिलाप हो।

आइये हम अपने सतानेवालों को क्षमा करने और उनके द्वारा दूसरों पर किए जाने वाले अन्याय को सामने लाने का साहस करने के द्वारा मेलमिलाप की शैली के जीवन को अपनाएं। मेलमिलाप को पूरा करने के लिए रूकावटों को पार करने की पहल करने के द्वारा अपने विरोधी पक्ष की सहायता और पहुनाई करने की इच्छा प्रगट करें। आइये हम हिंसा के वातावरण में लगातार मसीह की गवाही देते रहें, नाश करने या पलटा लेने के कार्य में शामिल होने के बदले सहने के लिए यहाँ तक कि मर जाने के लिए भी तैयार रहें। आइये हम घावों को चंगा करने, कलीसिया को हमारे पुराने शत्रुओं समेत सब के लिए चंगाई का एक स्थान बनाने की एक लम्बी प्रक्रिया को पूरी करने को जुट जाएं।

यह आवश्यक है कि हम एक चमकदार प्रकाश और आशा का एक स्त्रोत बने। हमें यह गवाही सामने रखना आवश्यक है: ''परमेश्वर ने मसीह में हो कर अपने साथ संसार का मेलमिलाप कर लिया।'' क्रूस और मसीह का पुनरुत्थान हमें यह अधिकार देता है कि हम बुराई की दुष्ट शक्तियों का सामना करें जो मानवीय झगड़ों की पीड़ा को बढ़ाती है।

नैन्सी आर. हेयसीइस्टर्न मेनोनाइट यूनिवर्सिटी में बिब्लिकल एण्ड चर्च हिस्ट्री की शिक्षिका हैं। वे 2003– 2009 तक एमडबल्यूसी की अध्यक्षा रहीं।

पीस कमीशन

ज्योति की सन्तान

1 थिस्सलुनीकियों 5

1 थिस्सलुनीकियों 5 को सामान्यत: कलीसियाई विवाद के विषय पर शिक्षा के आधार स्थल के रूप में प्रयोग में नहीं लाया जाता। इस आरम्भिक पत्री को लिखने का उद्देश्य यीशु के विश्वासियों के मध्य विवाद पर प्रतिक्रिया देना नहीं था। तौभी अन्त के दिनों से सम्बन्धित सारी बातों के बीच में पौलुस की सारभूत धारणाओं में इस बात का महत्व भी शामिल था कि किस तरह से विश्वासियों को अपना दैनिक जीवन व्यतीत करना चाहिए।

पौलुस के लिए, ''ज्योति की सन्तान'' अन्धकार की शक्तियों (लोग नहीं बल्कि शक्तियाँ) के मध्य विद्यमान समुदाय का एक नाम है।

यीशु के अनुयायी प्रभु के दिन की बाट पूरे विश्वास के साथ जोह सकते हैं। हम जानते हैं कि समय अन्धकारमय है। किन्तु, पौलुस ने परमेश्वर द्वारा स्वयं हथियारों को पहनने का नहीं, बल्कि परमेश्वर के लोगों द्वारा हथियार पहने जाने का वर्णन किया है: यीशु के अनुयायियों के द्वारा पहनी जाने वाली चीज़ 1 कुरिन्थियों 13 में दिए गए गुणों के समान प्रतीत होती है: ''विश्वास और प्रेम की झिलम पहिनकर और उद्धार की आशा का टोप पहिनकर'' (पद 8)।

समय आ चुका है कि यीशु के अनुयायी वहाँ पाए जाएं जहाँ हिंसा और अन्याय अन्धकार का भय व्याप्त है। कलीसिया में हमारे बगल में बैठने वालों के लिए हमें उपलब्ध होना है जो कार्य की अधिकता, अति मनोरंजन, या पेटूपन के मध्य परमेश्वर को अधिक गहराई से अनुभव करने के भूखे हैं।

पौलुस का परामर्श बहुत सरल प्रतीत होता है: ''इस कारण एक दूसरे को शान्ति दो और एक दूसरे की उन्नति का कारण बनो'' (पद 11)।

विश्वास के घराने के सदस्यों के लिए एमडबल्यूसी का एक बुनियादी उद्देश्य यह रहा है कि हम एक दूसरे की उन्नति का कारण बनें। अधिकांश अवसरों पर, हम यह कार्य अच्छी तरह से नहीं कर पाए हैं। तौभी मसीही पूर्वजों के इतिहास में इन शताब्दियों में, एक दूसरे की उन्नति का कारण बनने की गवाहियाँ संस्थागत समस्याओं की चादर में सोने के तागों के समान गुथे हुए है। उदाहरण के लिए, दास प्रथा के एक प्रबल विरोधी, क्वेकर जॉन वुलमान ने, अपने उन क्वेकर साथियों के मध्य, जो दास (गुलाम) रखा करते थे, वर्षों तक कार्य करते हुए उनसे आग्रह किया कि वे अपने दासों को मुक्त कर दें।

पौलुस प्रेरित हमें यह बताता है कि हम जानते हैं कि यह समय क्या करने का है: प्रभु यीशु मसीह में परमेश्वर के लोगों के लिए यह समय है कि वे हमारे जगत में ज्योति की सन्तान बनें। अन्त के दिनों के सम्बन्ध में उसके वचनों का उद्देश्य भय, हिंसा, या विभाजन को जन्म देना नहीं, और न हमारे दैनिक जीवन में हमें मसीह के समान जीवन व्यतीत करने से दूर खींच लेना है। वह चाहता है कि उसकी सारी कलीसिया वह सारा कार्य करे जो वह कर रहा है: एक दूसरे की उन्नति का कारण बनें।

यंग ऐनाबैपटिस्ट (वाएबी)

जीवित परमेश्वर की सेना के सिपाही

इफिसियों 4:1–7

जब हम अलग अलग शैली में परमेश्वर की आराधना करते हैं, तब वह अवश्य ही मुस्कुराता होगा जब वह अपनी सन्तानों द्वारा की जाने वाली उस आराधना की मधुर सुगन्ध का, जो उसके सिंहासन तक पहुँचती है, आनन्द लेता है।

इसलिए, मेरे मन में यह विचार आता है: क्या परमेश्वर विलाप करता होगा जब ये ही सन्तान मेल में हो कर एक साथ नहीं चल पाते? परमेश्वर क्या सोचता होगा जब वह हमें विवादों में देखता है और जब हम मेलमिलाप करने में कठिनाई महसूस करते हैं, और अक्सर अलग हो जाने का निर्णय ले लेते हैं?

वर्तमान में अनेक मसीही सिपाही की तरह नहीं, परन्तु बच्चों की तरह व्यवहार करते हैं। कलीसियाओं की स्थापना करते हुए बढ़ते जाने की बजाए, वे बंट जाने के द्वारा फैलते जा रहे हैं, और ऐसी कलीसियाओं का रूप लेते जा रहे हैं जो किसी अन्य कलीसिया से अलग हो कर अस्तित्व में आई हो।

मसीह की देह को क्या हो गया है जो एक ही आशा, एक ही

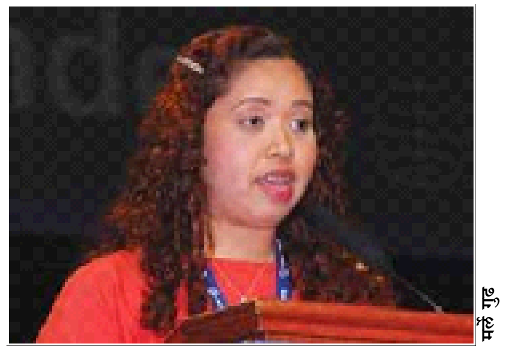

रेमिलिन जी. मोन्डेज़ अंग्रेजी की एक सहायक प्राध्यापिका हैं और कम्युनिकेशन में डॉक्टरेट कर रहीं हैं। उन्होंने मेनोनाइट सेन्ट्रल कमेटी के आइवेप कार्यक्रम में 2004 में भाग लिया था और वे पैरागुवे 2009 में एमडबल्यूसी के ग्लोबल यूथ समिट में फिलिप्पिन्स की ओर से प्रतिनिधि हैं।

प्रभु, एक ही विश्वास, और एक ही बपतिस्मा की सच्चाई पर एक हो खड़ी होती है, जो एक ही परमेश्वर और सब के पिता की आराधना और सेवा करती है? मेल के बन्धन से एकता की आत्मा में बन्धे रहने के यत्न का क्या हुआ?

कलीसिया को उस नींव पर से अपनी पकड़ ढीली नहीं करना चाहिए जिस पर इसका निर्माण किया गया है (1 कुरिन्थियों 3:11)। जब तक कलीसिया यीशु मसीह और उद्धार देने की उसकी सामर्थ के सुसमाचार के प्रचार की ओर वापस नहीं जाती, तब तक यह विवादों और पीड़ाओं में सामर्थहीन हो कर पड़ी रहेगी।

मसीह के सिपाहियों! कलीसिया की युद्ध की उस पुकार की ध्वनि गूंज जाने दो कि मसीह ने छुटकारा दे दिया है: कलीसिया ने अनुग्रह से विश्वास के द्वारा उद्धार पाया है, कामों के द्वारा नहीं; कलीसिया, स्वयं के कार्यक्रमों को बढ़ावा दे कर नहीं, बल्कि, उद्धारकर्ता के साथ सम्बन्ध को आधार बना कर आगे बढ़ती है।

मैं कलीसिया के उन अगुवों से निवेदन करता हूँ जो कलीसिया की लड़ाइयों में अग्रिम पंक्ति में खड़े हैं। हम इन लड़ाइयों को नहीं जीत सकते यदि हम स्वयं की योजनाओं को लेकर अड़े रहें, यीशु पर अपनी आँखों को केन्द्रित करना भूल जाएं और परमेश्वर के सारे हथियारों को डाल दें क्योंकि हम बहुत थक चुके हैं।

जो लोग कलीसिया की लड़ाइयों में बीच में फँस चुके हैं, आप जान लें कि परमेश्वर का प्रेम अटल है, वह हमारा पोषण कर रहा है, और लगातार अपने काम में डटा हुआ है। यीशु मसीह द्वारा क्रूस पर पूर्ण किए गए कार्य को हमेशा ध्यान में रखें। उसने हमारे पापों और विवादित मुद्दों पर पहले से ही विजय हासिल कर लिया है। आइये हम अपनी आँखें यीशु की ओर लगाए रहें, जिसकी ओर से हम चंगाई प्राप्त कर सकते। निडर और वीर सिपाही बन कर विश्वास की अच्छी कुश्ती लड़ें।

मोनिका फिगुरोवा

काज़ूटोमा रे एप्प

एक साथ मिल कर स्वतंत्र कैसे रहें

वेइटके वान डेर मोलन

नीदरलैण्ड के वेइटके वान डेर मोलन ने शुक्रवार, 24 जुलाई 2015 की संध्या 16वें सम्मेलन को सम्बोधित किया है। वेइटके उत्तर एम्सटर्डम के ग्रामीण क्षेत्र की एक छोटी कलीसिया के पासबान हैं, और उन्हें कहानी पढ़ना और सुनाना पसन्द है।

उत्पत्ति 32:23–32

आदि में, मनुष्य अकेला था। यद्यपि परमेश्वर ने सब पशुओं की सृष्टि की और उन्हें आदम के पास लाया कि वह उनका नाम रखे, मनुष्य अकेला था। और अकेला रहना उसके लिए अच्छा नहीं था। परमेश्वर यह समझ सकता था, और इसलिए उसने मनुष्य को गहरी नीन्द में डाल दिया और जब वह सो गया, तो परमेश्वर ने उसकी पसली निकाल कर उससे मनुष्य का दूसरा भाग – स्त्री – बनाया।

उस दिन से लेकर अब तक मानवजाति एक समुदाय के रूप में है।

जिस दिन हम जन्म लेते हैं, उस दिन से ही हम एक समुदाय का हिस्सा बन जाते हैं। चाहे यह समुदाय हमारे परिवार के रूप में हो, गोत्र के रूप में, अनाथालय के रूप में, या फिर स्कूल के रूप में हो।हम कभी अकेले नहीं रहते। समुदाय हमारा पोषण करता है, हमें स्वच्छ रखता है, गलत और सहीं के बीच अन्तर करना सिखाता है, और हमें बढाता है।

हम जितने मजबूत हैं, यह हमें उससे भी अधिक मजबूत कर देता है, क्योंकि समुदाय में हम एक व्यक्ति नहीं, बल्कि इससे अधिक होते हैं। हम बहुत से लोग हैं। हम जितने कमजोर है, यह हमें उससे भी अधिक कमजोर बना देता है, क्योंकि हमें अपनी इच्छा को समुदाय के नियमों के अनुसार झुका कर अपनी व्यक्तिगत स्वतंत्रता को त्यागना पड़ता है।

एक समुदाय में, हम अकेले खड़े नहीं हो सकते। समूह के हित से व्यक्ति के हित का टकराव होता है। और इससे फूट और पीड़ा और हताशा उत्पन्न होती है। परन्तु हमारे पास कोई दूसरा विकल्प नहीं है। मनुष्य होने का अर्थ है, समुदाय का एक हिस्सा होना। हम अकेले अपने आप में जीवित नहीं रह सकते।

तौभी हम, हम अपनी व्यक्तिगत स्वतंत्रता पर दावा जताते हैं, हम में से प्रत्येक ऐसा करता है। जैसे जैसे हम बड़े होते जाते हैं, हम अपने समुदायों के नियमों और सीमाओं को परखते जाते हैं। इसका उदाहरण हम चलना सीख रहे एक बच्चे में देख सकते हैं जिस को जब हम कहीं जाने से रोकते हैं, तब वह हमारे ‘‘नहीं’’ को ढकेलते हुए यह देखना चाहता है कि यह ‘‘नहीं’’ कहाँ तक जाता है। इसका उदाहरण हम विद्रोही युवा व्यस्कों में देख सकते हैं, जो जीवन में अपनी इच्छा के अनुसार चलने की योजना बनाते हैं, और अपना निर्णय स्वयं लेते हैं। और जी हाँ, व्यक्तिगत स्वतंत्रता का शब्दश: अर्थ होता है, अपने नियम स्वयं बनाना। परन्तु इसकी आधुनिक व्याख्या स्वतंत्र रहते हुए अपने जीवन में अपना मार्ग स्वयं तैयार करने पर जोर देती है।

हम स्वयं से सम्बन्धित हर एक बात में अपनी बात पर जोर देना चाहते हैं, हम अपने निर्णय स्वयं लेना चाहते हैं, ताकि हम अपना सर्वोत्तम कर सकें। इस आधुनिक समय में, हम अपनी व्यक्तिगत स्वतंत्रता पर घमण्ड करते हैं, अपने पक्ष में किए गए अपने प्रयास पर, स्वयं के बनाए नियमों का पालन करने पर, और उनके बचाव के लिए खड़े होकर हमें गर्व महसूस होता है।

समुदाय के विरुद्ध संघर्ष

वास्तव में व्यक्तिगत स्वतंत्रता कोई पक्ष होता ही नहीं। बल्कि, यह एक सतत् संघर्ष है। हमेशा से ही ऐसा चलता आया है, पुराना नियम समय में भी, इसहाक के पुत्र, इब्राहीम के पुत्र, याकूब की चिरपरिचित कहानी इसका एक उदाहरण है।

जन्म के पहले से ही, याकूब समुदाय का हिस्सा था। और अजन्में बच्चे के रूप में भी समुदाय के साथ वह ठीक से चल नहीं पाया। वह और उसका जुड़वा भाई दोनों अपनी माता के गर्भ में ऐसे लड़ने लगे कि उनकी माता रिबका यह सोचने लगी कि वह जीवित क्यों है। जब उसका जन्म हुआ, वह अपने बड़े भाई की एड़ी पकड़े हुए बाहर आया।

याकूब के संस्करण में, याकूब पहले आता है। हमेशा। वह सिर्फ अपने नियमों का पालन करता था। और वह समुदाय को अपने नियम के आगे झुकाता था।

बहुत सरलता से, एक समय के गर्मागर्म भोजन को ही कीमत के रूप में चुकाकर उसने अपने भाई एसाव को पहिलौठे के अधिकार से वंचित कर दिया। इसके बाद, याकूब ने अपने पिता इसहाक को धोखा दिया। याकूब, जो बुढ़ापे के कारण देख नहीं सकता था, अपनी मृत्युशैय्या पर पड़े हुए, एसाव के लिए ठहरा हुआ था कि वह उसे उसका आशीर्वाद दे। तभी वहाँ याकूब आया, और वह एसाव होने का अभिनय करने लगा। उसने निष्ठुरता के साथ पिता की ओर से दी जाने वाली आशीष को छीन लिया।

याकूब के पास अब वह सब कुछ था जिस पर एसाव को अधिकार था। वह सब कुछ जीत चुका था, और साथ ही साथ, वह सब कुछ हार चुका था। क्योंकि अब वह उस समुदाय में नहीं रह सकता था जिसे उसने इतना तुच्छ जाना था। उसे अपनी जान बचाने के लिए भागना पड़ा।

अपने बनाए हुए नियमों के अनुसार चलते हुए समुदाय में सहजता से जीवन बिता पाना सम्भव नहीं है।

अपना निर्णय स्वयं लिया

अपराध स्थल से भागते हुए, याकूब ने अपना सब कुछ छोड़ दिया। या वह ऐसा सोच रहा था। परन्तु महाअज्ञात में प्रवेश करने से ठीक पहले, उसने एक स्वप्न देखा। इस स्वप्न में, परमेश्वर ने याकूब से यह प्रतिज्ञा किया कि वह जहाँ जहाँ जाएगा, परमेश्वर भी उसके साथ साथ जाएगा। परमेश्वर उसकी रक्षा करेगा, परमेश्वर उसे लौटा लाएगा, परमेश्वर याकूब को तब तक नहीं छोड़ेगा जब तक परमेश्वर अपनी प्रतिज्ञा पूरी न कर ले।

उसके स्वाभाव के अनुरुप ही, याकूब को निश्चय नहीं था। उसने उस स्थान का नाम *बेतेल*, अर्थात्, परमेश्वर का घर रखा, परन्तु तुरन्त ही उसने मोलभाव करना आरम्भ कर दिया। *यदि परमेश्वर सचमुच मेरे साथ रहेगा, यदि परमेश्वर सचमुच मेरी रक्षा करेगा, यदि परमेश्वर सचमुच में मेरे लिए प्रबन्ध करेगा, तो फिर ठीक है, यदि उसने यह सब किया तो फिर वह मेरा परमेश्वर होगा।*

याकूब ने सरलता से हार नहीं माना। यह तो हद हो गई। यदि परमेश्वर उसके साथ बना रहना चाहता है, तो ठीक है। परन्तु याकूब अपने निर्णय स्वयं ले रहा था। क्या व्यक्तिगत स्वतंत्रता इसी को नहीं कहते?

और यह कहानी आगे बढ़ती है। राहेल के प्रति याकूब के प्रेम के विषय हर कोई जानता है। परन्तु राहेल की बड़ी बहन लिया के विवाह से पहले राहेल से विवाह करने का प्रयास करने के द्वारा याकूब एक बार फिर से समुदाय को अपने बनाए नियमों के आगे झुकाना चाहता है। परन्तु लाबान की चाल के आगे वह टिक न सका और अन्त में चार चार स्त्रियाँ उसके मत्थे चढ़ गईं।

बीस वर्षों के कठिन परिश्रम के बाद, परमेश्वर ने याकूब को कनान वापस बुलाया। याकूब ने अपनी पत्नियों, बच्चों (उस समय 11 पुत्र और एक पुत्री), और अपने द्वारा एकत्रित किए गए पशुओं को लिया, और जब लाबान अपनी भेड़ों के ऊन कतरने में व्यस्त था तो वह सब को साथ लेकर चुपचाप वहाँ से भाग निकला।

पुन:, याकूब अपने निर्णय स्वयं ले रहा है और उसके निर्णयों से दूसरों पर होने वाले असर की परवाह नहीं कर रहा है। वह अपने बनाए नियमों, अपनी आंशकाओं, और अपनी धारणाओं के अनुरुप जीवन व्यतीत करता है। अपनी पत्नियों और बच्चों को लेकर चुपचाप भागने के द्वारा, उसने इस तथ्य को अनदेखा कर दिया कि वे लाबान के जीवन का भी एक हिस्सा हैं: वे उसकी पुत्रियाँ, उसके नाती पोते, और उसका भविष्य हैं।

यह सच है, कि एक स्वतंत्र व्यक्ति के रूप में यह उसका अधिकार है। वह अपने नियमों के अनुसार चलता है। वह समुदाय की कोई परवाह नहीं करता।

सब कुछ दे देने का प्रस्ताव

आश्चर्यजनक रूप से, घर की दहलीज पर, तेन्दुए ने अपने धब्बे बदल लिए। याकूब यह समझ गया कि एसाव शायद घर पर उसका स्वागत शायद खुशी खुशी न करे, क्योंकि याकूब ने उसके साथ छल किया था। याकूब मेल करने का प्रयास करता है, और अपने आगे अपने सन्देशवाहों को भेजता है। परन्तु वे लौट आते हैं, और यह बताते हैं कि एसाव कम से 400 लोगों के साथ आ रहा है। याकूब (अब तनाव में आ जाता है, वह चिन्तित और भयभीत हो जाता है) का सामना अब उसके द्वारा लिए गए पिछले निर्णयों के परिणाम से हो रहा है: क्या एसाव सब कुछ उससे छीन लेगा: पत्नियाँ, बच्चे, पशु, धन? क्या एसाव बदला लेना चाहेगा या क्षतिपूर्ति की मांग रखेगा?

क्या समुदाय भी वैसा ही व्यवहार करेगा जैसा कि स्वतंत्र व्यक्ति ने किया?

और इसलिए, याकूब ने एक बड़ा निर्णय लिया: उसने एसाव के सामने यह प्रस्ताव रखा कि वह उसका सब कुछ रख ले। ऐसा करने के द्वारा वह अपने गलत कामों को सुधारने का प्रयास करता है। वह अपने गलत कामों को मान लेता है, और उन परिणामों पर पछतावा महसूस करता है जो उसके निर्णयों के कारण एसाव को झेलना पड़ा।

अपने बनाए हुए नियमों के अनुसार चलते हुए समुदाय में सहजता से जीवन बिता पाना सम्भव नहीं है।

उसकी व्यक्तिगत स्वतंत्रता ने जो कुछ हासिल किया था, उसे एसाव को दे देने का प्रस्ताव रखने के द्वारा याकूब वास्तव में एसाव को अपनी व्यक्तिगत स्वतंत्रता दे देने का प्रस्ताव रख रहा था।

और इस तरह से अब, हमारे सामने वह महादृश्य आता है, जिसमें याकूब अपनी पत्नियों और बच्चों, और जो कुछ उसके पास था, सब कुछ नदी की दूसरी ओर ले लाता है, और उन्हें वहाँ छोड़कर फिर लौट जाता है। अब वह, पूरी तरह से और सचमुच में अकेला है। उसके पास कुछ भी नहीं बचा। उसकी व्यक्तिगत स्वतंत्रता भी नहीं।

और तब कोई पुरुष आकर उससे मल्लयुद्ध करने लगता है। रात भर। कोई पुरुष। कोई नाम नहीं। कोई पहचान नहीं, सिवाय कि इस प्रत्युत्तर के कि *तू मेरा नाम क्यों पूछता है?* (32:29)। क्या यह स्वयं परमेश्वर था? परमेश्वर का कोई दूत? या फिर हमें इन सारी बातों को एक प्रतीकात्मक अर्थ में समझना है? क्या याकूब स्वयं से मल्लयुद्ध कर रहा था?

हो सकता है। आखिर, याकूब का जीवन उसके चारो ओर के लोगों, उनके नियमों, उनकी अपेक्षाओं, स्वयं याकूब और उसके निर्णयों, और उसके अपने तरीकों के विरुद्ध एक बड़ा संघर्ष था। शायद अन्त में, वह परमेश्वर से मल्लयुद्ध कर रहा है। या फिर अपने आप से। या किसी अन्य प्रतीकात्मक व्यक्ति से। यह सब महत्व नहीं रखता।

महत्व यह रखता है कि वह विजयी बनकर निकला। एक नई आशीष के साथ। एक नए नाम के साथ। अब वह याकूब – एड़ी पकड़ने वाला – नहीं, परन्तु इस्राएल – परमेश्वर के साथ मल्लयुद्ध करने वाला – है।

याकूब अब दूसरों की एड़ी खींच उन्हें गिरा कर या असफल कर अपने लिए कुछ हासिल करने वाला नहीं रहा। इसकी बजाए, वह अपने शेष जीवन भर संघर्ष करता है, हर दिन उसके सामने एक नया संघर्ष लेकर आता है। उसके आसपास लोग के साथ, परमेश्वर के साथ, और सबसे बड़ी बात स्वयं के साथ।

और क्या आप ने ध्यान दिया? अधिकांश अवसरों पर वह विजयी होकर निकला। थोड़ा लंगड़ाते हुए, तौभी विजयी हो कर। और जब वह नदी को पार करता है, एक नये भोर का उदय होता है। एक कुलपिता का जन्म होता है।

क्या ही अद्भुत कहानी!

परिणामों में एक शिक्षा

परन्तु याकूब की कहानी में वास्तव में चकित कर देने वाली बात यह है कि इसमें याकूब को उसके कार्यों के लिए सीधा सीधा दोषी नहीं ठहराया गया है। इस कहानी में एक भी जगह, यहाँ तक कि स्वयं परमेश्वर के द्वारा भी याकूब के कार्यों को सीधे सीधे खारिज नहीं किया है।

कहानी पढ़ते हुए आप को यह महसूस होता है कि याकूब जो कर रहा है वह सहीं और अच्छा नहीं है, परन्तु कहानी इस पर मौन है। यह सिर्फ परिणामों को सामने रख रही है; यह सिर्फ याकूब के कार्यों के प्रभाव को दर्शा रही है: उसे भागना पड़ा और सब कुछ छोड़ना पड़ा। वह लगातार एसाव के, लाबान के, और फिर एसाव के भय में जीवन बिताता रहा। बार बार उसे पूरी तरह से एक नई शुरुआत करना पड़ा।

यह सारी बातें इस कहानी में बताई गईं हैं। परन्तु कहानी में यह कहीं नहीं बताया गया है कि याकूब ने कुछ गलत किया।

आप को उसकी गलतियाँ समझ में आ रही हैं। कहानी की पंक्तियों के मध्य आप को उसकी गलतियाँ दिखाई दे रही हैं, परन्तु यह सब आपकी कल्पना है, सचमुच में। कहानी में ऐसा कुछ भी नहीं बताया गया है।

और यही बात इसे इतनी उलझी हुई कहानी बना देती है। याकूब एक पवित्र व्यक्ति नहीं है, उसके कार्य अपने आप में भले नहीं हैं, और न ही वह एक भक्तिमय जीवन बिताने वाला व्यक्ति है। वह एक बड़ा उदाहरण इसलिए बन गया क्योंकि वह अनुकरणीय नहीं है। वह हमारे ही समान है। और इसलिए हमारे मन और हृदय में, हम सहज ही रिक्त स्थानों को भर लेते हैं। उसके अनेक निर्णय हमें इतने गलत लगते हैं मानों ये हमारे निर्णय हों। हम परिणामों का

हेयक माटिन

Pennsylvania
2015

विचार कर थरथराने लगते हैं। हम उत्तेजित होनेलगते हैं, कि कहानी खट्टी होने की ओर बढ़ रही है।

परन्तु ऐसा नहीं होता। अपने बनाए हुए नियमों के अनुसार चलते रहने और अन्य लोगों के अधिकारों की कभी परवाह न करने के बाद भी, याकूब के विरुद्ध कोई निर्णय नहीं दिया गया सिवाय कि उस निर्णय के जिसे उसने स्वयं लिया। बुनियादी रूप से, कहानीइसी तथ्य पर आधारित है। व्यक्तिगत स्वतंत्रता। स्वयं के बनाए नियमों के अनुसार जीना। अपने नियम स्वयं बनाना।

व्यक्तिगत स्वतंत्रता का अर्थ सिर्फ यह नहीं है कि हम अपने निर्णय स्वयं लें और अपने बनाए हुए निर्णयों के अनुसार जीवन व्यतीत करें।इसका अर्थ होता है कि हमें स्वयं को जाँचना भी है। और कोई दूसरा हमें नहींजाँचेगा। इस कहानी के अनुसार, परमेश्वर भी नहीं। हमें स्वयं ही अपनी गलतियों को ढूंढ निकालना है। परमेश्वर हमारे साथ चलता जाता है, चाहे जो भी परिणाम निकल रहे हो। मांगों को रखने वाला और स्थितियों को बदतर बनाने वाला स्वयं याकूब था, परमेश्वर नहीं।

पुराना नियम से यह हम उन सब आधुनिक लोगों के लिए एक शिक्षा है जो व्यक्तिगत स्वतंत्रता का दावा करते हैं।

व्यक्तिगत स्वतंत्रता का अर्थ यह है कि हम यह मान लें कि हमारे चारो ओर के लोग (आपका समुदाय) हमें अपने निर्णयों को लेने में, और स्वयं के बनाए नियमों के अनुसार चलने में हमारी स्वतंत्रता को सीमित कर देते हैं। इस अर्थ में व्यक्तिगत स्वतंत्रता अपने लिए स्वयं नियम बनाने के विषय में नहीं, परन्तु अपने जीवन में अन्य लोगों को समझने, स्वीकार करने, और महत्व देने के सम्बन्ध में है। यह इन लोगों का आदर करने को इच्छुक होनेसे सम्बन्धित है, क्योंकि इन के साथ मिलकर ही हम एक समुदाय का रूप लेते हैं।

इसलिए हमारे सामने यह प्रश्न आता है: क्या हम सक्षम हैं, क्या मैं इन सीमाओं में रह कर स्वयं के जीवन को तराशने में सक्षम हूँ? क्या मैं समुदाय *में* अपना जीवन स्वतंत्र और आत्मनिर्भर हो कर व्यतीत कर सकता हूँ?

क्या मैं इतना परिपक्व हूँ कि इस तथ्य को स्वीकार कर सकूं कि मुझे अपने जीवन पर पूरा अधिकार नहीं है? क्या मैं यह स्वीकार कर सकता हूँ कि उन लोगों से जिनसे मैं प्रेम करता हूँ, उस समुदाय से जिससे मैं घिरा हुआ हूँ, और परमेश्वर से जो हर जगह और हर समय मेरे साथ चलता है, बन्धा हुआ हूँ?

या, व्यापक अर्थ में, क्या विभिन्न कलीसियाओं के लिए यह सम्भव है कि वे व्यापक ऐनाबैपटिस्ट समुदाय *में* अपने स्वशासन को कायम रख सकें? क्या हम मल्लयुद्ध करने के लिए तैयार हैं?

याकूब की कहानी हमें यह सिखाती है कि जीवन में अपने बनाए हुए मार्ग पर चलना गलत नहीं है। अपनी शक्ति को परखना और व्यक्तिगत स्वतंत्रता पर जोर देना गलत नहीं है। यह सही या गलत से सम्बन्धित नहीं है। यह अपने निर्णय लेने और अपने चारो ओर के समुदाय के महत्व को भी स्वीकार करनेसे सम्बन्धित है। यह दोनों पक्षों की चोटों, पीड़ाओं, और हताशाओं का ध्यान रखने से सम्बन्धित है। यह जवाबदेहीसे सम्बन्धित है। अपने कार्यों के प्रति जवाबदेही और समुदाय के कार्यों के प्रति जवाबदेही। अपने प्रति जवाबदेही। और यदि आवश्यक हो, तो सुधार भी लाएं।
इस प्रकार की व्यक्तिगत स्वतंत्रता, जिसमें परिपक्वता है, सरलता से विकसित नहीं होती। बढ़ना सरल नहीं होता। समुदाय में रहते हुए व्यक्तिगत स्वतंत्रता को बोध कायम रखने का अर्थ है लोगों के साथ और परमेश्वर के साथ और सबसे बढ़ कर स्वयं के साथ लगातार मल्लयुद्ध करते रहना।

और चाहे आप विजयी हो कर भी निकले, यह आप को हल्का लंगड़ाता हुआ छोड़ती है।

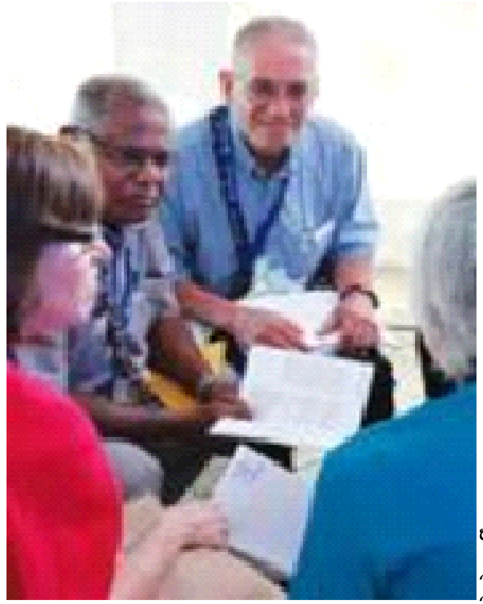

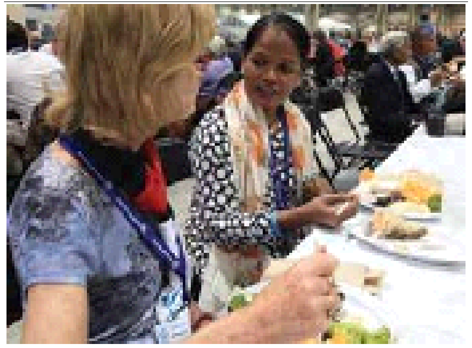

जोनाथन चार्ल्स

बाए ऊपर से नीचे की ओर फिर दाए: मित्रता समूह में विचारों और दृष्टिकोण का अदान प्रदान। भोजन संगति का एक समय। मेहन्दी कलाकारों ने ग्लोबल चर्चविलेज मेंहाथों को रंगा। जिम्बाब्वे के ब्रदरन कोरल साऊन्ड्स क्वायर ने ग्लोबल चर्च विलेज के मंच पर गीत प्रस्तुत किया। महिला धर्मज्ञानी समूहों ने अपने विचार प्रस्तुत किया।

जोन कार्लसन

शान्त एस कुंजाम ने मेनोनाइट चर्च इन इण्डिया की अनेक मण्डलियोंमें पासवान के रूप में सेवकाई किया है और वे एक अभिषिक्त बिशप थे।

डीकन्स कमीशन

मसीह में, प्रेम करने को स्वतंत्र

गलातियों 5:13–14

विश्वास का समुदाय मसीह में स्वतंत्र किए गए और प्रेम में हो कर एक दूसरे की सेवा करने के लिए एक साथ जोड़ेगए लोगोंका एक साझा जीवन है। यह स्वतंत्रता एक दूसरे की सेवा करने को ही नहीं, बल्कि विश्वास के समुदाय के बाहर के लोगों कीसेवा और भलाई करने के लिए भी दी गई है, यहाँ तक उनकी भीजो हम से बैर रखते हैं। यह वह ईश्वरीय शाही जीवनशैलीहै जिसके अनुसार हम व्यक्तिगत और सामूहिक दोनोंप्रकार का जीवन व्यतीत करने के लिएबुलाए गए है: व्यक्तिगत स्वतंत्रता में और समुदायिक बाध्यता में चलनेके लिए।

हमारे सामने चुनौती यह है कि उस स्वतंत्रता में स्थिर रहें जिसके द्वारा मसीह ने हमें स्वतंत्र किया है (गला. 5:1)। हमारा यह वर्तमान वैश्विक समुदाय हमारी विविधता और अद्वितीयता के कारण अधिक समृद्ध है।

आइये हम अपने समुदाय में एक दूसरे की विशिष्ठता, विविधता, वरदानों, और सेवाओं कोस्वीकार करें, इनकी सराहना करें, इनका आनन्द उठाएं, और इनकी कदर करते हुए अपने हृदय में सजोए रखें।
प्रेम में होकर, आइये हम आत्मा के अनुसार भी चलें। आइये हम स्वयं में और हमारे समुदायों में ऐसी जीवनशैली विकसित करने का यत्न करें जो हमारे प्रभु यीशु में भक्तिमय जीवन को प्रदर्शित करे, और हमारे स्वर्गीय पिता की बड़ाई का कारण बने (मत्ती 5:16)।
प्रेम में हो कर, हम एक दूसरे का भार उठाएं (गला. 6:2)। आइये हम विश्वास के विश्वव्यापी समुदाय में एक दूसरे के साथ अपने वरदानों और प्रतिभाओं को परस्पर साझा करें, और इस के द्वारा एक दूसरे के प्रति प्रेम प्रगट करें।

प्रेम में हो कर, हम सब की भलाई करें (गला. 6:10)। इस दोहरी आज्ञा की यह शाही व्यवस्था ही कलीसियाओं के आन्तरिक मर्ज की एकमात्र दवा और बाहरी बैर व सताव के विरुद्ध एकमात्र मसीही किलाबन्दी है।

आइये हम अपने हृदयों और मनों में यह संकल्प लें कि हम अपने व्यक्तिगत और संयुक्त जीवनों में प्रेम करने और सेवा करने की इस व्यवस्था का पालन करेंगे, चाहे इसके लिए हमें कोई भी कीमत चुकानी क्यों न पड़े।

हमें यह आदेश दिया गया है कि हम सताव और आतंकवाद का सामना करने को तैयार रहें। इसलिए, मैं स्थानीय कलीसियाओं, कॉन्फ्रेंसों, और मेनोनाइट वर्ल्ड कॉन्फ्रेंस से यह आग्रह करता हूँ कि मित्रों के साथ और सतानेवालों और आतंकवादियों के साथ, व्यक्तिगत रूप से और संयुक्त रूप से, प्रेममय और शान्तिमय सम्बन्ध स्थापित करने के लिए व्यवहारिक मार्गदर्शिका तैयार करें।

मसीह में स्वतंत्रता हमें न्यौता देती है कि अपने निजी जीवन में और सामुदायिक जीवन में प्रभु यीशु मसीह में प्रगट परमेश्वर के चरित्र को साकार करें, और प्रेममय सेवा में एक दूसरे के साथ अपने जीवनों को साझा करें।

यह एक ऐसी स्वतंत्रता है जो हमारे पड़ोसियों तक पहुँचती है, यहाँ तक कि, उन लोगों तक भी जो हमसे बैर रखते हैं और हमारी हानि की इच्छा रखते हैं।

यही हमारा ''परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत स्वंतत्रता में और सामूहिक बाध्यता में चलना'' है।

जोन कार्लसन

केविनरेस्सलर एक द्विसंस्कृतीय /द्विजातीय भाईहैं जिनकी माता तन्जानियाईऔर पिता अमरीकी है। उन्होंनेएम.डिव. का अध्ययन किया है, और उनके पास जस्टिस, पीस, एण्ड कॉन्फ्लिक्ट स्टडीज़ में एक डिग्री है।

यंग ऐनाबैपटिस्ट (वाएबी)

मन फिराव और क्षमा

मत्ती 23:1–29

(एमडबल्यूसी में), हम सब में जो एक बात समान है, वह है, एक ऐनाबैपटिस्ट इतिहास और विचार। हम सब ऐनाबैपटिस्ट पहचान धारण किए हुए हैं, क्योंकि मसीह के इस संस्करण को, जहाँ कहीं हम जाते हैं, अपने साथ ले जाते हैं। यह ऐनाबैपटिस्टवाद हमारी नई सारभूत पहचान बन जाता है।

व्यक्तिगत रूप से और एक समुदाय के रूप में चलना एक सरल काम नहीं है।

हम में से अनेक लोग फरीसी बन चुके हैं और क्योंकि हम उनके समान बाइबल को इतनीअच्छी तरह से जानते हैं कि हमारे वचन अर्थहीन हो चुके हैं।

सुखविलास और शक्ति की हमारी लालसा में, हमने कलीसिया को ऐसा बना दिया है कि इसमें व्यक्ति विशेष परमेश्वर के राज्य से बड़ेबन गए हैं। हम यह भूल चुके हैंकि पाप किस तरह से एक व्यक्ति तक सीमित नहींरहता बल्कि सारे समुदाय का भी पाप होता है। हाय हम पर क्योंकि हमने यीशु मसीह की सामर्थ को अपने हाथों में ले लिया है और हम इसका स्वार्थपूर्वक उपयोग अपने लाभ के लिए दूसरों को, जो हमसे भिन्न हैं, बाहर रखने को करते हैं।

ऐनाबैपटिस्ट कलीसिया किस तरह से फिर से अपनी विश्वसनीयता को प्राप्त कर सकती है और बेधड़क हो कर समाज में प्रभु की प्रवक्ता बनकर खड़ी हो सकती है?

हमें संवेदनशील बन कर, एक दूसरे का सहयोग दूसरों को उनका पाप दिखाते हुए नहीं परन्तु स्वयं के पापों को स्वीकार करते हुए करना है। मन फिराने का अर्थ यह मान लेना है कि मैंने पाप किया है और अब इस कार्य से मैं फिर जाने का निर्णय लेता हूँ।

प्रभु यीशु, मैं यह मान लेता हूँ कि मैंने अनेक अवसरों पर अपनी भरपूरी को, दूसरों के साथ जिनके पास कम है, बांटने की तेरी बुलाहट को अनसुना किया है।

मैं यह मान लेता हूँ कि हमने सृजनात्मकता के स्थान पर विध्वंसात्मकता को चुना है, रोटी के साथ पर बम और अन्य हथियारों को चुना है।

मैं यह मान लेता हूँ कि कलीसिया ने दूसरों को अपनाने से इंकार करने के द्वारा मुझे लाभ पहुँचाया है।

मैं यह मान लेता हूँ कि बाइबल और प्रार्थना का उपयोग अक्सर द्वार को तंग बनाने के लिए किया जाता है बजाए कि मार्ग को दूसरों के लिए सुगम बनाने के।

हम मन फिराते हैं और तुझसे क्षमा मांगते हैं! प्रभु तू आगे बढ़ने में हमारी अगुवाई कर।

जबकि हम इस नई शताब्दी में आगे बढ़ते हैं, हम एक दूसरे को सुनना सीखें। जिनके लिए मिशन कार्य किया जाना है उन्हें भी उतना ही महत्व दें जितना कि एक मिशनरी को। हम से कम अधिकार और प्रभाव रखने वालों को, पौधा लगाने वाले और पौधे के रूप में नहीं, परन्तु उन्हें अपने बराबर और समकक्ष समझते हुए उनके साथ साथ बढ़ते जाएं।

समुदाय के रूप में जीवन का कोई मूल्य नहीं है यदि हम अपनी व्यक्तिगतप्राथमिकताओं को पीछे छोड़ने के द्वारा अपनी विशिष्ठताओं से समुदाय को लाभ न पहुँचाए। यह बात हम पर कलीसिया समुदाय के व्यक्तियों के रूप में और इस विश्व कॉन्फ्रेंस में हमारी अलग अलग कलीसियाओं दोनों पर लागू होती है।

“बढ़ चलो”
दो दिशाओं वाली राज व्यवस्था का पालन करते हुए

Pennsylvania 2015

ब्रक्सी केवे

कनाडा के ब्रक्सी केवे ने शनिवार संध्या, 25 जुलाई 2015 को 16वें सम्मेलन को सम्बोधित किया। ब्रक्सी द मीटिंग हाउस के पासबान है, यह कनाडा की सबसे बड़ी और सबसे अधिक अभिनव प्रयोग करने वाली कलीसिया है। ब्रक्सी ब्रदरन इन ख्राइस्टक लीसिया के सदस्य है। वे एक लेखक भी हैं और विश्व भर में यात्राएं कर वचन की शिक्षा देते हैं।

गलातियों 5:22–23

हम एक शान्तिप्रिय कलीसिया हैं क्योंकि सबसे पहले हम यीशु की एक कलीसिया है और यीशु हमें शान्ति के मार्ग पर हमारी अगुवाई करता है। हम न्याय की परवाह इसलिए करते हैं क्योंकि हमें यीशु की परवाह है और वह न्याय की परवाह करता है। हमें मेलमिलाप की परवाह है और हम परमेश्वर के लिखित वचन की परवाह करते हैं क्योंकि परमेश्वर के वचन को यीशु के व्यक्तित्व में पहचानना चाहते हैं।

हमारी पहचान का केन्द्र यीशु है। जब हम यीशु को केन्द्र बनाए रखते हैं और उसकी स्पष्ट और सरल शिक्षा का पालन करते हैं, तो हम इसे मसीह की देह के शेष भाग को एक वरदान के रूप में वापस देते हैं और सब को और अधिक पुष्ट बनाने में योगदान देते हैं।

प्रेम आत्मा का फल है

मैं प्रेम के विषय में आत्मा के फल तथा नया नियम के अन्य स्थलों के सन्दर्भ में आपसे बात करना चाहता हूँ। हमारे भीतर आत्मा का कार्य प्रेम का कार्य है। हम जितना अधिक प्रेम के विरुद्ध जा कर कार्य करते हैं, हम उतना अधिक हमारे भीतर के आत्मा के विरुद्ध जा रहे हैं, और जितना अधिक हम प्रेम को महत्व देते और पहचानते हैं, उतना अधिक हम पवित्र आत्मा के साथ साझेदार बन कर आगे बढ़ते हैं।

अधिकांश विद्वान इस बात पर सहमत हैं कि गलातियों 5 में आत्मा के फलों के वर्णन में प्रेम सबसे पहला फलमात्र नहीं है। प्रेम आत्मा का फल *है* और इसके आठ वर्णन किए गए हैं कि प्रेम क्या है। 1 कुरिन्थियों 13 के समान, यह प्रेम का चित्रण करने वाली एक सूची है। आत्मा का फल प्रेम है, और हम इसे तब पहचानना आरम्भ करेंगे जब हम आनन्द, मेल, धीरज, कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता और संयम को समझ पाएंगे।

इन वर्षों में, मेरा यह निश्चय दृढ़ होता रहा है कि परमेश्वर की आराधना में प्रेम का केन्द्रीय स्थान है और वह हमें किस तरह से बुलाता है कि हम दूसरों को प्रेम करने के द्वारा उसकी आराधना करें। मेरे लिए इस बात का महत्व निरन्तर बढ़ता जा रहा है कि मैं इस बात को सीख सकूं और इस प्रकार के प्रेम को आराधना के एक रूप में बढ़ावा देने के लिए स्वयं को समर्पित कर सकूं।

बढ़ते हुए, मुझे ऐसा लगा, कि मेरी प्राथमिकता यह है कि मैं परमेश्वर के साथ अपने सम्बन्ध को सहीं करुं। ऐसा मैं परमेश्वर के साथ अपने सम्बन्ध पर ध्यान केन्द्रित करने के लिए अधिक से अधिक समय बिताने के द्वारा करुंगा। अन्तत: जब यह सम्बन्ध सहीं हो जाएगा, तो यह मेरे चारो ओर के लोगों पर उमण्ड पड़ेगा। मैं दूसरोंसे भी प्रेम करना सीखूंगा, परन्तु सबसे पहले मुझे परमेश्वर के पास वापस आ कर यह सुनिश्चित करना है कि व्यक्तिगत रूप से पवित्रशास्त्र का अध्ययन करुं, व्यक्तिगत रूप से प्रार्थना करुं, और व्यक्तिगत रूप से मनन करुं। यही मेरी प्राथमिकता बन गई।

दूसरी आज्ञा

जब हम आत्मिक रूप से बढ़ते जाते हैं, तो हम व्यक्तिगत आत्मिक अभिव्यक्तियों में समय बिताने के लिए उत्साहित होते जाते हैं, परन्तु यीशु वह पहला व्यक्ति था जिसने मेरे सामने यह चुनौती रखा कि मैं इसे आगे बढ़ चलूं। एक धार्मिक अगुवे के द्वारा यह पूछे जाने पर कि सबसे बड़ी आज्ञा कौन सी है, प्रभु ने जिस तरीके से उन दो आज्ञाओं को एक आज्ञा के रूप में जोड़ दिया था वह मेरे लिए एक चुनौती थी। सबसे बड़ी आज्ञा – यह एकवचन है। यीशु ने कहा कि सबसे बड़ी आज्ञा यह है कि तू अपने प्रभु अपने परमेश्वर से अपने सारे मन, और अपने सारे प्राण, और अपनी सारी बुद्धि, और अपनी सारी शक्ति के साथ प्रेम रख। मैं अपने सामने इस दृश्य की कल्पना करता हूँ कि यह प्रश्न पूछने वाला धार्मिक अगुवा यीशु से कह रहा है, *बहुत बहुत धन्यवाद,* और फिर वह जाने लगता है। इस पर यीशु आगे कहता है, ***और*** *दूसरी आज्ञा यह है।*

दूसरी आज्ञा? कौन सी दूसरी आज्ञा? इस अगुवे ने दो सबसे बड़ी आज्ञाएं नहीं, बल्कि सिर्फ एक पूछा था। परन्तु यीशु सिर्फ एक के बारे में बता कर इसे ऐसे ही नहीं छोड़ देता। सबसे बड़ी आज्ञा क्या है? तू अपने प्रभु परमेश्वर से अपने सारे मन, और अपने सारे प्राण, और और सारी बुद्धि से प्रेम रख . . . और दूसरी यह है: “तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख” (मत्ती 22:37–39)।

और तब यीशु कहता है, “ये ही दो आज्ञाएं सारी व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं का आधार है” (मत्ती 22:40)। उसने दोनों आज्ञाओं को दो दिशाओं वाली एक ऐसी आत्मिकता में बान्ध दिया जो ऊपर की ओर और अगल बगल की ओर पहुँचती है। यदि हम अपने अगल बगल नहीं पहुँच पाते, तो हम सच्चे अर्थों में ऊपर की ओर भी नहीं पहुँच पाएंगे।

जैसाकि यूहन्ना प्रेरित कहता है, “यदि कोई कहे, ‘मैं परमेश्वर से प्रेम रखता हूँ,’ और अपने भाई से जिसे उसने देखा है प्रेम नहीं रखता, तो वह परमेश्वर से भी जिसे उसने नहीं देखा प्रेम नहीं रख सकता” (1 यूहन्ना 4:20)। यूहन्ना यह नहीं कहता कि तुम असंतुलित हो। यूहन्ना यह नहीं कहता कि तुम्हें अपने भाई के प्रति प्रेम में बढ़ने की आवश्यकता है और सिर्फ परमेश्वर के प्रति हीं नहीं। जी नहीं, वह कहता है *यदि तुम कहते हो कि तुम परमेश्वर से प्रेम रखते हो, परन्तु अपने भाई या बहन से प्रेम नहीं रखते, तो तुम झूठे हो।* दोनों को एक साथ जोड़ना आवश्यक है। यह न कहें कि आप परमेश्वर से प्रेम रखते हैं और अपने आसपास के लोगों से प्रेम न रखें जो परमेश्वर के स्वरूप और उसकी समानता की एक झलक हैं।

ऐसा लगता है कि यीशु यह जानता था कि धार्मिक प्रवृत्ति यह होगी कि परमेश्वर को प्राथमिकता देने के नाम पर हम धर्म का प्रयोग अपने आसपास के लोगों से प्रेम न रखने के एक बहाना के रूप में करेंगे।

यीशु ने कहा कि तुम्हारे पास जो कुछ है, उन सब के द्वारा प्रभु अपने परमेश्वर से प्रेम रखो। यह इस पृथ्वी पर तुम्हारा एक मिशन है। परन्तु दो दिशाओं वाले लक्ष्य के बिना, हम परमेश्वर के प्रति इस प्रेम का प्रयोग स्वयं को और दूसरे को हल्का लेने, लोगों को प्रताड़ित करने, झूठे शिक्षकों को जला देने, न सिर्फ दूसरे धर्मों परन्तु अपने धर्म के अन्य गोत्रों के विरुद्ध लड़ाइयाँ छेड़ देने के लिए एक बहाना के रूप में करने लगेंगे।

परमेश्वर के प्रेम के नाम पर हम बहुत से ख्रीष्ट विरोधी कार्य में शामिल हो सकते हैं यदि हम सिर्फ इसी पहलू पर अपना ध्यान सीमित रखें।

न सिर्फ हिंसक आचरण, बल्कि हमारा ध्यान परमेश्वर की ओर इतना अधिक केन्द्रित हो सकता है कि हम अपने आसपास के लोगों को अनदेखा करने लगें।

आप परमेश्वर को अधिक समय देने के विरुद्ध बहस कैसे कर सकते हैं? मनन में अधिक समय, प्रार्थना में अधिक समय, व्यक्तिगत अध्ययन में अधिक समय; यह वास्तव में बहुत पवित्र प्रतीत होता है। परन्तु यीशु कहता है, *मैं तुम्हें यहीं तक सीमित नहीं रख सकता। तुम्हें अपने परमेश्वर से और अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखना है और यदि तुम इन दोनों में से किसी एक को न कर पाओ, तो तुम दूसरे के विषय में एक झूठे ठहरोगे।*

एक चट्टान की नैतिकता के पार

मेरी बेटियों ने मानसिक रूप से असक्षम बच्चों के लिए आयोजित एक एक दिवसीय शिविर में भाग लिया। सुबह के समय मैं अपनी बेटियों को छोड़ने को गया और दोपहर उन्हें वापस ले कर आया, तो मैंने इस शिविर के द्वारा एक नए सिरे से यह अनुभव पाया कि उस तरह से प्रेम करने का अर्थ क्या है जिस तरह से यीशु प्रेम करने को कहता है।

मैंने अपने बेटियों को बताया, “मैं चाहता हूँ कि तुम वहाँ जाओ, और प्रेम की पहल करो। प्रेम का अर्थ सिर्फ खराब काम

> **“हम एक दूसरे के लिए परमेश्वर के अनुग्रह के भण्डारी हैं। परमेश्वर ने आप को किसी अन्य व्यक्ति के लिए अनुग्रह दिया है – और अन्य लोगों को आप के लिए अनुग्रह दिया है।”**

न करना नहीं है, प्रेम दूसरों के लिए भलाई करना की पहल करता है।”

मैंने उन्हें यह बात इस तरीके से समझाया कि वे इसे समझ सकें। इस पर उन्होंने कहा, “हाँ, हम नम्र हैं।”

मैंने उन्हें बताया कि यह मात्र नम्रता नहीं है। यह सिर्फ अच्छा व्यवहार करना नहीं है। प्रेम इससे भी आगे जाता है।

उन्होंने कहा, “ठीक है, हम कोई भी खराब बात नहीं कहेंगे।”

यह खराब काम न करना नहीं, बल्कि भलाई करना है। यह एक ऐसे व्यक्ति को बाहर अकेले बैठा देख कर उसकी भलाई करने की पहल करना है। यह *अगापे* है, अगापे एक यूनानी शब्द है जिसका अर्थ है किसी व्यक्ति को मूल्यवान समझने का निर्णय लेना।

मैं समझता हूँ कि इसी कारण भलाई को आत्मा के फल में शामिल किया गया है, अच्छे व्यवहार को नहीं। अच्छा व्यवहार रूखाई *न* करने से सम्बन्धित है, परन्तु भलाई पहल करने से।

मैंने उन्हें एक उदाहरण दिया। जब हम कार के बार निकले, हमें वहाँ एक बड़ी चट्टान दिखाई दी। मैंने उनसे पूछा, “क्या यह चट्टान किसी से प्रेम कर रहा है? उन्होंने उत्तर दिया, “नहीं चट्टान प्रेम नहीं करते।” मैंने जोर दिया, “परन्तु क्या यह किसी के साथ कुछ गलत कर रहा है?”

मेरी बेटियों ने मेरी बात को समझ लिया। यह चट्टान किसी के साथ रूखा या बुरा व्यवहार नहीं कर रहा है, न ही यह किसी की भावनाओं को ठेस पहुँचा रहा है, यह चुपचाप यहाँ पड़ा हुआ है। चट्टान कोई बुरा कार्य नहीं करते; परन्तु वे कुछ भला कार्य भी नहीं करते।

उस ग्रीष्मकाल हमने अपने परिवार का एक ध्येय बनाया: “*रॉक ऑन।*” चट्टान की नैतिकता से आगे बढ़ों। यही प्रेम हम आत्मा के फल में पाते हैं।

पिछले कुछ वर्षों से अपने ऐनाबैपटिस्ट भाई बहनों से मैं यही सीख रहा हूँ।

एक नई आज्ञा

खराब व्यवहार या काम ***न*** करना ही पर्याप्त नहीं है; प्रेम करने का अर्थ है अपने आसपास के लोगों की चिन्ता करना हमारी प्राथमिकता हो। यह परमेश्वर की हमारी इतनी प्रभावशाली आराधना बन जाता है कि नया नियम में हम प्रेरितों को एक मंत्रमुग्ध कर देने वाला कार्य करते हुए पाते हैं। क्या आप को दो दिशाओं वाली आत्मिकता स्मरण है?

गलातियों 5 में आत्मा के फल की सूची से ठीक पहले, पौलुस प्रेरित लिखता है: “क्योंकि सारी व्यवस्था इस एक ही बात में पूरी हो जाती है” (5:14)। एक ही बात। और फिर वह दूसरी आज्ञा बताता है: अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख।

क्या यीशु ने यह नहीं कहा कि व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं की बातें इसी पर आधारित है? पौलुस सीधे दूसरी आज्ञा पर जाता है। रोमियों 13:8 में भी वह यही करता है: “क्योंकि जो दूसरे से प्रेम रखता है, उसी ने व्यवस्था पूरी की है।” पतरस ने भी 1 पतरस 4:8 में ऐसा ही किया है: “सब में श्रेष्ठ बात यह है कि एक दूसरे से अधिक प्रेम रखो, क्योंकि प्रेम अनेक पापों को ढांप देता है।” याकूब , जो यीशु का भाई है, इसे “राज व्यवस्था” कहता है (याकूब 2:8)।

शेष नया नियम में प्रेरितों के द्वारा दो दिशाओं वाली व्यवस्था को उद्धरित करने का उदाहरण और कहीं दिखाई नहीं देता। क्या सोच कर उन्होंने यीशु की बातों में काट–छांट किया? जब यीशु ने ये वचन कहे, तब वह यह बात एक ऐसे व्यक्ति से कह रहा था जो उस समय तक यीशु का अनुयायी नहीं बना था, एक ऐसे व्यक्ति से जिसके सामने पहले परमेश्वर के पास आने की चुनौती रखने की आवश्यकता थी।

परन्तु अपने चेलों को, जिन्होंने कहा था, “मैं परमेश्वर से प्रेम रखता हूँ और उसके पीछे चलने के लिए जो भी मूल्य चुकाना पड़े मैं तैयार हूँ,” यीशु ने कहा, *यह चाहे तुम जैसे भी करो। तुम्हारा जीवन ऐसा हो कि तुम दूसरों से अपने समान प्रेम रखो।* शेष नया नियम में, यही वह आज्ञा बन जाती है जो हमारे लिए व्यवस्था को पूरी करती है।

यही बात यीशु ने अपने चेलों से यूहन्ना 13 में कहा, “मैं तुम्हें एक नई आज्ञा देता हूँ कि एक दूसरे से प्रेम रखो।” इस अर्थ में नई

रोहडा शिर्के

नहीं कि यह मैंने पहली बार कहा है, परन्तु इस अर्थ में नई कि यह अपने आप में अकेली कायम है। वह अपने चेलों से कहा है, *परमेश्वर के प्रति अपने प्रेम को अलग से व्यवहार में न लाओ। परमेश्वर के प्रति अपने प्रेम को इस नई आज्ञा का पालन करने के द्वारा व्यवहार में लाओ: एक दूसरे से प्रेम रखो।* यीशु ने यही बात यूहन्ना 15:12 में कहा: ''मेरी आज्ञा यह है, कि जैसा मैं ने तुम से प्रेम रखा, वैसा ही तुम भी एक दूसरे से प्रेम रखो।''

पुनरुत्थित यीशु ने पतरस से कहा, *क्या तू मुझसे प्रीति रखता है? क्या तू सचमुच मुझ से प्रीति रखता है? यदि तू करता है तो मेरी भेड़ों को चरा* (यूहन्ना 21:17)। यह मसीह के द्वारा नए सिरे से जोर दी जाने वाली आज्ञा बन गई।

आराधना प्रवाहित होती है

यीशु के द्वारा बताए गए भेड़ और बकरियों के दृष्टांत का सारांश यह कहते हुए दिया जा सकता है कि हम आवश्यकता में पड़े अपने आसपास के लोगों से प्रेम करने और उनकी सेवा करने के द्वारा यीशु से प्रेम रखते हैं, उसकी आराधना और सेवा करते हैं। इसलिए हम इन बातों को एक दूसरे से अलग नहीं कर सकते: ''यह आराधना है और यह सेवा है,'' ''यह आराधना है और यह सुसमाचार प्रचार है।''

यह सब आराधना हैं। जब हम गीतों को गाते हैं तब हम आराधना करते हैं। जब हम प्रार्थना करते हैं तब हम आराधना करते हैं, जब इस कॉन्फ्रेंस को समाप्त कर इस स्थान से विदा होंगे तब भी हम आराधना करेंगे।

आराधना लगातार चलती रहती है और प्रवाहित होती जाती है जब हम अपने चारो ओर के लोगों की सुधि लेते हैं। हमारा विश्वास कोई ऐसा धर्म नहीं है जो एक पवित्र स्थान और एक पवित्र वातावरण और एक पवित्र याजकपद में समाया जा सके। हमारा विश्वास एक सम्बन्ध है। यह इस बात में कार्यशील होता है कि हम अपने आसपास के लोगों से किस प्रकार से प्रेम रखते हैं।

और इसलिए मेरे भाइयों और बहनों, मैं आपके सामने यह अन्तिम विचार रख कर समाप्त करना चाहता हूँ।

कलीसिया हमारे लिए एक प्रयोगशाला है जहाँ हम अपने जैसे समान विचारों के लोगों के साथ मिल कर प्रयोग करते हुए यह अनुभव कर सकते हैं कि दूसरों से प्रेम करने के द्वारा परमेश्वर से प्रेम रखने का अर्थ क्या है। क्योंकि जब हम कलीसिया से बाहर जा कर कलीसिया के बाहर के लोगों से प्रेम रखने का प्रयास करते हैं, तो कभी वे लोग हमारे प्रेम को समझ पाते हैं और कभी समझ नहीं पाते। कभी वे इसे परमेश्वर की ओर से एक भेंट समझ कर ग्रहण करते हैं और कभी वे ऐसा नहीं करते। कभी वे हमारे लिए हर्षित होते हैं और कभी वे हमारा उपहास करते हैं। परन्तु कलीसिया एक सुरक्षित स्थान हो सकती है जहाँ हम प्रेम करने में स्वयं को निपुण बना सकते हैं।

''जिसको जो वरदान मिला है, वह उसे परमेश्वर के नाना प्रकार के अनुग्रह के भले भण्डारियों के समान एक दूसरे की सेवा में लगाए'' (1 पतरस 4:10)।

हम एक दूसरे के लिए परमेश्वर के अनुग्रह के भण्डारी हैं। वह हमें अपना अनुग्रह सौंपता है कि हम उसे एक दूसरे के साथ बांटे। क्या ही सौभाग्य की बात है! क्या ही अद्भुत जिम्मेदारी!

एक पश्चिमी सुसमाचारवादी के रूप में, मैं यह मानता हूँ कि सभी विश्वासी परमेश्वर के याजक हैं। मैं इसलिए याजक शब्द का प्रयोग कर रहा हूँ क्योंकि मुझे किसी अन्य व्यक्ति की आवश्यकता नहीं, यह मेरे और परमेश्वर के बीच का सीधा सीधा सम्बन्ध है। परमेश्वर के साथ अपने रिश्ते के सम्बन्ध में मैं अपना याजक स्वयं हो सकता हूँ।

परन्तु मेरे विचार से, एक इब्री के लिए, यह कहने का अर्थ कि सभी विश्वासी याजक है यह नही होगा कि हम व्यक्तिगत रूप से परमेश्वर के सम्पर्क में हैं, परन्तु यह कि हम एक दूसरे के लिए याजक है। हम एक दूसरे के सामने अपने अपने पापों का अंगीकार करते हैं। हम एक दूसरे के लिए परमेश्वर के अनुग्रह के भण्डारी हैं। परमेश्वर ने आप को किसी अन्य व्यक्ति के लिए अनुग्रह दिया है – और अन्य लोगों को आप के लिए अनुग्रह दिया है। परमेश्वर आपके सामने सच्चाई को प्रगट करना चाहता है, वह आपको प्रोत्साहित करना चाहता है और अपने अनुग्रह से आप का पोषण करना चाहता है। वह यह कार्य अलग अलग लोगों के साथ व्यक्तिगत रूप से कर सकता है, परन्तु इससे हम एक दूसरे से अलग हो जाएंगे।

इसकी बजाए परमेश्वर इसे किसी और को दे देता है और कहता है, *अब जाओ और उसे ढूंढ़ों*। और वह किसी और का अनुग्रह आप को दे देता है और कहता है, *एक साथ आओ। एक दूसरे के लिए मेरे अनुग्रह के भण्डारी बनो ताकि हम एक साथ आएं और एक दूसरे से प्रेम रखना और एक दूसरे की सेवा करना सीखें।*

इस तरह से हम अपने जीवनों में परमेश्वर के अनुग्रह और अनुभव बहुतायत में करते जाते हैं। एक कलीसिया होना क्या ही सौभाग्य की बात है।

इसलिए मैं आप से यह निवेदन करता हूँ कि जाइये और अपना अनुग्रह प्राप्त कीजिए। जाइये और अपने अनुग्रह बांटिये। अनुग्रह के इस आदान प्रदान में, हम प्रेम करने और अच्छी तरह से प्रेम करने की अपनी क्षमता को विकसित करेंगे।

और इन शब्दों के साथ, मैं यह सम्बोधन समाप्त करता हूँ: आगे बढ़ चलो!

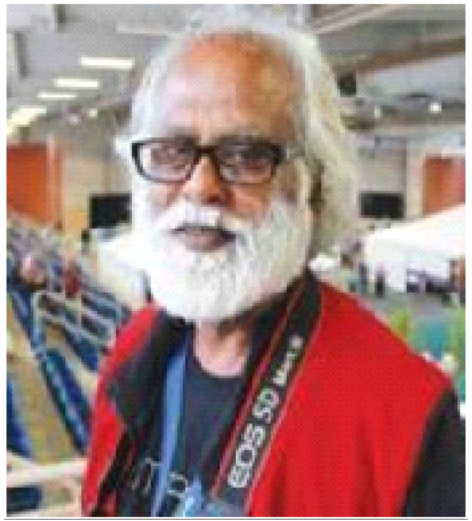

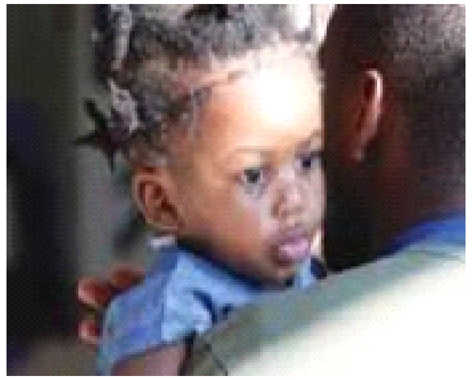

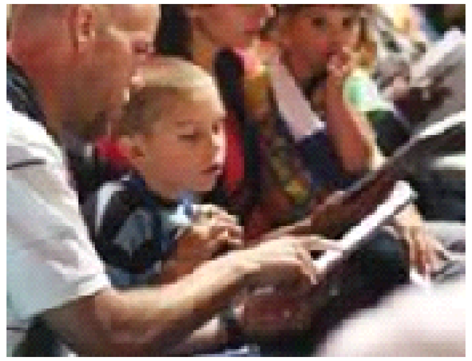

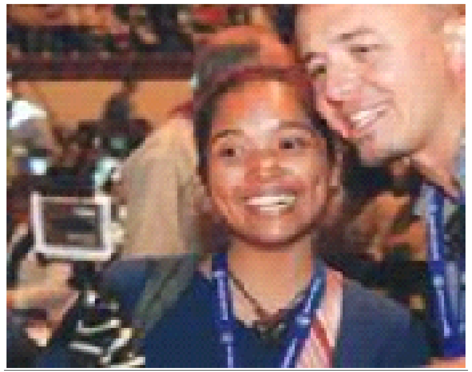

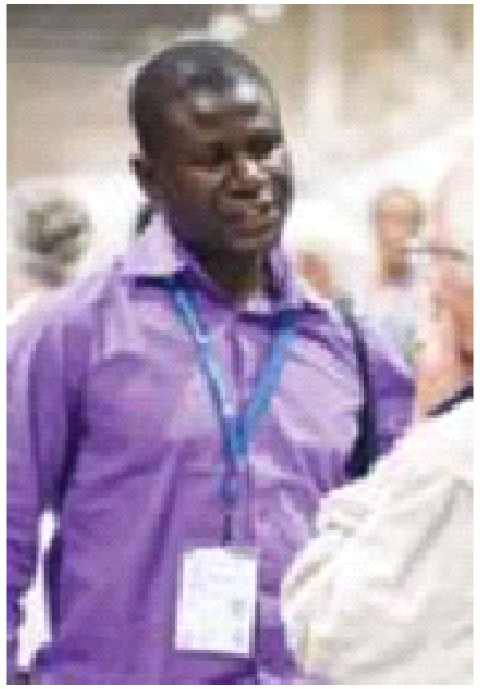

ऊपर दाए से नीचे की ओर फिर दाए: भारत से फोटोग्राफर रूफुस गुरुगुल्ला। सम्मेलन एक पारिवारिक आयोजन है। डर्नेल बार्कमन (दाएं) ने सम्मेलन के मुख्य अंशों का विडियो तैयार किया। संस्कृतियों और पीढ़ियों के पार वार्तालाप

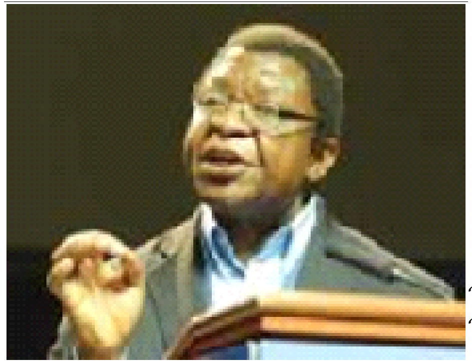

हिप्पोलिटो त्शिमांगा अफ्रीका, यूरोप, और लैटिन अमरीका में मेनोनाइट चर्च कनाडा के डायरेक्टर ऑफ मिनिस्ट्री हैं।

मिशन कमीशन

कलीसिया के मिशन में सभी पहलुओं को शामिल करना आवश्यक है

मत्ती 15:32;
लूका 10:2;
मत्ती 28:19–20

पश्चिम जगत की कलीसियाओं में ''मिशन'' को लेकर असहजता की एक भावना है। हमें क्या करना चाहिए: सुसमाचार प्रचार या समाज सेवा? तौभी, संसार अब भी हम से उस आशा का कारण जानना चाहता है जो हम में बनी रहती है। परमेश्वर की कलीसिया के रूप में, नासरत के यीशु के द्वारा दिए गए कारण के सिवाय और कोई दूसरा कारण हमारे पास नहीं है।

सुसमाचार की पुस्तकें इस बात की गवाह हैं कि यीशु गाँव गाँव जा कर परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार प्रचार करता था। यीशु द्वारा मौखिक रूप से दिया जाने वाला शुभ सन्देश हमेशा ही लोगों की नैतिक और भौतिक आवश्यकताओं की चिन्ता के प्रकाश में दिया जाता था। इसका कोई उचित कारण नहीं कि कलीसिया का मिशन इससे भिन्न हो, क्योंकि यीशु मसीह कलीसिया का सिर है।

सुसमाचार प्रचार और समाज सेवा दोनों ही उद्धार के सम्बन्ध में कलीसिया के कार्य का हिस्सा हैं।

यीशु ने अपना प्रचार यह कहते हुए आरम्भ किया, ''मन फिराओ!'' – अपनी निष्ठा को बदल डालो और परमेश्वर की ओर पूरी तरह से फिर कर उसे अपने सारे मूल्यों का केन्द्र बना लो। आज भी, यीशु की कलीसिया को अपना मन को बदलने की आवश्यकता है, ताकि हम इस संसार को उसी दृष्टि से देख पाए जिस दृष्टि से इसे यीशु ने देखा।

तरस खाने वाले परमेश्वर, जिसने यीशु को भेजा था, के स्वरुप में उसने भूखों को तृप्त किया (मत्ती 15:32) और उसने भीड़ को सुसमाचार सुनाया, चेले बनाया, और उन्हें एक मिशन सौंपा: ''पके खेत तो बहुत हैं, परन्तु मजदूर थोड़े हैं, इसलिए खेत के स्वामी से विनती करो कि वह खेत काटने को मजदूर भेज दें'' (लूका 10:2)।

इसी तरस के कारण ही यीशु ने अपनी कलीसिया को भेजा कि वह जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाए। और उसने यह प्रतिज्ञा किया कि वह जगत के अन्त तक इस कार्य में सदैव कलीसिया के साथ रहेगा (मरकुस 16:15–16)।

मिशन यीशु के डीएनए में पाया जाता था और मिशन कलीसिया के डीएनए में भी है। मिशन के बिना कलीसिया का अस्तित्व सम्भव नहीं है। हमें मिशन कार्य करना अनिवार्य है, और यह कार्य हमें उसी तरीके से करना है जिस तरीके से इसे यीशु ने किया – मात्र परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारिता को समर्पित हो कर, मानव जीवन को भयभीत करने वाली किसी भी प्रधानता या सामर्थ की भर्त्सना करते हुए।

भाइयों और बहनों, प्रभु यीशु की महान आज्ञा को हल्के में न लें। यीशु की आज्ञा को फ़ीका न कर दें, और कलीसिया को दी गई उसकी अन्तिम आज्ञा को हटा कर इसका स्थान अपने व्यक्तिगत धर्मवैज्ञानिक मत को न दें।

हमारे प्रभु और स्वामी के आदर्श का अनुसरण करते हुए, आइये हम परमेश्वर के राज्य के सुसमाचार का प्रचार इसकी परिपूर्णता में करें – वचन को बोलते हुए और संसार की सेवा करते हुए।

यदि हम स्वयं के भीतर महान आज्ञा के प्रति उत्साह और उमंग नहीं भरेंगे – सुसमाचार प्रचार और समाज सेवा के दोहरे अर्थ में – तो शायद हम एक कलीसिया के रूप में न रह पाएंगे। यह निर्णय लेने का अधिकार कलीसिया को नहीं है कि वह मिशन कार्य करे या न करे; कलीसिया अपने स्वाभाव से ही मिशनवादी है।

यंग ऐनाबैपटिस्ट (वायएबी)

वैश्विक कलीसिया के मिशन में प्राप्त करना और देना: एक ठोस कदम

मत्ती 10:7–8,
मत्ती 25:34–40

मिशन में सारे पहलू शामिल रहते हैं; सुसमाचार प्रचार कार्य समावेशी होता है। सुसमाचार प्रचार सभी पहलुओं व क्षेत्रों को ध्यान में रख कर किया जाना आवश्यक है। परमेश्वर का राज्य तब तक पूर्ण नहीं होगा जब तक मानव कष्ट का एक एक पहलू चंगा न कर दिया जाए, इसका समाधान न कर दिया जाए, और इसकी काया पलट न हो जाए।

परमेश्वर का राज्य इस पृथ्वी पर है और वर्तमान में है: इसका अर्थ है संसार को एक आत्मिक, भौतिक, सामाजिक, और आर्थिक समाधान उपलब्ध कराना (मरकुस 1:15)। यह बुलाहट इस कदम पर आधारित है: ''कुर्सी'' पर बैठ कर धर्मविज्ञान की बड़ी बड़ी बातें करने से आगे बढ़ कर ''सड़क'' (जगह जगह जा कर इन बातों को साकार करना) का धर्मविज्ञान अपनाना।

हमारे व्यवहार में यीशु की शिक्षा को साकार करना आवश्यक है: एक ऐसी जीवन शैली (*इथिक्स प्रक्टिस*) जिसमें मन नया बन जाता है (*डॉक्सा*)।

मत्ती 10:7–8 हमारे लिए एक कुंजी स्थल है: बदले में कुछ प्राप्त किए बिना दें। क्या हम अपने निजी हितों के आधार पर स्वयं को बदलते हैं? क्या हमारा मिशन एक मूर्त रूप लेता है या फिर हम ऐसा व्यवहार करते हैं मानों हम सत्य के स्वामी हों और अपनी पसन्द की योजनाओं, उद्देश्यों, ढाँचों, बजट, इत्यादि को थोपते हैं?

जाग्रति विशेष रूप से ऐसे लोगों के मध्य आती है जो हम पर आमूलचूल परिवर्तन लाने जोर डालते हैं (जो सुसमाचार की ओर वापस जाने को हमें बाध्य करते हैं)। प्रभु यीशु भले चंगों के लिए परन्तु बीमारों के लिए आया। हम ऐसे लोगों को अपने साथ लें जो बिना चरवाहा की भेड़ें हैं। एक कलीसिया के रूप में, हमें ऐसे लोगों से प्रेम करना आवश्यक है जिनसे कोई प्रेम रखना नहीं चाहता, जो अपने जीवन में आशा खो चुके हैं।

तब हमारे परिवर्तित जीवन एक नई मानवता के चिन्ह, और परमेश्वर के राज्य के सुसमाचार के प्रचार के रूप में एक प्रचण्ड तंत्र का रूप लेना शुरु कर देंगे। जो अनुग्रह हम पर ऊपर की ओर से प्रगट किया गया वही अनुग्रह अब हमें अपने अगल बगल दूसरों पर प्रगट करना आवश्यक है, उन लोगों पर भी जो हम से प्रेम नहीं करना चाहते। प्रभु हमारी रचनात्मकता का भी आव्हान करता है कि यह हमारे मिशन को ठोस आकार प्रदान कर: शायद सारे संस्थागत अवरोधों को तोड़ते हुए, एजेन्सियों और योजनाओं के पार जा कर, मिशन को योजनाओं, बजट, और सांख्यिकी के आधार पर परिभाषित करते हुए नहीं, बल्कि प्रत्येक स्थान और प्रत्येक व्यक्ति के सन्दर्भ में एक खुलापन अपनाते हुए। अक्सर धन भी आवश्यक नहीं रह जाता जहाँ पवित्र आत्मा हमारे माध्यम से कार्य करता है।

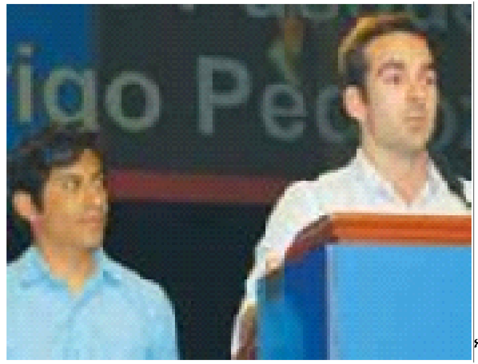

मार्क पासकस का जन्म और पालन पोषण बार्सिलोना, स्पेन में हुआ, उसके बाद वे एक युवा वयस्क के रूप में आस्ट्रेलिया चले गए जहाँ वे बाजार सम्बन्धी निर्णयों में नैतिक मूल्यों को लागू करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। मार्क एमडब्लयूसी के वायएबी कमेटी के एक सदस्य हैं। रोड्रिगो पेड्रेज़ा एक लेखक हैं और बच्चों की कहानियों को चित्रित करते हैं, रोड्रिगो मैक्सिको में एक पासवान के रूप में भी सेवा देते हैं और वे अपने कॉन्फ्रेंस में विवाद–समाधान दल के एक सदस्य होने के साथ साथ एमडब्ल्यसी वायएबी समिति के एक सदस्य भी हैं।

शायद एकमात्र कार्य जो हमें करना चाहिए वह यह है कि हम सुनने वाले बन सकें। सुनने के द्वारा हम दूसरों को आदर देते हैं, और साथ ही साथ स्वयं को भी। मेल के सुसमाचार को सबके सामने रखने के द्वारा हम बदलते हैं। यह एक सुधारवादी रूप में गवाही सामने रखता है, जो ग्रहणशीलता पर आधारित है, जैसा कि यीशु ने पूछा था: ''तुम क्या चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिए करूं?''

पेन्नसिलवेनिया 2015 में मैंने क्या पाया

जिसे मैं अपने साथ घर ले कर जाऊंगा

फिलिस पेलमान गुड

इण्डोनेशिया

पौलुस हार्तोना, इण्डोनेशिया

पेन्नसिलवेनिया 2015 की भीड़ का एक हिस्सा बनने पर इण्डोनेशिया के पौलुस हार्तोना को प्रेरणा मिली कि वे मुड़ कर अपने आरम्भिक जीवन पर चिन्तन करें और इस बात की ओर ध्यान करें कि इस स्थान तक पहुँचना उनके लिए कितना अनापेक्षित था।

हार्तोना सोलो (सुराकार्ता) सेन्ट्रल जावा, इण्डोनिशिया के एक मेनोनाइट पासबान और बहुत सक्रिय शान्ति सेवक हैं, यह एक मुस्लिम बहुल क्षेत्र है, तथा हार्तोना का पालन पोषण एक बौद्ध परिवार में हुआ।

''अपनी प्राथमिक शिक्षा के दौरान, मैंने इस्लाम धर्म के बारे में सीखा। मेरे मित्र मस्जिद जाया करते थे, इसलिए मैं भी उनके साथ जाता था, और अन्तत: मैं एक इमाम बन गया। अब मुझे ऐसा लगता है कि मैं एक पासबान होने की बुलाहट को सुन रहा था, परन्तु मैं यीशु को नहीं जानता था।''

वे बताते हैं, कि 1994 में मसीही बनने और बपतिस्मा लेने के बाद, ''मैंने अपना नाम पौलुस रख लिया।''

शान्ति के प्रति संकल्प

एक पासबान के रूप में अपने जीवन के आरम्भ से, हार्तोना की प्रतिबद्धता बिल्कुल स्पष्ट थी। ''हमने अपनी मण्डली का आरम्भ 1994 में 40 सदस्यों के साथ शान्ति की एक कलीसिया बनने के दर्शन के साथ किया।''

उत्तर अमरीकी मेनोनाइट की अनेक संस्थाओं ने उन्हें उत्साहित किया कि वे अपने दर्शन को व्यवहार में लाएं। ''1997 में, मुझे मेनोनाइट सेन्ट्रल कमेटी के राहत, सेवा, और विकास कार्यों के विषय में जानकारी मिली। और इसी समय, मुझे इस्टर्न मेनोनाइट मिशन के द्वारा आरम्भ किए *विटनेस एण्ड ग्लोबल मिशन्स* ने भी प्रभावित किया।''

''2002 में, मुझे मेनोनाइट आपदा सेवा के विषय जानकारी मिली। 2005 में, इण्डोनेशिया में सुनामी के कहर के तुरन्त बाद, हमने इण्डोनेशिया एमडीएस का आरम्भ किया: मेनोनाइट डियाकोनिया सर्विस। हम अपनी कलीसिया के द्वारा की जाने वाली इस सेवा में साक्षी, राहत कार्य, विकास, और संघर्ष (विवाद) समाधान सम्बन्धी कार्यो को साथ साथ करते हैं।

2007 में, मैंने इस्टर्न मेनोनाइट यूनिवर्सिटी के द्वारा अयोजित *विवाद निवारण और मानसिक अघात* से बाहर निकलने में सहायता करने सम्बन्धी प्रशिक्षणों में भाग किया। हमने इन विचारों को इण्डोनेशिया की परिस्थितियों के अनुरुप ढाल कर उन्हें अपनी गवाही व विकास के प्रयासों में जोड़ लिया।''

सुसमाचार को अपने जीवनों के द्वारा लिखना

''अब 2015 में, सोलो में हमारी दो मेनोनाइट मण्डलियाँ हैं, और सदस्यों की कुल संख्या 400 तक पहुँच चुकी है।'' हमारी मेनोनाइट कलीसियाएं मुसलमानों और मसीहियों के बीच में मेलमिलाप स्थापित करने के लिए सक्रियता से अपना योगदान दे रही हैं। अपने मुसलमान पड़ोसियों के साथ हमारे अनेक प्रकार से सम्बन्ध हैं, जिसमें एक सुधारवादी मुसलमान समूह भी शामिल है जिसके सदस्य हमारे द्वारा विवाद समाधान/संघर्ष निवारण और आपदा राहत पर आयोजित की जा रही विशेष कक्षाओं में भाग ले रहे हैं।

''इण्डोनिया के राष्ट्रपति इस समय पापुआ के साथ मेलमिलाप करने के प्रयास में हैं, यह हमारे देश का एक हिस्सा है जहाँ मेनोनाइट लोगों के द्वारा विवाद निवारण और मानसिक अघात से चंगाई सम्बन्धी एक कार्यक्रम चलाया जा रहा है।''

''मेरा मानना है कि कलीसिया को मुसलमानों के साथ सम्बन्ध स्थापित करना चाहिए ताकि वे सुसमाचार को हमारे जीवनों में पढ़ सकें।''

पौलुस ने पेन्नसिलवेनिया 2015 में दो कार्यशालाओं में अगुवाई किया: ''त्रासदी में चलना: आपदा पर विश्वव्यापी कलीसिया की प्रतिक्रिया'' और ''इण्डोनिशिया में विभिन्न धर्मों के बीच शान्ति वार्ता और शान्ति स्थापना।''

हार्तोनो शान्तभाव से कहते हैं, ''यहाँ पर अनेक पासबानों की उपस्थिति और यहाँ के आत्मिक वातावरण ने मुझे काफी बल प्रदान किया है।''

जर्मनी

बारबरा हेगे–गाले,

बाममेन्टल, जर्मनी के गाले की बारबरा हेगे ने सबसे पहली बार 1984 में फ्राँस के स्ट्रॉसबर्ग में आयोजित मेनोनाइट वर्ल्ड कॉन्फ्रेंस में भाग लिया था, जहाँ उन्होंने बच्चों के कार्यक्रम में अगुवाई किया। परन्तु वे अपने इस कर्तव्य को पूरा करने में इतनी व्यस्त हो गईं थी कि इस विश्वव्यापी आयोजन में वयस्कों के कार्यक्रमों के बहुत कम भागों का आनन्द ले सकीं।

''मैं नेमोनिटोबा, कनाडा के विन्नीपेग 1990 के अगले सम्मेलन में जाने की योजना बनाया, और मैंने इसमें भाग लिया – इसके बाद मैंने यह निश्चय किया कि यह मेरे लिए अन्तिम सम्मेलन न हो!''

तब से, हेगे गाले अनेक तरीकों से एमडबल्यूसी से जुड़ी हुई हैं: उन्होंने पहले जनरल कॉन्सिल, डीकन कमीशन्स, और सर्विस नेटवर्क की कोओर्डिनेटिंग कमेटी की सदस्या के रूप में एमडबल्यूसी को अपनी सेवाएं दी, और अब मिशन कमीशन्स की सदस्या के रूप में सेवाएं दे रहीं हैं।

हेगे गोले ख्राइस्टलिके डियेनस्ट की कार्यपालन निदेशिका के पद पर कार्यरत हैं, यह मेनोनाइट चर्च इन जर्मनी के द्वारा प्रयोजित एक मेनोनाइट स्वैच्छिक सेवा कार्यक्रम है। वे बाममेन्टल मेनोनाइट चर्च में एक अगुवा हैं, जहाँ ले–प्रचारक के रूप में उनका अभिषेक किया गया है।

मण्डलियों के पार एक दर्शन

वे क्यों चाहती हैं कि उन्हें एमडबल्यूसी के एक भी सम्मेलन में भाग लेने से वंचित होना न पड़े? ''क्योंकि यह विश्वव्यापी सम्मेलन हमें मेनोनाइट मण्डली के एक छोटे स्थान को पार कर एक बड़ा दृश्य देखने में सहायता करता है। यह सम्मेलन मुझे प्रेरित करता है।''

''इस बार सचमुच मैं अपनी ऐनाबैपटिस्ट विशेषताओं पर ध्यान केन्द्रित करने को प्रेरित हुई। हमारी विशिष्ट परम्पराओं में से किसी एक से प्रभावित होने के कारण नहीं, परन्तु हमारे ऐनाबैपटिस्ट विश्वास के कारण। हमें यीशु में पाई जाने वाली शान्ति का एक सशक्त बोध है। यदि यीशु पौलुस हार्तोनो जैसे लोगों को बल और साहस प्रदान करता है, तो हम भी एक मौन, और शान्तिप्रिय कलीसिया बने रहने के अतिरिक्त और भी बहुत कुछ कर सकते हैं।''

''मेरी सेवा में, अब मेरे साथ अन्य देशों से कुछ सहयोगी शामिल हैं – और यहाँ उनके साथ मेरी मुलाकात होती है।'' जर्मनी में हम इन बहनों और भाइयों के साथ मिलकर कार्य कर रहें हैं और मैं 18–20 वर्ष के लोगों को उनके देशों में सेवा परियोजनाओं में जिम्मेदारियाँ सौंप रही हूँ।

सामुदायिक आत्मिकता

हेगे गाले पेन्नसिलवेनिया 2015 से अपने साथ घर क्या ले कर जा रहीं हैं? ''जब मुझे अपने स्थान पर उपदेश देने का अवसर मिलेगा, तो यहाँ के मेरे अनुभव का किसी न किसी तरीके से इसमें एक बड़ा योगदान होगा। मैं नहीं जानती यह किस तरह से होगा। हम अपनी मण्डली में बाइबल की शिक्षाएं देते हैं और यहाँ मिले हमारे अनुभव भी इस शिक्षा का एक हिस्सा बनेंगे।

हमारे अगुवों में से एक मनन से सम्बन्धित शिक्षा देने और उसे व्यवहार में लागू करने के प्रति गहराई से समर्पित हैं, इसमें वे इस बात पर जोर देते हैं कि परमेश्वर हमसे क्या कह रहा है। परन्तु कुछ लोगों का कहना है कि यह एक बहुत व्यक्तिगत तरीका है और हमें एक सामुदायिक तरीके की आवश्यकता है।''

''पेन्नसिलवेनिया 2015 में, मुझे उस चीज़ की एक झलक दिखाई देने लगी है जिसकी हमें आवश्यकता है। इस समय इस सम्बन्ध में विचार ही मन में आ रहे हैं जो अब तक पूर्ण रूप से साकार नहीं हुए हैं। मनन पर जोर दिया जाना मुझे अच्छा लगता है, परन्तु सिर्फ यही आत्मिकता का एकमात्र मार्ग नहीं है। यह बात मुझे यहाँ स्मरण दिलाई गई।''

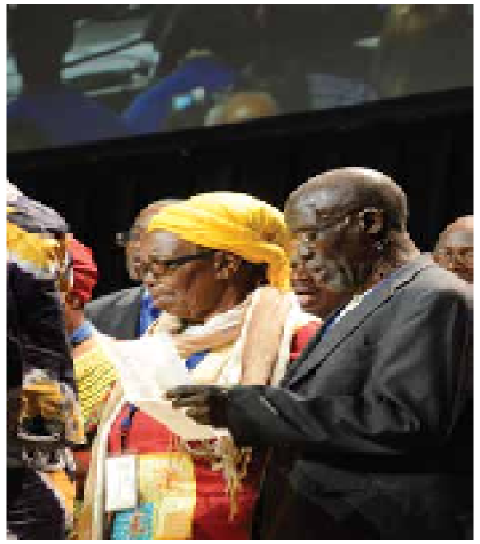

कारजुंटोमा रे एमए

जिम्बाब्वे

मथोकोजिसि नक्यूबे और मोर्गन मोया,

ब्रदरन इन ख्राइस्ट के दो सदस्य, जो जिम्बाब्वे में हाईस्कूल के प्रशासक है पेन्नसिलेवेनिया 2015 में पहली बार किसी एमडबल्यूसी सम्मेलन का हिस्सा बने।

इयूपिलेनी बाइबल स्कूल के मथोकोजिसि नक्यूबे कहते हैं कि, ''मैं संगति करने और यह सीखने आया कि दूसरे क्या कर रहे हैं। मैं सिर्फ एक जिम्बाब्वेवासी नहीं, बल्कि एक ऐनाबैपटिस्ट और एक अन्तर्राष्ट्रीय परिवार का भी सदस्य हूँ। मैं अपने भाइयों और बहनों के साथ बैठकर उनके अनुभवों के बारे में जानना चाहता हूँ और यह सीखना चाहता हूँ कि परमेश्वर उनके जीवनों में किस प्रकार से कार्य कर रहा है।''

''मित्रता–समूह (जो हर दिन सुबह की आराधना के बाद इकट्ठा होते थे) लोगों को पहचानना सीखने का एक बहुत अच्छा तरीका है। हमने बहुत से मित्र बनाएं। हमने एक दूसरे को अपने इमेल पते दिए। हम इस सहभागिता का विस्तार करने की आशा रखते हैं।''

''मुझे प्रोत्साहन मिला कि मिशनसेवा में और अधिक सक्रियता से भाग ले सकूं, और स्वयं के साथ, अपने परिवार, और जिन लोगों के साथ मैं रहता हूँ शान्तिपूर्ण सम्बन्ध कायम रख सकूं। मैं इन्हीं बातों को अपने साथ ले कर वापस जा रहा हूँ।''

''और हाँ, मुझे यह भी स्मरण दिलाया गया कि सन्देह हमेशा नकारात्मक नहीं होता। यह लाभप्रद भी हो सकता है।'' (सन्देह में और निश्चय में चलना 22 जुलाई 2015 का मूल विषय था।)

एक दूसरे से प्रभावित होना और सीखना

मोर्गन मोयो मतशाबेज़ी हाईस्कूल के प्राचार्य हैं। उन्होंने पेन्नसिलवेनिया 2015 में गीतों के द्वारा आशीषों का गहराई से अनुभव किया। ''मेरी अभिलाषा थी कि मैं यह जान सकूं कि अन्य लोग किस प्रकार से आराधना करते हैं। मैं उनसे सीखना चाहता हूँ। यह अवसर मुझे हमारे मित्रता–समूह में मिला। यहाँ मैं लोगों से प्रभावित हो कर उनसे सीख रहा हूँ।''

नक्यूबे आगे कहते हैं, ''और सुबह और संध्या की आराधना सभाओं के युवा वक्ताओं की सचमुच में सराहना करता हूँ। हम इस विचार को अपने साथ लेकर वापस जाएंगे।''

आत्मा एक एकता

''मैंने एक और बात सीखा। जब हम हैरिसबर्ग की सड़कों पर चलते थे, किसी ने हमें नमस्कार नहीं किया। परन्तु जब भी हम पेन्नसिलवेनिया 2015 के भोजन पण्डाल के भीतर प्रवेश करते थे, तो लोग हमारी ओर देख कर, मुस्कुराते थे, और हमारा स्वागत करते थे। हर बार ऐसा होता था। मैंने यहाँ कभी भी स्वयं को दूसरों से अलग महसूस नहीं किया। यहाँ पर एकता की आत्मा है।''

''एक बात जो मुझे अच्छी नहीं लगती थी वह यह थी कि जब फार्म शो कॉम्पेक्स के विश्रामकक्ष में जाने पर वहाँ लगे बड़े बड़े दपर्णों में स्वयं को देखता था। तब मैं यह पाता था कि मैं अलग हूँ। अन्यथा मैंने ऐसा अनुभव नहीं किया।''

भिन्नताओं का उत्सव मनाएं

मोया ने आगामी सम्मेलनों के लिए कुछ सुझाव भी दिया। ''क्यों न सप्ताह भर भिन्न भिन्न संस्कृतियों के भोजन परोसे जाएं? जैसे अफ्रीका डे पर अफ्रीकी भोजन। ऐसा करने में शायद कठिनाई आए, परन्तु हम ऐसा क्यों न करें!''

''इस आयोजन के लिए बहुत अच्छी योजना बनाई गई और इसे बहुत ही व्यवस्थित रूप से आकार दिया गया। तड़क–भड़क पर जोर न दिया जाना हमें बहुत पसन्द आया।''

परन्तु इसके बाद दैनिक जीवन की असमानताओं का विचार नक्यूबे के जेहन में उभर आया जब वे वापस जाने पर जीवन की वास्तविकताओं की ओर ध्यान करने लगे। ''यह सच है कि इमेल हम तक पहुँच नहीं पाते। सारी जानकारियों हमें नहीं मिल पातीं। ग्रामीण क्षेत्रों में, सन्देश प्राप्त करना कठिन है। हम ऐसी आशा करते हैं कि हमारी नई मित्रता और सम्पर्क किसी न किसी रूप में कायम रहेंगे।''

संयुक्त राज्य अमरीका

टाड्ड फ्रिज़न

टाड्ड फ्रिजन यूएसए पेन्नसिलवेनिया के इस्ट चेस्टनट, स्ट्रीट मेनोनाइट चर्च, लॉन्कास्टर के पासबान हैं। पेन्नसिलवेनिया 2015 के समापन के एक माह पश्चात, उन्होंने सम्मेलन के अपने सप्ताह भर के अनुभवों पर प्रकाश डालते हुए कुछ बातों को हमारे साथ बांटा।

''हमारी कलीसियाएं – और हमारे जवान – मसीह की देह की इस विश्वव्यापी झलक, और एक स्थानीय कलीसिया की तुलना में एक बहुत बड़े समूह के एक भाग के रूप में मिलने वाले अनुभव के बिना कैसी होंगी/होंगे?''

''इस तरह का एक सप्ताह हमारे प्रान्तवाद और अमरीकी विशिष्ठता के बोध को तोड़ देता है। यह आयोजन इस प्रकार की मानसिकताओं के विरुद्ध एक प्रतिरोधक है, यद्यपि हम अब भी इनसे प्रभावित हैं।''

युवाओं पर असर

''इन सम्मेलनों के द्वारा हमारे युवाओं के व्यक्तित्व विकास पर पड़ने वाले भारी भरकम असर के महत्व को हम कम नहीं आंक सकते। मैंने 1984 में स्ट्रॉसबर्ग के सम्मेलन में भाग लिया तब मेरी आयु 20 वर्ष की थी। गीतों व आराधना ने मुझ पर एक गहरी छाप छोड़ा। इसलिए मैं अपनी मण्डली का आभारी हूँ कि उन्होंने पेन्नसिलेवनिया 2015 में अपने युवाओं को भेजने के लिए निवेश किया। यह उनके लिए एक सकारात्मक अनुभव था।''

अनन्त वास्तविकताओं से मांजे गए

जोनाथन चार्ल्स

''सुबह और संध्या की आराधना सभाओं में जिस तरह से हमने एक महाद्वीप से दूसरे महाद्वीप की यात्रा की वह मुझे बहुत अच्छा लगा। स्वर्ग हमारी कल्पना से अधिक समृद्ध और विविध होगा। विश्वव्यापी कलीसिया के साथ इस अनुभव के द्वारा हम अनन्त वास्तवकिताओं से मांजे जाते हैं।''

''हम में से जितने लोग कैनसास शहर भी गए थे (2015 के मेनोनाइट चर्च यूएसए सम्मेलन का आयोजन स्थल), उन्हें पेन्नसिलवेनिया 2015 इतना अलग क्यों लगा? पेन्नसिलवेनिया 2015 में, आराधना, अपनी गवाहियों को एक दूसरे से बाँटने, संगति, और सेवा पर ध्यान केन्द्रित किया गया। हम वहाँ सिर्फ इसलिए गए थे कि मसीह में अपने केन्द्र के चारो ओर एक साथ इकट्ठा होवें।

और मैंने यह सीखा कि हमारी महान विविधता के मध्य, शायद यह सर्वोत्तम होगा कि हम साथ आ कर परमेश्वर की आराधना से आरम्भ करे, और एक दूसरे की सेवा करे और अपनी गवाहियों व अनुभवों को बाँटे, बजाए कि अपनी भिन्नताओं पर ध्यान केन्द्रित करने या अपनी असहमतियों पर वाद विवाद करने के।''

मन में निरन्तर गूंज रहीं प्रतिध्वनियाँ

''सुबह की आराधना सभाओं के युवा वक्ताओं की आवाज़ें हमेशा मेरे जेहन में बसी रहेंगी।''

''मैंने पवित्रशास्त्र के कुछ स्थलों पर अनेक नए और मूल्यवान विचार सुने।''

''पेन्नसिलवेनिया 2015 सम्मेलन के समापन पर, रविवार के दिन हमने अन्तर्राष्ट्रीय पाहुनों का अपनी मण्डली में स्वागत कर एक बड़ी आशीष का अनुभव किया। तब हम सब – वे भी जो सम्मेलन में यहाँ इकट्ठा नहीं हुए – यह अनुभव कर सकते हैं कि हर एक विश्वासी के पास बहुमूल्य समझ व विचार हैं जिसे वह दूसरों के साथ बांट सकता है और उसके जीवन में कुछ गम्भीर त्रुटियाँ भी हैं जिन पर उसे प्रबल होना है।''

सदा बनी रहने वाली भेंट

''इन विश्वव्यापी विश्वासियों के साथ मेरी सहभागिता ने उन्हें मेरा आत्मिक व भावनात्मक वार्तालाप साझेदार बना दिया, भले ही मैं उनके साथ बात न कर पा रहा हूँ। मुझे यह बोध हो जाता है कि वे क्या सोचते हैं, वे क्या कहेंगे या क्या करेंगे, और मैं इसमें से अपने लिए काफी कुछ ग्रहण कर सकता हूँ।''

[redacted]

टॉड्ड फ्रिज़न की तस्वीर मर्लिन हाय द्वारा।

''मैं जो कुछ कर रहीं हूँ वह मैं स्वयं नहीं कर रही हूँ''

मर्ले गुड

रबेका ओसिरो केन्या, मेनोनाइट वर्ल्ड कॉन्फ्रेंस की नई उपाध्यक्षा

फिलिस पेलमान गुड

केन्या के नैराबी की रबेका ओसिरो ने अपने जीवन के उन सारे अनुभवों को समेट कर जिनके द्वारा उनके विश्वास की परख हुई और उन्हें ज्ञान मिला मेनोनाइट वर्ल्ड कॉन्फ्रेंस (एमडबल्यूसी) की उपाध्यक्षा के रूप में अपनी नई भूमिका में प्रवेश किया है।

रबेका केन्या मेनोनाइट चर्च की पहली अभिषिक्त महिला हैं (अगस्त 2008में), परन्तु कलीसिया की प्रतिलगाव उन्हें बचपन से है।

उनके पिता एक मेनोनाइट मण्डली के अगुवे थे, और रबेका स्मरण करते हुए बताती है कि वह अपने पिता के साथ कलीसियाई कार्यक्रमों के अवसर पर सबके लिए भोजन लेकर जाती थी और जब उनके पिता कलीसिया के सदस्यों और पड़ोसियों से मुलाकात करने को जाते थे तब वह भी उनके साथ जाया करती थी। ''एंगलिकन चर्च हमारे क्षेत्र की सबसे बड़ी और प्रमुख कलीसिया थी, परन्तु बहुत से सदस्य कलीसिया को अपना दसवांश चुका पाने की दशा में नहीं थे। इसलिए जब उनके परिवारों में कोई मृत्यु होती थी, तो कलीसिया दफन क्रिया सम्पन्न करने से मना कर देती थी।

चूंकि मेरे पिता दूर दूर जा कर लोगों की सुधि लेते थे, ऐसे परिवार अक्सर उन्हें दफन क्रिया सम्पन्न करने का निवेदन किया करते थे। मैं उनके साथ जाना पसन्द करती थी, कि लोगों को ढाढ़स दूं, गीत गाऊं, और उनके लिए कड़क चाय बनाऊं।

लोगों से मिलने जाने, उनकी बातें सुनने, पहुनाई करने, और खुलेपन की हमारी सरलता के कारण लोग हमारी मण्डली की ओर खिंचे चले आए। और मैं भी मण्डली की ओर खिंची चली गई।

जब मैं अपने हाई स्कूल के तीसरे और चौथे वर्ष में थी, मैं शनिवार की अपनी दोपहर बाहर खुले स्थान में सुसमाचार प्रचार करने में व्यतीत करती थी और आने वाले सब लोगों के साथ संगति किया करती थी।''

रबेका की माता ने उन्हें बाइबल का ज्ञान देने और कलीसिया में गाए जाने वाले गीतों को सिखाने की ओर विशेष ध्यान दिया। रबेका की माता ने उसकी ओर इतनी ध्यान क्यों दिया यह आज भी उसके लिए एक रहस्य है।

''मैं उनकी तीसरी पुत्री थी, और सबसे छोटी भी नहीं थी क्योंकि मेरी माता की दस सन्तानें थी। परन्तु उन्होंने मुझे बताया था कि मेरे जन्म से पहले ही उन्होंने मुझे दसवांश के रूप में परमेश्वर को दे दिया था। जब मैंने पढ़ना सीखा, तो मेरी माता ने मुझे एक बाइबल दिया। जब हम साथ मिलकर कार्य करते तब मेरी माता मुझे बाइबल की एक कहानी सुनाती थी, या मुझे कोई स्थल या पद को पढ़ने का सुझाव देती थी। उसके बाद वह एक मिलता जुलता गीत सिखाती थी। इस तरह से, उन्होंने मुझे और मेरे भाई बहनों को कलीसिया से जोड़ा।''

यद्यपि रबेका को माता और पिता दोनों ने सख्त अनुशासन में अपने आधीन रखा था, परन्तु जब वह विवाह के लिए स्वयं को तैयार कर रही थी, तो रबेका ने जोर दिया कि वह इस विषय पर स्वतंत्र हो कर निर्णय लेना चाहती हैं। ''उन दिनों जोड़ियों अक्सर मौसी के द्वारा तय की जाती थी। परन्तु अपना जीवनसाथी मैंने स्वयं चुना। अक्सर उनकी कलीसिया और मेरी कलीसिया गीत प्रतियोगिता और धनसंग्रहण में एक दूसरे से होड़ लगाते थे!''

रबेका और जोआश ओसिरो का विवाह 1981 में हुआ। उनके पाँच बच्चे हैं जो अब बड़े हो चुके हैं। जोआश केन्या मेनोनाइट चर्च (केएमसी) के एक बिशप हैं।

अभिषेक लूंया नलूं?

रबेका ने अभिषेक पाने के लिए कोई मुहिम नहीं छेड़ा। परन्तु स्त्रियों को अभिषेक किये जाने सम्बन्धी विषय काफी समय से उनके मन में था।

''जैसे जैसे मैं बढ़ती जा रही थी, मैंने स्त्रियों को भी सशक्त हो कर खड़ा होते देखा। लोग मेरे पिता से कहा करते थे, 'हमें एक कलीसिया चाहिए।' जब एक कलीसिया स्थापित होती, तो एक अगुवे की आवश्यकता होती है, इसलिए लोग एक पुरुष को इसके लिए ढूंढ़ते हैं। वे किसी का भी अभिषेक कर देते हैं जिनके पास कोई दर्शन नहीं होता – और कलीसिया शीघ्र ही निष्क्रिय हो जाती है।

जब मैं हाईस्कूल में थी, मैं अपने पिता से यह प्रश्न किया करती थी, 'मेनोनाइट कलीसिया एक स्त्री को पासबान नियुक्त करने के सम्बन्ध में क्या कहती है?'

मेरे पिता ने हमेशा से ही स्त्रियों को अभिषेक देने का समर्थन किया था और अत्यंत विवादास्पद स्थिति में केन्या में किसी स्त्री का अभिषेक करने वाले वे पहले बिशप थे (1994 में)। यह सुखद है कि जब 49 वर्ष की आयु में मेरा अभिषेक हुआ तो वे यह अवसर देखने को जीवित थे। उनका प्रोत्साहन पा कर मैं अपने आप को धन्य समझती हूँ।

एक समय, मेरे मन में यह विचार आने लगा था कि मुझे अभिषेक लेने से मना कर देना चाहिए क्योंकि इसके विरोध में काफी कुछ चल रहा था। मैंने कभी भी अभिषेक की आवश्यकता को बहुत अधिक महसूस नहीं किया, परन्तु मैं जानती थी कि अन्य अगुवा स्त्रियों के लिए, उनके अधिकार को मान्यता दिए जाने हेतु यह महत्वपूर्ण है।''

वर्तमान में रबेका नैरोबी के इस्टलेह फैलोशिप में पासबान हैं। ''केन्या मेनोनाइट चर्च के स्वामित्व वाले एक स्थान पर हमारी साप्ताहिक आराधना में 40–70 लोग उपस्थित होते हैं, यह आराधना रविवार को सुबह 10:00 बजे से दोपहर 2:00 बजे तक संचालित की जाती है। हमारे आसपास के लोग निम्नमध्यम वर्ग, और अलग अलग देशों के हैं और हमारा यह पड़ोस कुलीन वर्ग के लोगों से भरता जा रहा है।'' सबसे अधिक मुसलमान लोग निवास करते हैं जो सुधारवादी विचारधारा को मानते हैं।

''हमारे सदस्य यहाँ के मूलनिवासी हैं, और इन में से अनेक लोग स्थानीय व्यापारियों के लिए कार्य करते हैं जो अक्सर उन्हें कलीसिया के कार्यक्रमों में शामिल होने के लिए छुट्टी नहीं देते।''

क्वायर अभ्यास के माध्यम से एकात्मता

इस्टलेह फैलोशिप ने अपने समूह के एक हिस्से को पेन्नसिलवेनिया 2015 में केन्या मेनोनाइट चर्च क्वायर के सदस्यों के रूप में भेजने को तैयार किया था, उन्हें इस आयोजन में अपनी प्रस्तुति देने का अवसर दिया गया था। परन्तु क्वायर के सिर्फ पाँच लोगों को वीसा मिल सका (रबेका और उनके पुत्र को मिला, परन्तु पुत्री को नहीं), तो सबको बड़ी निराशा हुई।

''हमें संगीत का अभ्यास अपने घर में करना पड़ता था क्योंकि उस चर्च भवन का स्थान हमारी आराधना के समय को छोड़ बाकी समय के लिए उपलब्ध नहीं हो पाता। लोग सीधे अपना कार्य पूरा कर अभ्यास के लिए आते थे, और कुछ को तो रात भर हमारे घर पर ही ठहरना पड़ता था क्योंकि उनके पास ठहरने के लिए और कोई दूसरा स्थान नहीं था।''

''हमारी कलीसिया की कुछ महिलाओं के पति घर को अन्दर से बन्द कर सो जाते थे क्योंकि क्वायर अभ्यास देर रात तक चलता रहता था। तौभी वे इसमें हिस्सा लेना चाहती थीं क्योंकि सिर्फ गीतों के द्वारा ही वे एक दूसरे के साथ अपनी एकात्मता को व्यक्त कर सकती थीं।

इसलिए जब हमें यह पता चला कि उन में से अधिकांश को वीसा नहीं मिल सका, तो मेरे मन में पहले यह विचार आया कि मैं भी घर पर रूक कर उनका साथ दूं। परन्तु बाद में मैंने यह महसूस किया कि यदि मुझे अवसर मिला है तो मुझे जाना चाहिए।''

शान्ति के लिए कार्य

परिवार के जीवनव्यापन में अपना योगदान देने के लिए, रबेका सप्ताह में दोबार एक जेसुइट सेमीनरी में इस्लाम पर व्याख्यान देती है। उन्होंने केन्या के सेन्ट पॉल्स यूनिवर्सिटी से इस्लाम पर अध्ययन में एम.ए. किया है और बेयरूठ विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित शरिया पर वाद–विवाद से सम्बन्धित शोध कार्य में भाग लिया है।

केन्या मेनोनाइट क्वायर के सिर्फ पाँच सदस्यों को पेन्नसिलवेनिया 2015 के लिए अमरीका का वीसा मिल सका। रबेका ओसिरो दाएं से दूसरी।

रबेका अंग–भंग कर दिए जाने के बाद जीवित बच गई स्त्रियों की सहायता करने में भी लगी हुई हैं। ''यह एक छोटी सी संस्था है, और हम शान्तिपूर्ण तरीके से अपना कार्य करते हैं।'' चूंकि इस प्रथा की जड़ गहराई से परम्परा में गड़ी हुई है इसलिए क्षति पहुँचाने वाले पुरुष अक्सर उस विभिषिका के लिए मानसिक रूप से तैयार नहीं रहते जो उनके द्वारा पहुँचाई जाती है।

''जब हम इन दोषियों के पास जाते हैं जो अपनी इस गलती को मान लेते हैं, तो अक्सर वे सीधे सीधे यही कहते हैं कि वे ऐसा फिर से कभी नहीं करेंगे। हम चुपचाप अपना कार्य करते हैं। हम उन्हें सामान्य दशा में लौटाना चाहते हैं, इसलिए हम सम्बन्धों को बनाने का कार्य करते हैं।''

''मेरा जीवन असफल योजनाओं से भरा हुआ है!''

यह स्त्री किस तरह से अपने जीवन में इन सारी जिम्मेदारियों को सम्भालती और अपेक्षाओं को पूरा करती है?

''मेरा जीवन असफल योजनाओं से भरा हुआ है!'' रबेका बड़ी जोर से हँसते हुए ऐसा कहती हैं। ''मेरा नाती हमारे साथ रहता है, और हमारे बच्चों के परिवार बीच बीच में हमारे साथ आकर कुछ समय के लिए रहते हैं।''

एमडबल्यूसी के अगुवे भोजन के लिए पंक्ति में खड़े हो कर प्रतीक्षा करते हैं

रबेका एमडबल्यूसी के फेथ एण्ड लाइफ कमीशन की सदस्या थीं, अब एमडबल्यूसी की उपाध्यक्षा बनने पर वे इस पद से स्वयं को मुक्त करेंगी। वे यह पूरी तरह से मानती हैं कि विश्वव्यापी देह महत्वपूर्ण और आवश्यक है।

''एमडबल्यूसी का मुख्य कार्य संगति और सम्पर्क कायम रखना है। हम अपनी बातों को एक दूसरे के साथ बांटते हैं। हम एक साथ आ कर यह अनुभव करते हैं कि हम एक हैं।

हम वर्ग और प्रतिष्ठा से पार जा कर एक दूसरे से शक्ति प्राप्त करते हैं। एमडबल्यूसी मुझे साहस प्रदान करता है। मेरा मानना है कि मैं सहीं स्थान पर हूँ। सम्मेलन में यहाँ जब मैं एमडबल्यूसी के अगुवों, पासबानों, और कलीसिया के अन्य अगुवों को देखती हूँ कि वे भोजन के लिए सब के साथ पंक्ति में खड़े हो कर प्रतीक्षा करते हैं, तो मैं भावविभोर हो उठती हूँ। अन्य स्थानों में, लोग उनके लिए भोजन लेकर आते हैं और वे पंक्ति में खड़े होने की आवश्यकता महसूस नहीं करते!

अपने देश में जब मैं महिलाओं को कागज व गत्तों के बने घरों में रहते देखती हूँ, जो अक्सर नालियों के ऊपर बनाए गए होते हैं, और फिर वे मेरे लिए कड़क चाय तैयार करती हैं (शायद चायपत्ती खरीदने के लिए किसी से पैसे उधार ले कर), तो मैं अभिभूत हो जाती हूँ।

कभी कभी मैं स्वयं में निर्बलता का अनुभव करती हूँ। क्या मैं वास्तव में ठीक रास्ते पर बढ़ रहीं हूँ? परन्तु मैं जो कुछ कर रहीं हूँ स्वयं नहीं कर हूँ।

मुझे स्मरण है कि मेरी माँ कहा करती थी, 'अपने शत्रुओं से प्रेम रखो।' मेरा विचार है कि परमेश्वर मेरे भीतर यही कार्य कर रहा है। मैं सिद्ध नहीं हूँ। मैं भी खीज उठती हूँ।

परन्तु मैंने यह पाया है कि समय के साथसाथ, वे लोग जिन्होंने हमारे विषय में बुरा कहा, जिन्होंने कलीसिया के लिए महत्वपूर्ण समझी जाने वाली बातों का विरोध किया, और ये सारे कटु मतभेद धीरे धीरे सुलझ जाते हैं – या कम से कम हमारे बीच में अवरोध नहीं बनते।''

यह स्त्री अवश्य ही मेनोनाइट वर्ल्ड कॉन्फ्रेंस नेतृत्व में काफी कुछ ले कर आएगी।

फिलिस पेलमान गुड एक लेखक और मेनोनाइट वर्ल्ड कॉन्फ्रेंस के लिए एक सम्पादक हैं

जोनाथन चार्ल्स

सेवक–अगुवा का अर्थ है रजिस्ट्रेशन के लिए, भोजन के लिए पंक्ति में खड़े हो कर अपनी बारी की प्रतीक्षा करना – संगति, पुराने मित्रों से मुलाकात और नए मित्रों से परिचय का एक सुअवसर।

अब तक की तुलना में अभी सबसे अधिक एकता

मर्ले गुड

अल्फ्रेड न्यूफेल्ड, एमडबल्यूसी के फेथ एण्ड लाइफ कमीशन केअध्यक्ष द्वारा विश्वव्यापी मेनोनाइट विश्वास समुदाय की स्थिति पर चिन्तन

फिलिस पेलमान गुड

अल्फ्रेडन्यूफेल्ड, एकधर्मज्ञानी, इतिहासकार, और एक विचारक तत्वज्ञानी है, वे इन दिनों दोलीक पर ध्यान केन्द्रित किए हुए हैं: पिछले मेनोनाइट वर्ल्ड कॉन्फ्रेंस सम्मेलनों की ''कार्यवाहियाँ'' और सोशल मीडिया।
असुनिशियन, पैरागुवे के न्यूफेल्ड यूनिवर्सिडैड इव्हेंजलिका डेल पैरागुए के अध्यक्ष के रूप में अपने कर्तव्यों से सप्तमवर्षीय अवकाश पर हैं, और अपना यह समय रेजेन्सबर्ग, जर्मनी में व्यतीत कर रहे हैं।
वे ''बिग बुक्स ऑफ प्रोसिडिंग्स'' का अध्ययन कर रहे हैं जो पहले 10 मेनोनाइट वर्ल्ड कॉन्फ्रेंस (एमडब्यूसी) सम्मेलनों (1925 से 1978) के बाद तैयार की गई है, ताकि यह जान सकें कि इन सम्मेलनों में किन किन बड़े मुद्दों पर ध्यान केन्द्रित किया गया था।

वे ''सोशल मीडिया'' का भी अध्ययन कर रहे हैं, विशेष रूप से ''नव–केल्विनवादी प्रचारकों'' (एल्फ्रेड के द्वारा उन्हें दिया गया नाम) के द्वारा की गई धर्मवैज्ञानिक व्याख्याओं का, जिनका अनुसरण, एल्फ्रेड के अनुसार, वर्तमान में बहुत से मेनोनाइट युवा कर रहे हैं।

न्यूफेल्ड ने, जो इस समय एमडबल्यूसी के फेथ एण्ड लाइफ कमीशन के अध्यक्ष है, हाल ही में, 16वें एमडबल्यूसी सम्मेलन के तहत अमरीका के हेरिसबर्ग, पेन्नसिलवेनिया में सम्पन्न जनरल कॉउन्सिल ऑफ मेनोनाइट वर्ल्ड कॉन्फ्रेंस को सम्बोधित किया। उन्होंने इस विषय पर अपनी बातें सामने रखीं, ''बीते समयों में हमने अपने विवादों का निपटारा किस प्रकार से किया?'' उनके विचार से यह विषय बहुत से स्थानों के ऐसे मेनोनाइट लोगों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है जो इस बात को लेकर चिन्तित हैं कि क्या विभाजन और विघटन भविष्य में भी जारी रहेंगे।

न्यूफेल्ड कहते हैं, ''जब मैं हमारे ऐनाबैपटिस्ट भाईचारे के इतिहास का अध्ययन करता हूँ और मेनोनाइट वर्ल्ड कॉन्फ्रेंस के संस्थापक माता और पिता के सराहनीय जीवनों की ओर ध्यान देता हूँ, तो उनके द्वारा विवादों का निपटारा कर परिवार को साथ बान्धे रखने के तरीकों में अपने लिए ज्ञान की बहुत सी बातें सीखता हूँ।''

यद्यपि इतिहास के प्रमुख और बड़े विवादों में एक भी पूरी तरह से समाप्त नहीं हुआ, किन्तु न्यूफेल्ड कहते हैं, ''मैं उत्साहित हूँ। वर्तमान में विश्वव्यापी घराना में पहले की तुलना इस समय सबसे अधिक एकता पाई जाती है, यद्यपि इस समय 100 अलग अलग संस्कृतियों को एक साथ लेकर ऐसा कर पाना 90 वर्ष पहले की तुलना में काफी कठिन है जब हम सब काफी हद तक समान हुआ करते थे।''

विश्वव्यापी घराना में वर्तमान संघर्ष

न्यूफेल्ड हमें कारण बताते हैं कि क्यों तौभी हमें सचेत और दूसरों का सहयोग करते हुए सम्पूर्ण विश्वव्यापी संगति में एक साथ बने रहना है। ''निम्नलिखित झंझकोरने वाली बातों की ओर हमें ध्यान देना आवश्यक है:

''इस्लामिक आतंकवाद के नए क्रूर कुकृत्य ***सुसमाचार पर आधारित शान्ति के सम्बन्ध में मेनोनाइट विश्वास की गुणवत्ता के सामने एक महत्वपूर्ण परीक्षा है।"***

हमारे अगुवे कौन हों और कौन हमारे धर्मविज्ञान को दिशा प्रदान करें?

''पैरागुवे, जर्मनी, और कनाडा के बहुत से भागों में (संसार के ऐसे स्थान जिनसे मैं सबसे अधिक परिचित हूँ) हमारे 60 प्रतिशत युवा अपनी धर्मवैज्ञानिक प्रेरणा उत्तर अमरीका के अनेक नव–केल्विनवादियों से प्राप्त कर रहे हैं जिनकी सोशल मीडिया में एक सशक्त उपस्थिति हैं।''

ये युवा हल्के और दक्षिणपंथी समझ के पीछे नहीं दौड़ रहे हैं। उन्हें एक सीधा और ठोस बाइबल ज्ञान चाहिए। परन्तु वे ऐसी आवाजों को सुन रहे हैं जो स्त्रियों को अगुवापद दिए जाने का सख्त विरोध करती हैं और जो ये कहते हैं कि बुरे का सामना न करने की आत्मिक नैतिकता जीवन की एक समझौतावादी मानसिकता है।''

''मुझे यह स्पष्ट दिखाई देता है कि ये बातें न सिर्फ हमारे युवाओं को उलझा दे रही हैं, बल्कि इससे ऐसे देशों में हमारी महिला पासबानों का महत्व भी कम हो सकता है जहाँ उन्हें अधिक संस्थागत समर्थन प्राप्त नहीं है।''

''हमारी ऐनाबैपटिस्ट पहचान पर मण्डरा रहे ये खतरे बहुत ही समझदारी भरी और अनुकूल चिन्ता की बुलाहट दे रहे हैं।''

कौन कौन सी प्राथमिकताएं यह तय करती हैं कि हमारा धन कहाँ जाए?

''कुछ लोग चाहते हैं कि हमारी सारी भेंट मिशन कार्यों और कलीसिया स्थापना के लिए उपयोग में लाई जाएं।''

''क्या कलीसियाओं को अपना कार्य करने के लिए सरकार से पैसा स्वीकार करना चाहिए? यदि हाँ, तो कितना, या फिर खर्च का कितना हिस्सा?''

''जिन्हें मिशन कार्य में रुचि है वे कभी कभी यह प्रश्न करते हैं कि क्या सेवा संस्थाओं और नेटवर्कों को या हमारे स्कूलों को इस 'सरल धन' को स्वीकार करने चाहिए जब मिशनों को उस प्रकार की फण्डिंग नहीं की जाती।''

''एक कलीसिया के रूप में, हमने 500 वर्ष पूर्व सरकार द्वारा प्रयोजित किया जाना अस्वीकार कर दिया था? यही ऐनाबैपटिस्टवाद का हृदय है। इसे वर्तमान में हम किस तरह से कायम रख सकेंगे?''

''एमडब्यूसी के आरम्भिक सम्मेलनों की कार्यवाहियों को पढ़ते समय, मुझे इन के द्वारा यह स्मरण दिलाया गया कि यह नाज़ीकाल के समय से मिलता जुलता एजेंडा है, जिसने मेनोनाइट लोगों के सामने उन्हें रूस से बाहर निकलने में सहायता करने का प्रस्ताव रखा था।''

यह स्पष्ट है, कि मेनोनाइट लोगों के इन आरम्भिक ''विश्वव्यापी'' सम्मेलनों में उन्हें घेरे मुद्दों के प्रति काफी ईमानदारी बरती गई।

अतीत के आधार पर आशान्वित होने के कारण

न्यूफेल्ड ऐसा क्यों सोचते हैं कि विश्वव्यापी मेनोनाइट परिवार संख्या, ताकत, और एक दूसरे का सहयोग करने में बढ़ गया है।

''निश्चय ही परमेश्वर के अनुग्रह, प्रभु यीशु के प्रभुत्व और हमारी कलीसिया में उपस्थित पवित्र आत्मा की चमत्कारिक गोंद के माध्यम से।''

वे आगे कहते हैं कि इसके अतिरिक्त तीन और कारण हैं:

. ''अब तक, परमेश्वर ने हमें बहुत ही विश्वासयोग्य और वरदान प्राप्त अगुवे प्रदान किया।''

. ''संसार के दक्षिण भाग में मिशनों, और नई कलीसियाओं में बढ़ोतरी।

''मसीह केन्द्रित संगतियों ने हमारी सहायता की हम अपने समान आधार पर ध्यान केन्द्रित करें, अपने साझा विश्वास को दृढ़ता प्रदान करें और एक दूसरे के प्रति अनुग्रहकारी और धीरजवन्त बनें।''

दक्षिण विश्व की कलीसियाओं के लिए कुछ सुझाव

दक्षिण विश्व के यह धर्मज्ञानी/इतिहासकार/तत्वज्ञानी दक्षिण गोलार्ध के अपने भाई बहनों को विश्वास के विश्वव्यापी परिवा[र] में उनकी भूमिका और स्थान के सम्बन्ध में सुझाव दे रहे हैं:

1. ''उत्तर की कलीसियाओं को हमारे सहयोग और हमार[ी] सहानुभूति की आवश्यकता है। परन्तु हमारे अभिमान की नहीं।

2. ''यह उचित समय नहीं है कि दक्षिण की कलीसिया[एं] उत्तर की कलीसियाओं के विरुद्ध टीका टिप्पणी करें।''

3. ''मिशन एक दो तरफ जाने वाला रास्ता है, जिसमें हमार[ी] पुरानी कलीसियाएं अब ऐसे स्थिति की ओर जा रहीं है जहाँ उ[न्हें] असुखद आक्रमण/अलोचना झेलना पड़ेगा – सौ वर्षों तक दक्षिण की हमारी कलीसियाएं इस स्थिति में रहीं। आइये हम सचेत औ[र] दीन बने।''

फिलिस पेलमान गुड मेनोनाइट वर्ल्ड कॉन्फ्रेंस के लेखक और सम्पादक हैं।

न्यूफेल्ड की प्रयोगशाला

संसार के उस हिस्से में सप्तमवर्षी अवकाश बिताने के दौरान जहाँ सबसे पहले एमडब्लयूसी के सम्मेलन सम्पन्न हुए, न्यूफेल्ड पहली 10 एमडबल्यूसी सम्मेलनों में से प्रत्येक के बारे में व्यवस्थित रूप से निम्नलिखित बातों का अध्ययन करते हुए उन्हें लिख रहे हैं:

1. उस समय संसार की परिस्थिति।
2. उस समय सम्पूर्ण मेनोनाइट परिवार का जीवन।
3. उस विशेष आयोजन के लिए सम्मेलन का समग्र कार्यक्रम।
4. धर्मविज्ञान और आत्मिकता का स्वाद, विवाद, और उस आयोजन के परिणाम
5. प्रत्येक सम्मेलन में शामिल 10 अगुवों का जीवन परिचय।

मर्ले गुड

अल्फ्रेडन्यूफेल्ड और रेनर बुरखार्ट, जर्मनी इथोपिया 2010 के सम्मेलन की एक सभा के दौरान किसी बात पर हँसते हुए।

मेनोनाइट ढांचे और आचरण पर न्यूफेल्ड के अवलोकन

1. ''यह परमेश्वर के अनुग्रह का एक बड़ा आश्चर्यकर्म हो सकता है कि हमारा विश्वव्यापी, किन्तु बहुत ही विविध, समुदाय इतनी लम्बी अवधि तक एक बने रहने के तरीके निकाल सका है। हमारे धर्मविज्ञान और हमारे ढांचे यहाँ सहायक नहीं है। कलीसिया अधिकार के क्षेत्र में विश्वस्तर पर कोई केन्द्र नहीं है, क्योंकि प्रत्येक राष्ट्र की कलीसियाएं (कॉन्फ्रेंस) स्वशासी हैं। भूतकाल में या वर्तमान काल में भी हमारे विश्वास का एक एकीकृत अंगीकार नहीं है।''

2. ''अतीत में ऐसे समय रहे हैं जब बड़े लोग और 'प्राचीन' एक सशक्त अधिकार रखते थे और वे हमारी पहचान के प्रतिनिधि मानते जाते थे। वर्तमान में, हम सब इस बात से वाकिफ़ हैं कि यदि हम अपने धर्मविज्ञान और अपनी पहचान को उभरते हुए और डिज़िटलाइज़्ड पीढ़ी के लिए प्रासंगिक रूप में नहीं ढालेंगे, तो फिर मेनोनाइट वर्ल्ड कॉन्फ्रेंस का कोई भविष्य नहीं रह जाएगा।'' और न इसकी सदस्य कलीसियाओं का।

3. ''जब जब सताव और शोषण समाप्त हुए हैं, मेनोनाइट लोगों ने अपने आसपास की राष्ट्रीय संस्कृति के साथ बहुत ही सशक्त रूप में अपनी एकात्मता प्रगट की है। एक झटके में संसार से अलग हो जाना एक जटिल विषय बन जाता है।''

विश्व भर की ऐनाबैपटिस्ट कलीसियाएं एक साथ मिल कर परमेश्वर की आराधना करेंगी

विश्व सहभागिता रविवार

24 जनवरी 2016

सहायक सामग्री उपलब्ध है
www.mwc-cmm.in/wfs
अपनी मण्डली को भाग लेने के लिए न्यौता दें

जीवायएस ने अपने वरदानों के उपयोग के द्वारा संसार पर अपनी छाप छोड़ने हेतु एक सशक्त बुलाहट दिया

विश्व भर के ऐनाबैपटिस्ट युवाओं ने शिखर सम्मेलन में मिलकर सीखा और संगति किया

एलिना सिप्तादी–पेरकिन्स

मसायाह कॉलेज, मेकानिक्सबर्ग, पेन्नसिलवेनिया में आयोजित मेनोनाइट वर्ल्ड कॉन्फ्रेंस (एमडबल्यूसी) के तीन दिवसीय ग्लोबल यूथ समिट (जीवायएस) का समापन रविवार 19 जुलाई 2015 को अपने वरदानों का उपयोग करने के द्वारा संसार पर छाप छोड़ने की सशक्त अभिलाषा के साथ हुआ।

''बाँटने की बुलाहट: मेरे वरदानों को, अपने वरदानों को'' का उद्देश्य लेकर 42 प्रतिनिधियों और 400 प्रतिभागियों ने मिलकर इस विषय पर चर्चा की कि वे विश्वव्यापी कलीसिया को क्या देना चाहते हैं। तीन दिनों तक, उन्होंने अपनी उपस्थिति, अपने भण्डारीपन, अपनी सेवा, समानुभूति, रचनात्मकता, ज्ञान, नेतृत्व, विभिन्न मतों को स्वीकार करने की क्षमता, तकनीक का प्रयोग, जैसे वरदानों को दूसरों के साथ बाँटा। उन्होंने इस बात पर चर्चा करने में भी काफी समय दिया कि वे इन वरदानों को किस प्रकार से परमेश्वर के राज्य के लिए उपयोग में ला सकते हैं।

लैटिन अमरीका के प्रतिनिधि और यंग ऐनाबैपटिस्ट (याब्स) कमेटी के अध्यक्ष रोड्रिगो पेड्रोज़ा कहते हैं ''जीवायएस के प्रतिनिधि पहले से ही अपनी कलीसियाओं और अपने समुदायो में बहुत अच्छा कार्य कर रहे हैं। परन्तु वरदानों और बुलाहट के विषय तीन दिन के अन्तरसांस्कृतिक संवाद और बाइबल अध्ययन के बाद वरदानों को उपयोग करने के सम्बन्ध में उनकी समझ और उनका भरोसा बढ़ा है।''

पेड्रोज़ा कहते हैं, ''अब उनके सामने यह कार्य है कि वे इस सन्देश और उर्जा को बाँटे।''

''हम ऐसी आशा करते हैं कि उनकी कलीसिया के अगुवे उन्हें सहयोग देंगे कि वे आत्मिकता और नेतृत्व क्षमता में बढ़ते जाएं। कलीसिया की विभिन्न पीढ़ियों को मिले वरदान परमेश्वर के राज्य के लिए एक सशक्त गवाही सिद्ध होंगे।''

युवाओं द्वारा इन वरदानों को कलीसिया के लिए भेंट के रूप में चढ़ाए जाने पर एमडबल्यूसी कोइनोनिया डेलीगेशन के द्वारा अत्यंत सराहना की गई, इस डेलीगेशन में एमडबल्यूसी के नए अध्यक्ष नेल्सन क्रेबिल, कोषाध्यक्ष अर्नेस्ट बेर्गन, और जनरल सेक्रेटरी सीज़र गार्सिया शामिल हैं। सीज़र गार्सिया कहते हैं, ''परमेश्वर के हाथों समर्पित किए गए ये वरदान संसार की कायापलट देंगे।''

''यह कभी न भूलें कि यद्यपि आप को अपने से बड़े और अनुभवी लोगों से ज्ञान लेने की आवश्यकता है, परन्तु क्रान्ति युवाओं से ही आरम्भ होती है। यीशु भी एक युवा था। इसी प्रकार से उसके चेले भी युवा थे। और उन्होंने जगत में उथल पुथल मचा दिया था।''

यूडे केयडर

ग्लोबल यूथ समिट की विशेषता यह थी कि संसार भर की अलग अलग ऐनाबैपटिस्ट परम्परा के दृष्टिकोणों के अदान–प्रदान का अवसर दिया गया। एमसीआई भारत के प्रेषित राव दाएं से प्रथम।

ऐनाबैपटिस्ट शिक्षाओं के साथ फिर से जुड़ने का एक समय

जबकि जीवायएस प्रतिनिधियों ने यह विचार करने में अपना समय लगाया कि वे विश्वव्यापी कलीसिया के लिए किस तरह से अपने वरदानों का प्रयोग करें, अनेक गतिविधियों के माध्यम से प्रतिभागियों को अवसर मिला कि वे अपनी ऐनाबैपटिस्ट जड़ों और विश्वव्यापी कलीसिया के बारे में अधिक जान सकें।

लानि प्रुनेस, याब्स कमेटी के उत्तर अमरीकी प्रतिनिधि ने कहा, ''हम जीवायएस को एक ऐसा स्थान बनाना चाहते हैं जहाँ प्रतिभागी आत्मिकता में बढ़ते जाएं, विशेष कर ऐनाबैपटिस्ट शिक्षाओं और विश्वव्यापी कलीसिया के प्रति अपनी समझ के विषय में।''

''इसके लिए हम प्रतिभागियों को यह सुनने और चर्चा करने के लिए काफी अवसर उपलब्ध कराते हैं कि हम अपने विश्वास को संसार में किस प्रकार से जीने के द्वारा प्रगट करते हैं।''

कार्यशालाओं के विषयों का विस्तार अन्तरधर्म और अन्तरसांस्कृतिक गतिविधियाँ, सच्चे रिश्तों को कायम रखते हुए सोशल मीडिया का प्रयोग, और एक्चेंज कार्यक्रम से लेकर संसार के विभिन्न भागों में शान्ति और न्याय का जीवन बिताने से सम्बन्धित जीवन्त उदाहरणों तक था।

संगीत कार्यक्रम, खेलकूद, सामूहिक कला परियोजना, बाजे व नृत्य, और रात में प्रेरणादायी फिल्मों ने अन्तरसांस्कृतिक अनुभवों को बढ़ाया।

ऐनाबैपटिस्ट युवाओं ने ग्लोबल चर्च विलेज में एक बूथ बनाया था जहाँ उन्होंने सम्मेलन में एकत्रित प्रतिभागियों को जीवायएस के अनुभवों के बारे में और अधिक जानकारियाँ उपलब्ध कराया।

एलिना सिप्तादी–पेरकिन्स एक कॉपीराइटर और संवाद परामर्शदाता हैं। वे इण्डोनेशिया की एक मेनोनाइट हैं जो अपने परिवार के साथ सिंगापुर में रहती हैं।

ग्लोबल यूथ समिट क्या है?

ग्लोबल यूथ समिट मेनोनाइट वर्ल्ड कॉन्फ्रेंस का एक आयोजन है, जो 18 वर्ष और इससे अधिक आयु के युवा वयस्कों के लिए, मेनोनाइट वर्ल्ड कॉन्फ्रेंस के सम्मेलन के ठीक पहले आयोजित किया जाता है। इस तीन दिवसीय सम्मेलन के दौरान, अपने कॉन्फ्रेंसों के द्वारा चुने गए प्रतिनिधि विश्वव्यापी देह से सम्बन्धित किसी खास विषय पर गहराई से विचार विमर्श करते हैं, और साथ ही साथ प्रतिभागी अन्तरसांस्कृतिक संगति का अनुभव लेते हुए ऐनाबैपटिस्ट शिक्षाओं को फिर से अपने जेहन में तरोताज़ा करते हैं।

यंग ऐनाबैपटिस्ट कमेटी क्या है?

एमडबल्यूसी यंग ऐनाबैपटिस्ट कमेटी जिसे याब्स कमेटी कहा जाता है, जीवायएस में आए पाँचों महाद्वीपों से एक एक प्रतिनिधियों को ले कर गठित की जाती है। यह कमेटी सोशल मीडिया और शिक्षण सामग्रियों का प्रयोग करते हुए युवाओं और युवा वयस्कों के मध्य सम्पर्क स्थापित करने और इसे बढ़ावा देने के लिए कार्य करेगी। याब्स कमेटी इण्डोनेशिया में आयोजित जीवायएस 2021 के लिए भी योजना तैयार करेगी।

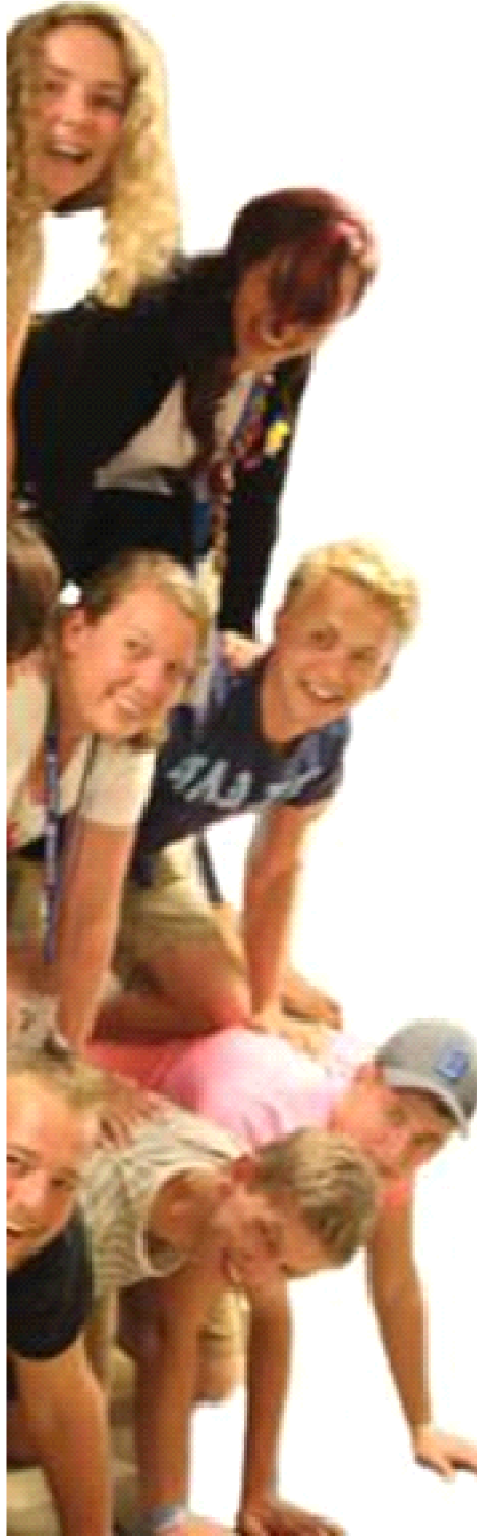

जीवाएएस की झलकियाँ

केन्या

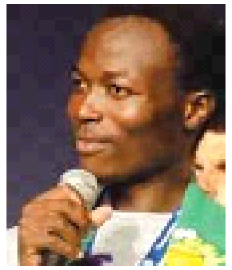

विक्लिफ ओशिंग ओटिनो,
जीवायएस प्रतिनिधि,

जीवायएस में मुझे सबसे अधिक अच्छा यह लगा कि संसार भर से आए विभिन्न लोग से मैं मुलाकात करुं और एक समूह में इकट्ठा हो हम उन बातों को इतना सीख सके जितना हम व्यक्तिगत रूप से नहीं सीख पाते। मूल विषय, ''बाँटने की बुलाहट: मेरे वरदानों को, हमारे वरदानों को,'' से मैंने यह सीखा कि मैं वापस जा कर अपनी कलीसिया में युवाओं के साथ कार्य करूंगा ताकि वे यह जान सकें कि उनके पास विशिष्ठ वरदान हैं और इसे सम्पूर्ण समुदाय के साथ बाँटने के द्वारा वे इसका उपयोग परमेश्वर की राज्य के निर्माण में कर सकते हैं।

कोस्टारिका

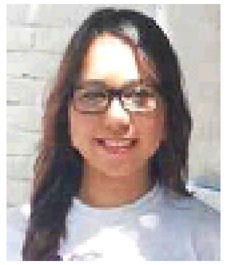

मारिसाबेल कास्टिलो,
जीवायएस प्रतिभागी,

जीवायएस में मुझे सब से अधिक अच्छा यह लगा कि हम भिन्न भिन्न भाषा में किन्तु एक मन हो कर एक परमेश्वर की आराधना एक साथ मिलकर कर सके, जिस तरह से, यीशु ने हमें लूका 10:27 में इसलिए बुलाया है कि हम उससे अपने सारे मन, अपने सारे प्राण, और अपनी शक्ति, और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रखें। मैंने दूसरी महत्वपूर्ण बात यह सीखा कि जब हम एक साथ मिलकर परमेश्वर के प्रेम को प्रत्युत्तर देते हैं, तब हमें यह दिखाई देने लगता है कि हम अपनी कलीसिया और समुदाय के लिए कितना अधिक, कितना कम नहीं, योगदान दे सकते हैं।

पूइरेटो रिका

केल्विन जिमेनेज़,
जीवायएस प्रतिभागी,

मैं एक विशेष कार्यशाला को स्मरण करता हूँ, जब जीवायएस के दौरान, हम एक दूसरे के साथ उन चुनौतियों पर चर्चा कर रहे थे जिनका सामना हमें अपने अपने देशों में करना पड़ता है। यह समझ पाना सचमुच में असरकारक था कि हमारी परिस्थितियाँ और हमारे संघर्ष कितने अलग अलग हैं। तौभी, हम मार्गदर्शन और बुद्धि के लिए एक ही स्त्रोत, हमारे परमेश्वर, की ओर देखते हैं। हम सब अपनी आशा का आधार यीशु मसीह को बनाते हैं ताकि हम अन्धकार के मध्य एक ज्योति, अलगाव के मध्य एक समुदाय, और हमारे संसार के दुखों के मध्य प्रेम बन कर रहे।

नीदरलैण्ड्स

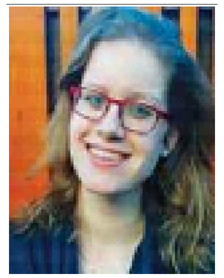

जानटिने हुइसमान,
जीवायएस प्रतिनिधि

जीवायएस में मेरे सबसे विस्मरणीय पहलू भोजन कक्ष में होने वाले वार्तालाप हुआ करते थे, जहाँ हम अपनी इच्छा से किसी भी मेज़ पर बैठ कर विभिन्न देशों और पृष्ठभूमियों के लोगों के साथ मुलाकात कर सकते थे। कभी कभी ये वार्तालाप औपचारिक परिचय से आगे बढ़कर तालाक, समलैंगिकता, पुनर्विवाह, महिला पासबान, और कलीसियाओं की समस्या जैसे विषय पर गहरे और खुली चर्चा का रूप ले लेते थे। यद्यपि आवश्यक नहीं था कि हम हमेशा एक दूसरे से सहमत हो जाएं, परन्तु एक दूसरे के प्रति आदर और समझ का भाव हमेशा कायम रहा।

मैं एक दूसरे के साथ साझा की गई समस्याओं को घर ले कर आया हूँ, मैं इस बोध के साथ वापस आया हूँ कि मैं संसार में अकेला युवा मेनोनाइट नहीं हूँ, और आशावादी हो कर वापस आया हूँ कि संसार भर की मेनोनाइट कलीसियाओं का भविष्य उज्जवल है।

जीवायएस के परिणामस्वरूप दूसरों के प्रति और उनकी निश्चयों के प्रति मेरी समझ में उदारता आई है। मैंने तीन दिनों में जितना सीखा, उतना मैं अपने घर पर एक माह में भी नहीं सीख पाता। मैं बड़ी उत्सुकता से छ: वर्षों बाद होने वाले अगले सम्मेलन की प्रतीक्षा कर रहा हूँ!

इण्डोनेशिया

नीता पुरविदानिन्गसिह,
जीवायएस प्रतिनिधि

इस आयोजन के अवसर पर हमने न सिर्फ एक अद्भुत संगति का आनन्द लिया, परन्तु मैं दूसरे महाद्वीपों के लिए प्रार्थना करने और दक्षिण कोरिया के *कॉन्शियस आब्जेक्टर* (विवेक की आवाज सुन कर सरकार के उन आदेशों को मानने से मना करने वाले जो बाइबल की शिक्षा के विपरीत हैं) का सहयोग करने के द्वारा विश्वव्यापी परिवार का एक हिस्सा होने का बोध करना सीखा। जीवायएस ने मुझे यह स्मरण दिलाया कि हमें एक दूसरे की सुधि लेना है, और जिस समय हम एक दूसरे तक सीधे सीधे पहुँच नहीं पाते, हमारी प्रार्थनाएं उन तक पहुँचेगी।

अगले सम्मेलन के मेजबान देश की निवासी के रूप में, आप इण्डोनेशिया 2021 के विषय में क्या कहना चाहेंगे?

इण्डोनेशिया सांस्कृतिक रूप से समृद्ध एक द्वीप समूह है जहाँ मेनोनाइट के तीन कॉन्फ्रेंस पाए जाते हैं, परमेश्वर की आराधना करने का प्रत्येक कॉन्फ्रेंस का तरीका अपने आप में विशिष्ठ है। इण्डोनेशिया 2021 में, आप प्रकृति और संस्कृति के माध्यम से परमेश्वर की सुन्दर रचना को देख सकेंगे और इण्डोनिशिया का ऐनाबैपटिस्ट समुदाय आप से सीखने के द्वारा आशीषित होगा।

– एलिना सिप्तादी–पेरकिन्स के द्वारा संकलित

युवा ऐनाबैपटिस्ट्स: वर्तमान कलीसिया

याब्स को पेन्नसिलवेनिया 2015 का मंच मिला और उन्होंने भविष्य के लिए योजना निर्धारित किया

फ़िलिस पेलमान गुड

युवा ऐनाबैपटिस्ट इतिहास अपेक्षाकृत छोटा है, परन्तु पेन्नसिलेवनिया 2015 में उनकी आवाज़ों ने सब का ध्यान अपनी ओर खींच कर लोगों के हृदयों को छेद दिया।

वास्तव में, सम्मेलन में प्रात:काल की आराधना के दौरान ऐनाबैपटिस्ट जवानों के उद्बोधन फार्म हाउस कॉम्पेक्स (एफएससी) के सबसे जोशिले वार्तालापों के कारण बने और सोशल मीडिया और उसके पार भी पर इनपर व्यापक चर्चाए हुईं।

हम इन्हें याब्स के नाम से जानते हैं, मेनोनाइट वर्ल्ड कॉन्फ्रेंस (एमडबल्यूसी) की सदस्य कलीसियाओं के इन प्रतिनिधियों ने सत्य को अचूक और स्पष्ट भाषा में प्रगट किया। उन्होंने बहुत ठोस प्रश्न पूछे। उनके निश्चय प्रेरणादायी थे।

यह कोई संयोग नहीं है। याब्स कमेटी के सदस्य, जो याब्स की गतिविधियों और उद्देश्यों को पूरा करने में नेतृत्व प्रदान करते हैं, एक अनुशासित और परिपक्व समूह है। उनकी औसत उम्र साढ़े अट्ठाइस वर्ष है।

याब्स का आरम्भ 2003 में जिम्बाब्वे के बुलावायो में आयोजित एमडबल्यूसी सम्मेलन के ठीक पहले हुआ। 28 से अधिक देशों के 220 युवाओं से अधिक (18– 30+) प्रथम ग्लोबल यूथ समिट (जीवायएस) के लिए एकत्रित हुए, जिसे संगति और आपसमें एक दूसरे के साथ सम्पर्क स्थापित करने व कायम रखने के उद्देश्य से गठित किया गया था।

इनका मिलना पूर्ण रूप से संतुष्टिदायक सिद्ध हुआ और इसलिए प्रतिभागियों की ओर से उनके युवा अगुवों ने यह निवेदन किया कि अगली बार भी जीवायएस का आयोजन किया जाए।

एलिना सिप्तादी पेरकिन्स कहती हैं, ''जब हम बुलावायो में एकत्रित हुए, हमने अपने लिए एमडबल्यूसी में एक नियमित प्रतिनिधित्व की मांग रखा। हम पाँच युवाओं का एक समूह तैयार करना चाहते थे जो हमारी उपस्थिति की पहल कर उसे साकार करें, हमने लैटिन अमरीका, एशिया, अफ्रीका, यूरोप, और उत्तर अमरीका से एक एक प्रतिनिधि लेने का निर्णय लिया।''

इण्डोनेशिया की सिप्तादी पेरकिन्स, जो 2003 के लिए जीकेएमआई नेशनल मेनोनाइट कॉन्फ्रेंस इन इण्डेमेशिया की ओर से एक प्रतिनिधि थीं, इस समूह की अगुवा चुनी गई, तब इस समूह को एमिगोस के नाम से जाना जाता था।

तीसरा जीवायएस, जिसमें 400 से अधिक युवाओं ने भाग लिया, यूएसए, पेन्नसिलवेनिया, के ग्रैंथम में मसायाह कॉलेज में हैरिसबर्ग के एमडबल्यूसी सम्मेलन के ठीक पहले 17 से 19 जुलाई 2015 तक अयोजित किया गया था। इन अयोजनों के पश्चात, सिप्तादी पेरकिन्स ने, जो अब भी याब्स की एक सशक्त समर्थक हैं, याब्स लिडरशीप कमेटी के दो वर्तमान सदस्यों, मैक्सिको के रोड्रिगो पेड्रोज़ा और स्पेन व आस्ट्रलिया के मार्क पास्कस के साथ मिलकर याब्स के वर्तमान रूप पर प्रकाश डाला।

पेड्रोज़ा बताते हैं, ''2015 जीवायएस में हम पहले की तुलना में सबसे अधिक तैयारी के साथ आए। हमने अपने अपने देशों में युवा वयस्कों के बीच में सर्वे किया। उनके निवेदनों और सुझावों के अनुसार हमने अपनी आराधनाओं, कार्यशालाओं, खेलकूद, और यहाँ तक कि विश्राम के समयों की भी रूपरेखा तैयार कीं।''

याब्स जिन्होंने जीवायएस 2015 की तैयारियाँ की और अपना कार्यकाल पूरा किया: लाना प्रुनेस, मार्क पास्कस, सुमाना बासुमता, रोड्रिगो पेड्रेज़ा, तिजिस्त तेसफाय गिलागे!

परन्तु इसके बाद एफएससी में आयोजित सम्मेलन के लिए भी याब्स पूरी तैयारी के साथ आया। सिप्तादी पेरकिन्स बताती हैं, ''2003 में जिम्बाब्वे में, हम युवाओं को प्रमुख सत्रों में एक पद पढ़ने को दिया जाता था। बीते समयों में, लोगों ने हमें 'रचनात्मक और' 'उर्जा से भरपूर . . . और संगीत में शायद कुछ योगदान दे सकने लायक' युवाओं के रूप में समझा। परन्तु यहाँ पेन्नसिलवेनिया 2015 में, याब्स को सम्मेलन में हर एक सुबह की आराधना में एक महत्वपूर्ण भूमिका सौंपी गई।''

इण्डोनेशिया की एलिना सिप्तादी पेरकिन्स, प्रथम याब्स अगुवों में से एक, आज भी वे उनकी एक सशक्त पक्षधर है।

वे आगे कहती हैं, ''लोगों ने अब यह जान लिया कि हमारे पास समझबूझ और विवेचनात्मक विचार हैं। हम अपने से बड़े भाई बहनों के साथ मिलकर कार्य करना चाहते हैं। अब यह दोनों ओर से किया जाने वाला संवाद बन रहा है।''

कुछ देशों में, याब्स के द्वारा कलीसिया की बड़ी जिम्मेदारियों को पूरा किया जा रहा है। याब्स कमेटी के अध्यक्ष और पेन्नसिलवेनिया 2015 की प्रात:कालीन आराधनाओं में से एक के वक्ता पेड्रोज़ा बताते हैं, ''मैक्सिकों में प्रभु के आधे सेवक युवा हैं। मैंक्सिकों की मेनोनाइट कलीसियाओं ने अफसरशाही का त्याग कर दिया है, इसलिए युवाओं को पर्याप्त अवसर प्राप्त हो रहे हैं।''

पेड्रोज़ा कहते हैं, ''मेरे देश में, एनाबैपटिस्टवाद के आदर्श पीढ़ी दर पीढ़ी खोए चले जा रहे हैं। हमारे पुराने अगुवे इसकी शिक्षा नहीं देते, और उनका झुकाव *कैरिसमैंटिक* और *पेन्टीकॉल्सटलवाद* की ओर है। हम ऐनाबैपटिस्ट शिक्षाओं को व्यवहार में लागू कर इसकी ताज़गी को पुन: लौटाने में सहायता कर रहे हैं।''

मार्क पास्कस को सबसे पहली बार 2009 में पैरागुवे में आयोजित द्वितीय जीवासएस के लिए याब्स प्रतिनिधि के रूप में आमंत्रित किया गया था। ''मार्क की कलीसिया, नेशनल चर्च कॉन्फ्रेंस को पैरागुवे सम्मेलन के ठीक पहले एक सदस्य कलीसिया के रूप में स्वीकार किया गया,'' सिप्तादी पेरकिन्स स्मरण करते हुए बताती हैं कि ''मार्क के प्रतिभाओं के कारण, और उसी समय विश्वव्यापी कलीसिया के साथ जुड़े उसके कॉन्फ्रेंस को प्रात्सोहन देने के उद्देश्य से हमने उसे आमंत्रित किया।''

याब्स कमेटी में प्रत्येक महाद्वीप से एक एक प्रतिनिधि को शामिल किया गया है, और इनके साथ एमडबल्यूसी के एक स्टाफ मेन्टर को रखा गया है। जिन सदस्यों ने पेन्नसिलवेनिया 2015 में अपना एक सत्र पूरा कर लिया है उनमें रोड्रिगो पेड्रोज़ा, मैक्सिको; तिजिस्त तेसफाय गिलगाले, इथोपिया; सुमाना बासुमता, भारत, मार्क पास्कस, स्पेन/आस्ट्रेलिया; लानि प्रुनेस, यूएस; और मेन्टर के रूप में अयूब आमोन्डी, केन्या शामिल हैं।

याब्स अगुवों ने याब्स समूह के आरम्भ से ही एक असाधारण दर्शन देखा है। सिप्तादी पेरकिन्स कहती हैं, ''हमारी पहली टीम ने बीज बोया कि हम युवा किस प्रकार से एमडबल्यूसी को अपना योगदान दे सकते हैं।''

''हमारी अगली टीम ने एमडबल्यूसी के विभिन्न पदाधिकारियों से मुलाकातें की, उनके सामने यह स्पष्ट किया कि हम कौन हैं और हमें क्या क्या वरदान मिले हैं, और निवेदन किया कि हमें अधिक भूमिकाएं दी जाएं। यह वह चरण था जब हमने एमडबल्यूसी को भेदा। हम नाममात्र के प्रतिभागी बन कर रह जाना नहीं चाहते थे।''

सिप्तादी कहती हैं, ''पैरागुवे सम्मेलन के समय से ही, हमने अपने लिए खाका तैयार करना आरम्भ कर दिया है,'' https://www.mwc-cmm.org/sites/default/files/bluepring_for_young_anabatist_network_in_mwc.pdf पर जाएं।

''हमें संगति करने और एक दूसरे के साथ सम्पर्क स्थापित करने की एक बड़ी इच्छा आरम्भ से ही थी। हम में से अनेक के पास ईमेल हैं, परन्तु उस समय, विश्व के दक्षिण भाग में बहुत ही कम लोगों के पास यह सुविधा थी। अब स्थिति बदलती जा रही है।''

पेड्राजो आगे बताते हैं, ''अब अपनी इन गहरी रूचियों को उन परियोजनाओं के माध्यम से एक तागे में पिरो रहे हैं जिन्हें हम इसलिए तैयार कर रहे हैं क्योंकि ये हमारे खाका का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है।''

तिजिस्त गिलगाले कहती हैं, ''हमारी परियोजनाएं उन लोगों के लिए हैं जिनका हम प्रतिनिधित्व कर रहें हैं, परन्तु ये उन युवाओं के लिए भी हैं जो हमसे जुड़ना चाहते हैं। संसार भर की छोटी कलीसियाओं में, आयु भेद कोई मायने नहीं रखता। हम उनके लिए भी विशेष गतिविधियाँ तैयार कर रहे हैं, जबकि साथ ही साथ, एक दूसरे के संसार से भी उनका परिचय करवा रहे हैं। और ये सारी बातें हमें यह स्मरण दिलाएंगी: 'आप एक बड़े परिवार के हिस्सा हैं। आप अकेले नहीं है।'''

भविष्य के युवा ऐनाबैपटिस्ट बच्चों और किशोरों ने परमेश्वर के साथ चलना विषय पर शिक्षा ग्रहण करते हुए सम्मेलन में अलग से अपने कार्यक्रमों का आनन्द लिया।

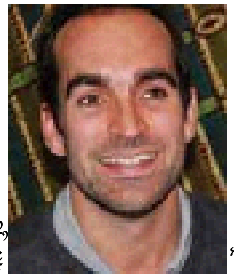

रोड्रिगो पेड्रोज़ा और मार्क पास्कस ने 25 जुलाई 2015 को पेन्नसिलवेनिया 2015 के दौरान प्रात:कालीन आराधना को सम्बोधित किया

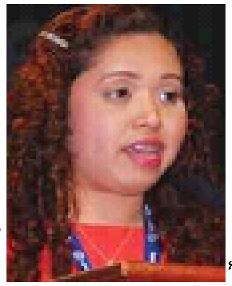

इथोपिया की तिजिस्त तेसफाय और रेमलिन जी मोन्ड्रेज़ ने पेन्नसिलवेनिया 2015 सम्मेलन के अवसर पर जुलाई 22 और 23, 2015 क्रमश: प्रात:कालीन आराधना को सम्बोधित किया।

''हम प्रेरितों के काम की पुस्तक के लिए शिक्षण सामग्री तैयार कर रहे हैं। यह एक बाइबल अध्ययन होगा जिसमें हम शास्त्रपाठ पर चिन्तन करेंगे। परन्तु इसमें ऐनाबैपटिस्टवाद को भी स्पष्ट किया जाएगा। इस अध्ययन के द्वारा यह सिखाया जाएगा कि बाइबल की ऐनाबैपटिस्ट समझ को किस तरह से किसी खास संस्कृति में लागू किया जा सके।''

याब्स कमेटी अपने अगुवों को बेहतर बनाने के लिए भी विशेष ध्यान दे रही है। सिप्तादी पेरकिन्स कहती हैं, ''जब हमने आरम्भ किया, तो हमें आगे की बहुत सी बातों पर विचार कर अपने मस्तिष्क में समेटने की आवश्यकता थी। एक बहुसांस्कृतिक समूह और परिस्थिति में एक साथ काम करने का हमें कोई अनुभव नहीं था। हमारे बीच में कुछ मतभेद उत्पन्न हो गए जिन्हें टाला जा सकता था यदि हमें पहले से इनके विषय सचेत रखा जाता। एमडबल्यूसी के कुछ अगुवों ने इस विषय में हमारी सहायता की, परन्तु किसी को भी तब हमारे मार्गदर्शन के लिए विशेष रूप से नियुक्त नहीं किया गया था। ''इसलिए पैरागुए के जीवायएस के बाद, हमने यह निर्णय लिया कि पिछले कमेटी के दो सदस्यों को नई कमेटी में लाया जाए और व्यक्तिगत संवाद शैली के बारे में बात करने के साथ साथ एक दूसरे को समझ पाने में उनसे सहायता ली जाए ताकि हम विवाद में अपना समय और अपनी उर्जा व्यर्थ करने से बच सकें।''

''हमने पिछली याब्स कमेटी से एक मेन्टर के रूप में भी एक नाम आगे किया कि वह हमें और हमारे कार्य को व्यवस्थित करने में हमारी सहायता करे। हमने यह जाना कि मेन्टर की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है।''

पेड्रोजा जोर देकर कहते हैं, ''अब हम कलीसिया का *भविष्य* बन कर नही रह सकते। हम कलीसिया का *वर्तमान* बनना चाहते हैं। अब वे हम पर विश्वास करने लगे हैं। वे हम पर भरोसा रखते हैं। हमें बुद्धिमानी से इस अवसर का लाभ उठाना कि लोग हमारी बात सुनें।''

''हमें एक दूसरे का सम्मान करना जारी रखना आवश्यक है। हम एक दूसरे से भिन्न हैं। हमारी सोच एक दूसरे से भिन्न है। परन्तु हमें एक दूसरे की आवश्यकता है। उदाहरण के लिए, हमें शान्ति के सम्बन्ध में अपनी दृढ़ धारणाओं को जीवित रखना आवश्यक है, विशेष कर तब जब अपने अपने स्थानों पर हों और एक साथ न हों।''

सिप्तादी कहती हैं, ''मेरी प्रार्थना है कि आत्मसंतुष्ट हो कर रूक न जाएं। आगे का हमारा रास्ता सरल हो सकता है क्योंकि हमें पेन्नसिलवेनिया 2015 में बहुत गम्भीरता से लिया गया। मैं ऐसा आशा रखती हूँ कि यह 'बिना कार्य और बिना प्रयास के अपेक्षित' न बन जाए।''

फिलिस पेलमान गुड एक लेखक और सम्पादक है। वे लॉन्कास्टर, पेन्नसिलवेनिया, यूएसए के निवासी हैं।

विश्वव्यापी ऐनाबैपटिस्ट परिवार
के बारे में सीखना और उससे प्रेम रखना

मार्कस रेडिगर

रेज़िगर परिवार बेर्न, स्वीड्ज़रलैण्डकोएनकरोज के प्रिंस ऑफ पीस मेनोनाइटचर्चका अवसर मिला। यहाँउनकी मुलाकात पास्टर जॉन टकेर सेहुईजो कुछवर्ष पहलेअपनेसैब्बेटिकल अवकाश के दौरानस्वीड्ज़रलैण्डमें रेज़िगर परिवार केसाथ ठहरेहुए थे। प्रिंस ऑफ पीस (उनके आराधना के स्थान काचित्र, यहएक पहाड़ी केनीचेस्थित एककैथोलिक सेन्टर मेंसंचालितकिया जाताहै) के सदस्य जेफ विशोम कहतेहैंकि प्रिंसऑफपीस मेंउनकी इसयात्रासेहमें ''सहायतामिलीकि हम एक बड़ेमेनोनाइट चर्चसेजुड़सकें और सम्मेलन केकुछ निकटआसकें।''

दक्षिण मध्य केनसास कीयात्रा कोनिरस्त करनापड़ा क्योंकि वहाँ जाने के लिए पर्याप्त अतिथि नहीं थे; किन्तु आयोजकों ने अतिरिक्त दूरी तय कर सैसकाटून की रोज़मेरी स्लाटर की पहुनाई की। उन्होंनेइस क्षेत्र के ऐनाबैपटिस्ट लोगोंके वर्तमानऔर अतीत की विविधताको जानने में अपना समय लगाया, उनके जीवन के इस सबसे खास अनुभव में उन्हें ''शाही खातिरदारी'' मिली।

नीदरलैण्ड के पीयटर पोस्ट, जो बाइबल के विद्वान और पासबान हैं, और पॉलस्टीनबेर्गेन, जो एक समाजशास्त्री और समाजसेवक हैं, दोनों को सैन ऐनटोनियो मेनोनाइट चर्च और डोर (डिसकवरिंग ऑपरच्यूनिटिज़ फॉर ऑउटरीच एण्ड रिफ्लेक्शन) जाने का अवसर मिला। पोस्ट कहते हैं, ''हमें प्रवासियों के मुद्दे पर अत्यंत ज्ञानवर्धक जानकारियाँ मिलीं।'' वे वालेन्टियर्स द्वारा उनके प्रति प्रगट किए गए प्रेम और समर्पण से भी अत्याधिक प्रभावित हुए।

पोस्टकहते हैं, ''हम बड़ेकृतज्ञ हैकि हमने असेम्बली स्केटर्ड में भाग लिया। यह हमें विश्वास की सामर्थ और कलीसिया के अर्थ के विस्तार पर मनन करने में व्यस्त रखता है।''

असेम्बली स्केटर्ड से केवल अतिथियों ने ही नहीं सीखा। ''टू किंग्डम्स, टू लायलिटिज़: ऐनाबैपटिस्ट एंगेजमेंट विथ गॉवरमेंट इन वाशिंगटन, डीसी,'' पर गाइडअर्ल जिम्मेरमान नेइसे ''विशेष रूप से मूल्यवान''पाया यद्यपि अमरीकी समाजऔर विश्वव्यापी सम्बन्धों पर एक यूरोपीय व्यक्ति की बात सुनना कुछ अवसर पर असहज था।

पोस्टकहते हैं, ''हम ऐसामानते हैंकि कलीसियाकाबुलाहट बिल्कुल वही है जिसे हम ने अभी देखा।''

– कार्ला ब्राउन

''संसार के बहुत से भागों – ब्राज़ील, कोलम्बिया, मनिटोबा – से आए हुए विश्वासी भाई बहनों के साथ मुलाकात करनासबसे खासबात थी: उनके आनन्द और उनकी तकलीफों के बारे में सुनना और यह जानना कि उनकी स्थानीय परिस्थिति में यीशु मसीह का अनुसरण करने का अर्थ क्या है,'' *असेम्बली स्केटर्ड* के मेजबान पीटर क्लेमेंटने यह बात कही।

असेम्बली स्केटर्ड

पेन्नसिलवेनिया 2015 में *असेम्बली स्केटर्ड* के अन्तर्गत अलास्का कीएक, इस्टर्न यूएसएकी तीन, और टेक्सासकी एक यात्रा शामिल थी। इसके माध्यम से सम्मेलन में भाग लेने आए भाई बहनों को अवसर मिला कि वे सम्मेलन से पहले या बाद मेजबान देश में स्थापित मेनोनाइट वर्ल्ड कॉन्फ्रेंस की सदस्य कलीसियाओं और अन्य सेवा संस्थाओं में जा सकें ताकि संसार भर के ऐनाबैपटिस्ट लोगों के बीच में मित्रता को मजबूती दिया जा सके और नई मित्रता विकसित की जा सके।

पेन्नसिलवेनिया औरन्यूयार्क मेंब्रुडरहोफ परिवारोंने ''लिविंग डिसाइपलशिप इन कम्युनिटी'' टूर के एमडबल्यूसी अतिथियों की पहुनाई की। ब्राज़ील से आए ओटिस और बेट्टी ने अपने मेजबानों द्वाराकी गई पहुनाई, उनके परिश्रम, औरउनके विश्वास व व्यवहारसे सम्बन्धित विषयों में बात करनेकी इच्छाकी अत्यंत सराहना की। ''बहुत अधिक गीत, अत्यंत साधारण अगुवे, और कलीसियाके बहुतसे सदस्योंसेबातचीत करना हमारे इस अनुभव की सबसे खास बातें थीं।''

क्लेमेंट बताते हैं, ''वार्तालाप एक दूसरे कोउत्साहित करने का कारण बने। हम ने एक साथ मिलकर कार्य करने, मिलकर भोजनकरने, आग जला करकैम्पफायर करने, और मिल कर ढेर सारे गीत गाने के द्वारा बहुत आनन्द किया।''

कर्टेल डिल

लानकॉस्टर मेनोनाइटकॉन्फ्रेंस चर्चेस ऑफ बायरलैण्ड, न्यू डनविले और विलोस्ट्रीट नेफ्रांस, स्वीट्ज़रलैण्डऔर ताइवान के पहुनों का स्वागत करते हुएअपने मध्य में स्वीकार किया। वे पाहुनों को भ्रमण पर लानकॉस्टर कंट्री (उत्तर अमरीका की सबसेपुरानी मेनोनाइटमण्डलीका मुख्यालय) और आमिश फॉर्म भ्रमण परलेगए और शिष्यता, सुसमाचार अभियान, सार्वभौमिक गति विधियों और आराधना के विषय में बात चीत किया – और उनकी पहुनाई भी की।

News (समाचार)

मर्लेन गुड

2015 से अपना कार्य आरम्भ करनेवाली एमडबल्यूसी कार्यकारिणी समिति (बाएं से): अगुसस्टेडियांटो (इण्डोनेशिया), सीज़र गार्सिया (जनरल सेक्रेटरी, कोलम्बिया), पॉल पीनहास (भारत), लिसा कारप्रिज़ (कनाडा), रेयनर बुरकार्ट (जर्मनी), आइरिस डीलिओन हार्डशॉर्न (यूएसए), जीन–पॉल पीटर शिमिट (फ्राँस), सान्द्रा कैम्पोस (कोस्टारिका), स्टीवनमंगाना (तन्ज़ानिया), थूमाहामाकांगान्डू (जाम्बिया), नेल्सन क्रेबिल (अध्यक्ष, यूएसए), डोरियोरैमिरेज़ (पैरागुए), अर्नेस्टबेर्गन (कोषाध्यक्ष, पैरागुए), फोटो में नहीं: रबेका ओसिरो (उपाध्यक्षा, केन्या)। फोटो: मर्लेगुड

जनरल कॉन्सिल द्वारा विश्वव्यापी सहभागिता में एक दूसरे पर निर्भरता को बढ़ावा

हेरिसबर्ग, पेन्नसिलवेनिया, यूएसए – जनरल कॉन्सिल ने, मेनोनाइट वर्ल्ड कॉन्फ्रेंस सम्मेलन 21–26 जुलाई से ठीक पहले चार दिनों की सभा में विश्व सहभागिता में एक दूसरे पर निर्भरता कीयात्रा में कुछ अतिरिक्त कदम उठाए। एमडबल्यूसी के जनरल सेक्रटरीसीज़र गार्सिया ने टिप्पणी की,

''बगोटा में एक नई कलीसिया की स्थापना करने के दौरान अपनी सेवकाई में मैंने उस दिन की कल्पना की जब मेरी स्थानीय कलीसिया इतनी परिपक्व हो जाएगी कि यह आत्म निर्भर, स्वशासी, और स्वयं बढ़ने वाली बन जाए . . .। कुछ समय बाद मैंने यह सुना कि, इन तीन बातों के साथ साथ कलीसिया अपनीपरिपक्वतातक उससमय पहुँचतीहै जब यह 'स्वयं का धर्मविज्ञान' भी विकसित कर ले, अर्थात्, स्थानीय सन्दर्भ के दृष्टिकोण से बाइबल की शिक्षाओं को विकसित करने के योग्य हो जाए।''

वे आगे कहते हैं,

''किन्तु, मुझे वह बात सीखने में अनेक वर्ष लग गए जो हर जीवित प्राणी के विकास कीप्रक्रियामें बिल्कुलप्रगटहै। सच्ची परिपक्वता तक हम तक नहींपहुँचते जबहम जीवनके हर क्षेत्र में आत्मनिर्भर हो जाते हैं, परन्तु तब जब हम देना और लेना, हमारे पास जो हैं उसे दूसरों के साथ बाँटना, और साथ ही साथ दूसरों के द्वारामेज़ पर लाई गई वस्तुओं कीसराहना करना जैसी बातों में सक्षम हो जाते हैं . . . दूसरे शब्दों में, जबएक व्यक्ति परस्पर निर्भरतासीख जाता है।''

जनरल कॉन्सिल की सभामें संसार भर की सदस्य कलीसियों के लगभग 120 प्रतिनिधि उपस्थित थे। उन्होंनेलगभग अपना आधा समय एकता और विविधता विषय पर एक साथ मिल कर चिन्तनकरने में व्यतीत किया।

पैरागुवे के अल्फ्रेड न्यूफेल्ड ने विवादों के चार ऐतिहासिक क्षेत्रोंसे शिक्षाओंका अवलोकन किया: विशेष जाति/वर्ग परकेन्द्रित कलीसिया बनाम मिशनरी कलीसिया; सेना कोमहत्व दिया जाना (*मिलिटेरिज़्म*); उभरती हुई पीढ़ी बनाम ''विदा लेती हुए'' पीढ़ी; और जाग्रति का भक्तिवाद बनाम प्रबोधन का उदारवाद।

जर्मनी के फर्नान्डो एन्स ने ''सस्ती'' और ''कीमती'' एकताके बीच के अन्तरपर प्रकाश डाला। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि एकता उत्पन्न करने वाले हम नहीं है, परन्तु एकता परमेश्वर के प्रेम के सम्बन्ध के सहभागीहोने पर उत्पन्न होती है। उन्होंने आगे कहा कि हमारे सामने यह चुनौती है कि हम विविधता की सीमाओं का निर्धारणकरें। उन्होंनेध्यान दिलायाकि मसीह की प्रभुतापर प्रश्नकरना विभाजनकाएकमात्र आधार है। अन्य अधिकांश विषयों पर, उन्होंने भिन्नताओं को सहन करने का आग्रह किया।

लूथरनवर्ल्ड फेडरेशनके जनरल सेक्रेटरी, मार्टिन जंग ने इस बात पर जोर दिया कि कलीसिया हमेशा से ही स्थानीय और विश्वव्यापी दोनों रही है। सिर्फ स्थानीय (सन्दर्भ केन्द्रित) कलीसिया पर जोर देते हुए विश्वव्यापी (वृहद कलीसिया) को अनदेखा करने पर प्रान्तवाद को बढ़ावा मिलता है। इसी प्रकार से स्थानीय को अनदेखा कर विश्वव्यापी पर जोर देना साम्राज्यवाद को बढ़ावा देता है।

यूक्रेन, जिम्बाब्वे, पनामा, अंगोला, वेनेजुएला, भारत, दक्षिण कोरिया, और अन्य देशों से आए हुए जनरल कॉन्सिल के सदस्यों ने अपने अपने विचार रखे। सब का समान ध्येय यह था कि एमडबल्यूसी की सदस्य कलीसियाएं एक दूसरे को प्रार्थनामें ऊपर उठाएं और आपसी भाइचारे कोहरसम्भव रूपों में व्यक्त करें।

अपने बिज़नेस सत्र में, जनरल कॉन्सिल ने इस बात पर जोर दिया कि विश्वव्यापी सम्बन्धों को सम्भव बनाने वाले संस्थागत ढांचों को मजबूती प्रदान की जाए।

सीज़र गार्सिया के अनुसार, एमडबल्यूसी एक ऐसा विश्वव्यापी ढांचा तैयार करना चाहती है जोइस परस्पर निर्भर अस्तित्व को अत्याधिक संस्थागत ढांचें का रूपले लेनेसे बचाते हुए एक जीवित प्राणी के अस्थिपंजर के समान इसकी वृद्धि और विकास में मदद करे . . .। एमडबल्यूसी जिस ढांचे को विकसित करने का प्रयास कर रही है इसमें इस बात का ध्यान रखा जा रहाहै कि हम इसेहर एक स्थानीय परिस्थिति में पूरी सख्ती से और हूबहू वैसे का वैसा थोपने की परीक्षासे दूर रहें। हम प्रत्येक क्षेत्र की हमारी मण्डलियों कीवास्तविकता केप्रति संवेदनशील बने रहना, और हमारे समुदाय के द्वारा जिन वास्तविकताओंको सामना किया जाताहै उसके अनुरुप स्वयं को ढालना चाहते हैं।''

एमडबल्यूसी के चारोंकमीशन्स ने – फेथ एण्ड लाइफ कमीशन, मिशन कमीशन, पीस कमीशन, डीकन कमीशन – जो पिछले छह वर्षों सेही अस्तित्व में है, अपने दर्शन और अपनी सेवा के विषय में जानकारी दी जो उन्होंने बहुत ही सीमित संसाधनों के बाद भी ढेर सारे क्षेत्रों में पूरा किया।

जनरल कॉन्सिल में यह भी बताया गया कि प्रत्येक महाद्वीप के क्षेत्रीय प्रतिनिधियों के कार्यों के माध्यम सेभी सदस्य कलीसियाओं के बीच में सम्बन्धोंको बढ़ावा मिला है। यदि हमारी आर्थिक स्थिति अनुमति दे, तो हमारीयह योजना है कि अफ्रीका और लैटिन अमरीका में कुछ अतिरिक्त क्षेत्रीय प्रतिनिधियों की नियुक्ति करें। एमडबल्यूसी के कार्य में आर्थिक सहयोग देने के लिए, प्रत्येक सदस्य कलीसिया सेयह निवदेन किया गया है कि वे अपने अपने देशों की ''परचेसिंग पॉवर पेरिटी'' के आधार पर "फेयर शेयर'' दें। व्यक्तिगत और मण्डलियों की ओर से दिए जाने वाले सभी आर्थिक योगदानों को एमडबल्यूसी की सदस्य कलीसियाओं के फेयर शेयर के रूप में माना जाएगा, जिनसे यह मण्डलियाँ और व्यक्ति सम्बन्धित हैं।

संध्या की सभा में, जनरल कॉउन्सिल ने जिम्बाब्वे के डानिसा नडलोवु के प्रति सराहना व्यक्त किया, जिन्होंने इस सम्मेलन में एमडबल्यूसी के अध्यक्ष के रूप में अपने छह वर्षीय कार्यकाल कोपूरा किया। नवनिवार्चित अध्यक्ष, अमरीका के नेल्सन क्रेबिल ने अध्यक्ष के रूप में सम्मेलन के तुरन्त बाद अपना कार्यकाल आरम्भ किया। जनरल कॉन्सिल ने अपनी बैठक में केन्या के रबेका ओसिरो को एमडबल्यूसी की उपाध्यक्षा के रूप में चुना, उन्होंने कनाडा की जेनेट प्लेनर्ट कास्थान लिया।

रोन रेम्पेल द्वारा एमडबल्यूसी की विज्ञप्ति

एमडबल्यूसी सम्प्रेषण दल में परिवर्तन

बगोट, कोलम्बिया –
मेनोनाइटवर्ल्ड कॉन्फ्रेंस के सम्प्रेषण दल के तीन स्टाफपदों मेंपरिवर्तन करनई नियुक्तियाँ की गई हैं।

मध्यजुलाई 2015 में, कनाडा की कार्ला ब्राऊन ने सम्पादक औरलेखिका के रूप में गैरपूर्णकालिक पदपर अपना कार्य आरम्भ किया। वे *Courier/Correo/Courrier* पत्रिका औरएमडबल्यूसी के अन्यलेखों की सम्पादिका औरलेखिका के रूपमें सेवाएं दीरहीं हैं।

ब्राऊन *मेनोनाइट ब्रदरनहेरल्ड* की सह–सम्पादिका रह चुकी हैंऔरपिछलेसात वर्षों से विन्नीपेग, मोनिटोबा, कनाडा में निवास कर रहीं हैं। उन्होंने भाषा मेंविशेष योग्यता हासिलकरते हुएअंग्रेजी मेंपूर्वस्नातक किया है और साथ ही धर्मविज्ञान में स्नातक स्तर पर कुछ पाठ्यक्रमों का भी अध्ययन किया है।

ब्राऊन ने अम्रीका केडेविन मानजुल्लो–थॉमस का स्थान लिया है, जिन्होंने जनवरी 2013 से ले कर अब तक एमडबल्यूसी के सम्पादक औरलेखक केरूप मेंअपनी सेवाएं दीं। डेविन को पेन्नसिलवेनिया के मेकेनिक्सबर्ग में ब्रदरन इन ख्राइस्टसे सम्बद्ध मसायाह कॉलेज मेंपूर्वकालिक भूमिका में नियुक्त किया गया है, और सितम्बर से वे अपना पीएचडी शोध आरम्भ कररहें हैं।
1 सितम्बर 2015 से कोलम्बिया की क्रिस्टिना टोव्समुख्य सम्प्रेषण अधिकारी के रूप में अपनी भूमिका आरम्भ कर रहीं है, इस भूमिका मेंएमडबल्यूसी की संवाद नीति पर कार्य करते हुए सभी प्रिन्ट और इलेक्ट्रानिक संवादों की जिम्मेदारी सम्भालेंगी। वेकनाडा केरॉन रेम्पेलका स्थान लेंगी जो जनवरी 2012 से इसपद परथे और अबसेवानिवृत्त हो रहे हैं।

टोव्स, मूलत: ब्रिटिश कोलम्बिया के अब्बोट्सफोर्ड की निवासी हैं और उन्होंने बगोट, कोलम्बिया मेंरहते हुए एमडबल्यूसी के वेबकम्युनिकेशन वर्करके रूप में जनवरी 2013 से अपनी सेवाएं दी है। इस पद पर कार्यकरते हुएउन्होंने फ़ेसबुक, इस्टाग्राम और ट्विटर के माध्यमसे एमडबल्यूसी की सोशल मीडिया नीति को आरम्भ करने व बढ़ाने में अगुवाई कीहै। टोव्सने भीबाइबल अध्ययन मेंएक पूर्वस्नातकपाठ्यक्रम पूरा किया है।

कार्लाब्राऊन
सम्पादिका और लेखिका

किस्टिना टोव्स
मुख्य सप्रेषण अधिकारी

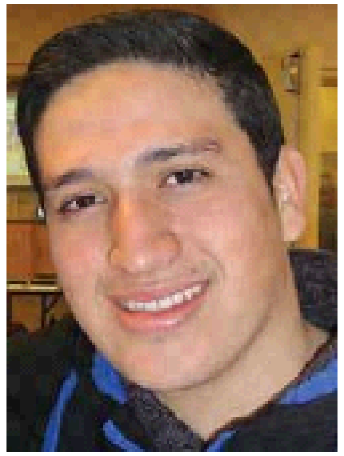

ऐरानगोल्ज़ाल्वेज़
वेब और सोशल मीडिया मैनेजर

एमडबल्यूसी की वेब और सोशल मीडिया उपस्थिति से सम्बन्धित कार्य सम्भालने के लिए कोस्टारिका के एरोन गोन्ज़ाल्वेज़नेटोव्स कास्थान लियाहै। उन्होंने विगत समय अमरीका के पेन्नसिलवेनिया में आयोजित सम्मेलन के लिए एक स्टाफ के रूपमें सेवाएं दी हैं। अपनी नयी भूमिका को, गोन्ज़ाल्वेज़बगोट केएमडबल्यूसी कार्यालय में रह कर पूरी करेंगे।
गोन्ज़ाल्वेज़ ने ब्यूनसन्यूवस मेनोनाइट चर्च इन कोस्टारिका की अपनी गृह मण्डली में, और कोलम्बिया मेंमेनोनाइट सेन्ट्रल कमेटी और एमडबल्यूसी के यामेन! कार्यक्रम में अपनी सेवाएं दी हैं।

एमडबल्यूसी के जनरल सेक्रटरी सीज़र गार्सिया कहते हैं, ''संवाद और समुदाय'' परस्पर सम्बन्धित शब्द हैं, न सिर्फ एक ही मूल शब्द से आने के कारण बल्कि मानवजाति पर इनके द्वारा छोड़े जाने वाले असर के कारण भी। बिना संवाद के अपने आनन्द और अपने दुखों को बाँटपाना, कष्ट के मध्य आनन्द ढूंढ़ पाना, या एक विश्वव्यापी समुदाय का निर्माण कर पाना सम्भवनहीं है। इसी कारण से संवाद का क्षेत्र कैरियर के एक क्षेत्र या किसी संस्था के एक विभाग से कहीं बढ़ कर है। यह एक सेवकाई है। यह हमारे ऐनाबैपिटस्ट विश्वास के विश्वव्यापी परिवार के प्रति एक महत्वपूर्ण सेवकाई है।

सीज़रगार्सिया ने आगे कहा, ''मैंडेविन और रॉन के द्वारा एमडबल्यूसी मेंउनके द्वारा की गईसेवकाई केलिए उनका आभार प्रगट करता हूँ। पिछले वर्षों में संवाद हमारे विश्वव्यापी परिवारमें अत्यंत निर्णायक सिद्ध हुआ है। रॉन की अगुवाई में, एमडबल्यूसी ने सम्प्रेषण के नए चरणोंकी ओरकदम बढ़ाया है और उस परिपक्वता को प्राप्त किया है जिसकी आवश्यकता हमें अपने सदस्यों के बीच में संवाद के अच्छे माध्यमों को बढ़ाने और प्रोत्साहित करने के लिए है। हमपरमेश्वर से इनअगुवों केलिए प्रार्थनाकरते हैंकि वह इन्हें मार्गदर्शन औरआशीष प्रदान करे और साथ ही उनके द्वारा सम्भाली गई नयी जिम्मेदारियों कोपूरा करनेके लिएउन्हें अपना अनुग्रह प्रदान करे।''

–मेनोनाइट वर्ल्ड कॉन्फ्रेंस विज्ञप्ति

सेवामुक्त हुए स्टाफ और वॉलेंटियर्स के सम्मान में रात्रिभोज

हेरिसबर्ग, पेन्नसिलवेनिया, यूएसए
21–26 जुलाई 2015 सम्मेलन के तुरन्त बाद एक रात्रिभोज में, मेनोनाइट वर्ल्ड कॉन्फ्रेंस के जनरल सेक्रटरी ने अनेक स्टाफ सदस्यों के प्रति सराहना व्यक्त की जो एमडबलयूसी में अपने कार्य को पूरा करने के बाद जा रहे हैं।

मर्ले और फिलिस गुड को सम्प्रेषण सलाहकार और फंड रेज़र्स के रूप में उनके द्वारा दी गई सेवाओं के प्रति आभार प्रगट किया गया। पिछले 31 वर्षों से – 1984 स्ट्रॉसबर्ग सम्मेलन से – उन्होंने अनेक क्षेत्रों में एमडबल्यूसी में सेवकाई किया: लेख लिखना, फोटोग्राफी, *Courier/Correo/Courrier* पत्रिका का सम्पादन, ऐनाबैपटिस्ट शेल्फ को रूप देना, ग्लोबल हिस्ट्री सीरीज़ का प्रकाशन और वितरण, सोशल मीडिया और मार्केटिंग, कोर और असेम्बली बजट दोनों के लिए फंड जुटाना और सम्पूर्ण योजना बनाने में परामर्श। इस दौरान फिलिस ने जनरल कॉउन्सिल और कार्यकारिणी समिति मेंभी अपनीसेवाएं दीं।

एलियनोरमिलर को उनकी 25 वर्ष की सेवा के लिए धन्यवाद दिया गया। उन्होंने एमडबल्यूसी स्ट्रासबर्ग कार्यालय में 1990–1997 तक वॉलेन्टियर के रूप मेंसेवाएं देते हुए कार्यकारिणी समिति और जनरल कॉउन्सिलकी सभाओं के साथसाथ भारत में हुए 1997 सम्मेलन की योजना बनाने में अपना सहयोग दिया। 1997–2015 तक, उन्होंने प्रशासन सहायक केरूप मेंसेवाएं दी और 2014 तक सम्प्रेषण दल की सदस्या भी रहीं। इसके अतिरिक्त, 2003 से 2015 तक उन्हें ऐनोबैपटिस्ट सम्बन्धित कलीसियाओंकी विश्वव्यापीजनगणना के लिए सभी देशों की कलीसियाओं से जानकारियाँ एकत्रित करने की जिम्मेदारी सौंपी गई थी।

टिमलिंड को एमडबल्यूसी मेंउनके द्वारा की गई अनेक महत्वपूर्ण सेवाओं के लिए सराहा गया। 1997–2003 तक, उन्होंने पाकिसा तशिमिका के साथ मिलकर एक *ग्लोबल गिफ्टशेयरिंग प्रोजेक्ट* परकार्य किया तथा *शेयरिंग गिफ्ट इन द ग्लोबल फैमिली ऑफ फ़ेथ* (गुड बुक्स, 2003) का सह–लेखन भीकिया। 2003 से 2014 तक, लिंड ने एमडबलयूसी के चर्च–टू–चर्च रिलेशन कोआर्डिनेटर के रूप में कार्यकिया। 2015 सम्मेलन से पहले कुछ महिनों, उन्होंने रिपब्लिक ऑफ कांगों के सदस्यों को वीसा सम्बन्धी कार्य में सहायता की।

इस रात्रि भोज के दौरान, राबर्ट जे सुडरमान का पिछले छह वर्षों तक पीस कमीशन के सचिव के रूप उनकी सेवाओं के लिए, डेविन मानजुल्लो–थॉमस का जनवरी 2013 से कूरियर पत्रिका का सम्पादन करने के लिए, और रॉन रेम्पेल का जनवरी 2012 से मुख्य सम्प्रेषण अधिकारीके रूप में सेवाएं देने के लिए सम्मान किया गया।
दो कमीशनों के सभापतियों को भी उनका छह वर्षीय कार्यकाल पूरा करने पर सम्मान किया गया: रिचर्ड शोवॉल्टर (मिशन) और पॉलुसविडिजाजा (पीस)।

रात्रि भोजके समय, प्रमुख अन्तर्राष्ट्रीय आयोजन अधिकारी लिसा अंगर, असेम्बली 2015 के राष्ट्रीय संयोजक हावर्ड गुड और उत्तर अमरीकी प्रतिनिधि लिन्न रोथ ने उन अनेकवैतनिक औरस्वयंसेवी स्टाफ के प्रति आभार व्यक्त किया जिन्होंने सम्मेलन के तैयारियों में सहयोग दिया था।

–एमडबल्यूसी विज्ञप्ति

एमडबल्यूसी के तीन कमीशनों में नेतृत्व परिवर्तन की घोषणा

बगोटा, कोलम्बिया – 21–26 जुलाई के सम्मेलन से पहले आयोजित सभाओं में, मेनोनाइट वर्ल्ड कॉन्फ्रेंस ने अपने तीन कमीशनोंके नेतृत्वपरिवर्तन की घोषणा की।

एमडबल्यूसी के जनरल सेक्रटरी सीज़र गार्सिया ने कहा, ''परिवर्तन जीवन का एक बहुत महत्वपूर्ण हिस्साहै, उदाहरणके लिए, हम मनुष्यों का शरीर स्वस्थ रहने के लिए कोशिकाओं कानवीनीकरण करता जाता है। इसी प्रकार से एमडबलयूसी का हमारा संविधान नेतृत्व के कुछ पदों के लिए एक निश्चित अवधि निर्धारित करता है ताकि हमारी विश्वव्यापी देह स्वस्थ रहे और नए नेतृत्व और नए दर्शन के साथ नई होती जाए।'' यह एक आशीष की बात है जब अगुवे अपनी सेवकाईके एक चरण को पूरा कर सेवकाई के नए पद की ओर बढ़ने के लिए तैयारहोते हैं।

जोजि पान्टोज़ा को पीस कमीशन की अध्यक्षा के रूप में नियुक्त किया गया था। जोजि औरउनके पति डेन, जोमूलत: कनाडा के हैं, फिलिप्पिन्स में शान्ति स्थापना करने वाले मिशनरियों के रूप में सेवा करते हैं। जोजि के बदले अब इण्डोनेशिया के पौलुस विडजाजा ने सभापतिका स्थान लिया है।
एंड्रयू सुडरमान को पीस कमीशन का नया सचिव नियुक्तकिया गया है। एंड्रयूऔर उनकी पत्नी केरन, जो मूलत: कनाडा से हैं दक्षिण अफ्रीका में एक ऐनाबैपटिस्ट नेटवर्क और संसाधनकेन्द्र मेंनेतृत्व प्रदान कर रहे हैं। उन्होंने कमीशन के सचिव के रूप में राबर्ट जे. सुडरमान का स्थान लिया है।
संयुक्त राज्य अमरीका के स्टेनली ग्रीन को मिशन कमीशन का सभापति नियुक्त किया गया है। स्टेनली मेनोनाइट मिशन नेटवर्क के कार्यपालन निदेशक हैं, यह मेनोनाइट चर्च यूएसए की मिशन एजेंसी है। उन्होंने सभापति के रूप में संयुक्त राज्य अमरीका के रिचर्ड शोवाल्टर का स्थान लिया है। पैरागुवे के राफेल ज़ोराखो कमीशन के सचिव के पद परबनें रहेंगे।

बुरकिना फासो के सियाका त्राओरे को डीकन कमीशन का सभापति नियुक्त किया गया। त्रोआरे *इंगलिसे इवांजेलिक्यू मेनोनाइट डू बुरकिनो फ़ासो* के अध्यक्षहै। वेभारत की सिंथिया पीकॉकका स्थानलेंगे। नीदरलैण्ड के हेंक स्टेनवर्स कमीशन के सचिव के पद परबने रहेंगे।

पैरागुवे के अल्फ्रेड न्यूफेल्ड फ़ेथ एण्ड लाइफ़ कमीशन केसभापति औरसंयुक्त राज्य अमरीका के जॉन रोथ सचिवबने रहेंगे।
सीज़रगार्सिया कहते हैं, ''मैंपौलुस, रिचर्ड, और सिंथिया के द्वारा स्वयंसेवक के रूप में वर्षोंकमीशनों की अध्यक्षता की सेवा करने और राबर्टद्वारा पीसकमीशन के सचिव का कार्य करने के लिए अपनी कृतज्ञता प्रगट करता हूँ। इन अगुवों एमडबल्यूसी की देह कोएक अच्छा स्वास्थ प्रदान किया। उन्होंने वर्षों की सेवा में और परिवर्तन के समय में यह कार्य किया है। मेरी यह प्रार्थना है कि हमारे कमीशनों के नए अगुवे अपने पूर्वाधिकारियों के द्वारा की गई विश्वव्यापी सेवकाई के द्वारा उत्साह और प्रेरणा प्राप्त करेंगे।''

– मेनोनाइटवर्ल्ड कॉन्फ्रेंस विज्ञप्ति

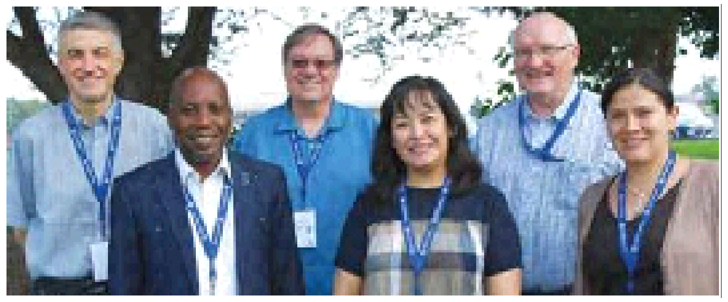

पीसकमीनश: एन्टोनियोगोल्ज़ावेज़फर्नांड़ि (स्पेन), गार्सिया डेमिन्गोज़ (अंगोला), केनेथ होक (यूएसए), जोजि पान्टोज़ा, अध्यक्ष (फिलिप्पिंस), राबर्टजे. सुडरमान (कनाडा), जेनी नेमि (कोलम्बिया), (चित्र मेंनहीं) एंड्रयूसुडरमान, सचिव (दक्षिण अफ्रीका)

मिशनकमीशन: हेर्मन वोल्के (यूराग्वे), राफेल ज़ाराखो, सचिव (पैरागुवे), अगुस मयान्टो, उपाध्यक्ष (इण्डोनेशिया), स्टेनली ग्रीन, अध्यक्ष (अमरीका), केलबेस्सा डेमेना (इथोपिया), एन्डी संतोसो (इण्डोनेशिया), बारबरा हेगे–गाले (जर्मनी), जॉन फुमाना, उपाध्यक्ष (डीआर कांगो), (चित्र मेंनहीं) फिलिप्प ओकयो (केन्या)

डीकनकमीशन: हेंक स्टेनवर्स, सचिव (नीदरलैण्ड), सियाका त्रोआरे, अध्यक्ष (बुरकिना फासो), हन्नासोरेन (नेपाल), डोग साइडर (कनाडा), ग्लेडिस सिमंस (ब्राज़ील), जर्ग ब्राकर (स्विट्ज़रलैण्ड), एनोक शामापानी (जाम्बिया), (चित्र में नहीं) एलिज़ाबेथ कुंजाम (भारत)

पॉल ब्रुबाकर

फेथ एण्ड लाइफ़ कमीशन: चिओलैंग ''पॉलुस'' पॉन (ताइवान), वेयटेके वान डेर मोलन (नीदरलैण्ड), एल्फ्रेडन्यूफेल्ड फ्रिज़न, अध्यक्ष (पैरागुवे), वैलेरि रैप्पल (अमरीका), हेन्सपीटर जेकर (स्विट्ज़रलैण्ड), मंजुला राऊल (भारत), जॉन डी रॉथ, सचिव (अमरीका), टेवोड्रोस बेयेन (इथोपिया)

काज़ुटोमा रे एप्प

रोलेण्डो सेंटियागो

जोनाथन चार्ल्स

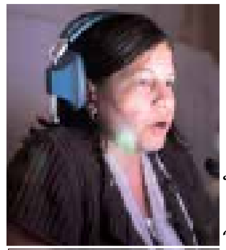

जोन कार्लसन

जेस लॉगनेकर

वॉलेंटियर्स ने pa2015.mwc-cmm.org पर डाली गई जानकारियों को एमडबल्यूसी की तीनों अधिकारिक भाषा में अनुवाद किया जबकि दुभाषियों ने सभी सामूहिक सत्रों का स्पेनिश, फ्रेंच, अंग्रेजी, और सांकेतिक भाषा में प्रसारण किया

लेन फ्रेट्ज़

जिम चेंग

रे डिक्सर्स

रोहड़ा शिर्क

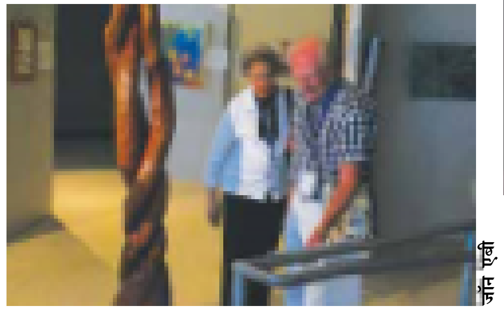

जॉन एबी

चित्रकला और कारीगरी के वरदानों के माध्यम से परमेश्वर के साथ चलने वाले कलाकारों ने एक प्रदर्शनी में अपनी कला का प्रदर्शन किया

रोहड़ा शिर्क

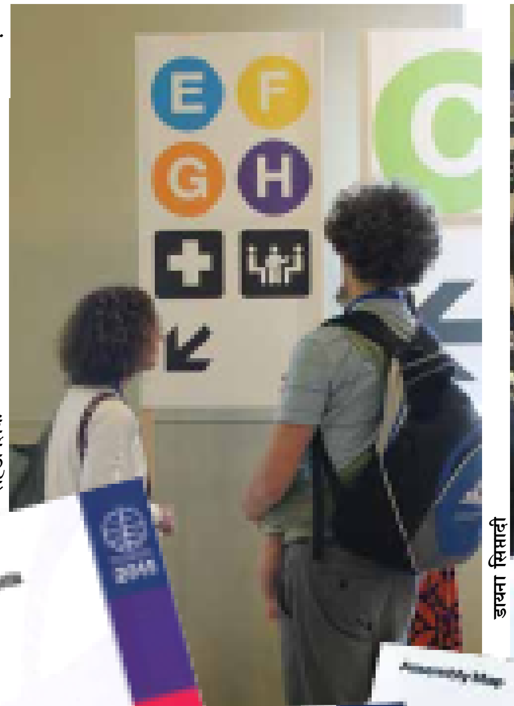

डायना सिमाटी

जॉन एबी

2021
Indonesia

मेलमिलाप का दर्शन

मेनोनाइट वर्ल्ड कॉन्फ्रेंस के नए अध्यक्ष का परिचय

एमडबल्यूसी जनरल कॉन्सिल में मतदान के द्वारा चुने गए, जे. नेल्सन क्रेबिल ने हेरिसबर्ग, पेन्नसिलवेनिया के सम्मेलन में एमडबल्यूसी के अध्यक्ष के रूप में अपने छह वर्षीय कार्यकाल को अधिकारिक रूप से आरम्भ किया, यहाँ उन्होंने प्रभु भोज की विधि सम्पन्न करने में अगुवाई की।

कूरियर पत्रिका के भूतपूर्व सम्पादक डेविन मानज़ुल्लो थॉमस ने मेनोनाइट वर्ल्ड कॉन्फ्रेंस के अध्यक्ष जे. नेल्सन क्रेबिल से साक्षात्कार के दौरान उनसे मसीही सेवकाई में उनकी बुलाहट, उनके देश और विश्व भर में उनकी भूमिकाओं और एमडबल्यूसी द्वारा की जाने वाली मेल मिलाप की सेवा के प्रति उनके दर्शन के विषय में प्रश्न पूछा।

आपके भीतर कलीसियाई जीवन के प्रति रूचि किस प्रकार से उत्पन्न हुई?

क्रेबिल: मेरा पालन पोषण लॉन्कास्टर, पेन्नसिलवेनिया, यूएसए में हुआ, जहाँ मेरा परिवार स्थानीय स्तर पर कलीसियाई सेवा में गहराई से जुड़ा हुआ था। मेरे माता–पिता दोनों ने कलीसिया को अथक सेवाएं प्रदान करते हुए, सण्डे स्कूल में शिक्षा देने से लेकर चर्च की साफ–सफाई तक, अनेक जिम्मेदारियों का निर्वहन किया। मेरे अंकल नेविन ने वर्तमान में तन्ज़ानिया के नाम से पहचाने जाने वाले देश में एक मिशनरी के रूप में सेवकाई किया। अवकाश के दौरान जब वे घर आते थे, तब उनके द्वारा दी जाने वाली गवाहियों के माध्यम से ही मेरा परिचय विश्वव्यापी कलीसिया से हुआ। यहीं से मसीह की विश्वव्यापी देह के प्रति रूचि की चिंगारी मेरे भीतर सुलगने लगी।

क्या आप सेवकाई के लिए अपनी बुलाहट के विषय में हमें बताएंगे?

प्राथमिक रूप से मेरी बुलाहट एक पासवान के रूप में है। परन्तु पिछले अनेक वर्षों से, मैं अपनी पासवानी सेवकाई के साथ साथ धर्मविज्ञान की शिक्षा देने के और अध्ययन (*एकेडेमिया)* के कार्यों भी कर रहा हूँ। सचमुच में यह प्रतिफल देने वाली एक यात्रा है!

अब तक आपने किन किन भूमिकाओं में सेवाएं दी हैं?

मैंने अपना अध्ययन गोशन कॉलेज, इण्डियाना का एक मेनोनाइट कॉलेज; प्रिन्सटन थियोलॉजिकल कॉलेज, न्यूजर्सी; और यूनियन थियोलॉजिकल सेमनरी, रिचमण्ड, वर्जिनिया से पूरा किया। अपनी सेवकाई के दौरान, मैंने समिट हिल्स मेनोनाइट एकेडेमी, सान जुआन, प्यूरटो रिको में बाइबल की शिक्षा दी, लंदन (इग्लैण्ड) में मेनोनाइट सेन्टर में सेवा करते हुए विवाद समाधान चिन्तन सेमिनारों में अगुवाई की, और एल्खार्ट इण्डियाना में ऐनाबैपटिस्ट मेनोनाइट बिब्लिकल सेमनरी के अध्यक्ष के रूप में सेवाएं दी। मैंने वेरमोंट की एक छोटी कलीसिया में भी पासवान के रूप में सेवकाई किया।

वर्तमान में आप क्या सेवकाई कर रहे हैं?

सेमनरी के अध्यक्ष पद से सेवानिवृत्त होने के बाद, मैं पूर्णकालिक पासबानी सेवकाई में लौटा, यह अनापेक्षित था, कि मैं एल्खार्ट के हृदयस्थल पर स्थित अपने गृहनगर की कलीसिया, प्रेयरि स्ट्रीट मेनोनाइट, जो कि एक बहुनस्लीय मण्डली है, में पासवान के रूप में सेवा कर स्कूं। यह अनुभव मेरे लिए बहुतायत का जीवन देने वाला सिद्ध हुआ है: चरवाही करना, पोषण करना, और एक अखण्ड समुदाय से सीखना। मैं इन लोगों के साथ इस भूमिका में सेवा करते हुए अत्यंत प्रसन्न हूँ।

अब तक आप एमडबल्यूसी में कौन कौन सी भूमिका में रहे?

2003 में, मेनोनाइट चर्च यूएसए ने मुझे उत्तर अमरीका की ओर से प्रतिनिधि नियुक्त कर एमडब्यूसी की एक समिति में भेजा जिसे यह जिम्मेदारी सौंपी गई थी कि हमारे साझा विश्वास की सात बातों को तैयार करे, यह कार्य अब पूरा किया जा चुका है। मैं विद्वानों और पासवानों के एक समूह के साथ एमडबल्यूसी क्षेत्र की कलीसियाओं के अंगीकार के 34 कथनों का अध्ययन और विश्लेषण करने को जिम्बाब्वे गया। हमने सारभूत विचारों को निचोड़ कर निकाला जो विश्वास के विश्वव्यापी घराना के रूप में हमारी पहचान हैं।

आप एमडल्यूसी के अध्यक्ष कैसे बने?

कुछ वर्ष पूर्व, अध्यक्ष के रूप में जिम्बाब्वे के डानिशा नडलोवु का उत्तराधिकारी ढूंढ़ने के लिए बनाई गई सर्च कमेटी ने मुझ से फोन पर पूछा कि क्या वे मेरे नाम पर इस पद हेतु विचार कर सकते हैं। पहले तो मैंने मना कर दिया। परन्तु जैसा कि हमने पहले भी किया है, मेरी पत्नी और मैंने कुछ मसीहियों को बुलाया जो हमें और स्थानीय व विश्वव्यापी कलीसिया के प्रति हमारे हृदय को जानते थे। हमने उनसे कहा कि हमारे साथ प्रार्थना करें और निर्णय लेने में हमारी सहायता करें। अन्तत:, उन्होंने यह जानकर मुझ से आग्रह किया कि मैं अपना नाम आगे जाने दूं, कि यह नई दिशा परमेश्वर की इच्छा है।

एमडब्लूसी के अध्यक्ष की क्या भूमिका होती है?

मेरी भूमिका प्रबन्धन नहीं, बल्कि प्रशासन सम्बन्धी है। (हमारे पास हमारे जनरल सेक्रटरी, सीज़र गार्सिया के रूप में एक बहुत ही सक्षम कार्यपालन अधिकारी है। मैं पूरी तरह से एक स्वयंसेवक हूँ जिसे एमडबल्यूसी कार्यकारिणी कमेटी और जनरल कॉन्सिल की अध्यक्षता करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है, ये दो ऐसे समूह हैं जो विश्वव्यापी कलीसिया की सेवा में हमारी सहायता करते हैं।

मैं एमडब्लयूसी के अन्य अधिकारियों – उपाध्यक्ष और कोषाध्यक्ष – से कार्य के सम्बन्ध में हर महिने (स्काइप के माध्यम से), और वर्ष में दो या तीन बार आमने सामने मुलाकात करुंगा। संसार भर के एमडब्यूसी की सदस्य कलीसियाओं से मुलाकात करने को जाने का अवसर शायद मेरी भूमिका का सबसे उत्तम भाग होगा! मेरी इच्छा है कि मैं विभिन्न देशों में जा कर स्थानीय कलीसियाओं के साथ समय व्यतीत करूं, वहाँ के अगुवों का परिचय प्राप्त करूं, और उनकी गवाहियाँ सुनूं। अन्तत:, मैं एमडब्यूसी में अपनी भूमिका एक पासवान, और एक प्रोत्साहित करने वाले के रूप में देखता हूँ: एक ऐसे व्यक्ति के रूप में जिसकी आँखें और कान विश्वव्यापी कलीसिया की ओर खुले हुए हों, और एक ऐसे व्यक्ति के रूप में जो दर्शन को सजोएं रखने और आगे बढ़ाने में सहायक सिद्ध हो।

एमडब्यूसी के लिए आपका दर्शन क्या है?

हमारी सेवकाई का सार मेलमिलाप है। मैं स्वयं के लिए और कलीसिया के लिए यह इच्छा रखता हूँ कि यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ हमारा मेलमिलाप हो। मैं उसके मृत्युंजय की सामर्थ को अनुभव करना चाहता हूँ, और मैं यह अनुभव करना चाहता हूँ कि यही सार वास्तविकता हमारी विश्वव्यापी सहभागिताओं की सामर्थ का स्त्रोत है। परन्तु मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ यह मेलमिलाप, मेलमिलाप समीकरण का एक भाग ही है। मिशन मेलमिलाप की वह सेवा है जो विश्वास करने के लिए व्यक्तियों की बुलाहट के दोनों पहलुओं को शामिल करता है – उद्धार, मन फिराव, क्षमा, और पवित्र आत्मा की सामर्थ से नया जन्म का पहलू – और कलीसिया में, कलीसिया के बाहर, और वैश्विक संसार में लोगों के बीच सम्बन्धों का पोषण करने और उन्हें सुधारने का पहलू। बाइबल के अनुसार परमेश्वर का दर्शन यह है कि वह मसीह में सब वस्तुओं को एकत्र करे। ऐनाबैपटिस्ट लोगों के रूप में, हमें व्यक्तिगत मन फिराव और शान्ति व न्याय की सेवा को एक साथ जोड़ कर रखना आवश्यक है। यदि हम किसी एक पहलू को भी ढीला छोड़ दें, तो हम अपने जीवन का सारा उद्देश्य खो बैठेंगे।

MWC Publications Request

I would like to receive:

MWC *Info*
A monthly email alert with links to articles on MWC website.

Courier
Published bimonthly (every other month): twice (April and October) as a 16-page magazine and four times (February, June, August, December) as a four-Page Magazine

- ☐ English
- ☐ Spanish
- ☐ French

- ☐ Electronic Version (pdf)
- ☐ Print Version

☐ Check here if you are currently receiving the print version of *Courier/Correo/ Courrier* and want to receive the electronic version instead. If you want to receive both the electronic and print versions, check both boxes above.

Name ______________________________

Address______________________________

Email ______________________________

Phone ______________________________

Complete this form and send to:
Mennonite World Conference
50 Kent Avenue, Suite 206
Kitchener, Ontario N2G 3R1 Canada

pa2015.mwc-cmm.org पर जा कर पेन्नसिलवेनिया 2015 का आनन्द उठाएं। ग्लोबल चर्च विलेज और बच्चों के कार्यक्रमों के बारे में पढ़ें। आराधना सभाओं के विडियो देख कर नए गीत सीखें और विश्व के अन्य समुदायों का अभिवादन ग्रहण करें। पर्यावरण देखभाल, इतिहास, और बाइबल अध्ययन से सम्बन्धित कार्यशालाओं ही दर्जनों सहायक सामग्रियाँ डाऊनलोड करें